॥ श्री शासनपति महावीराय नमः ॥

॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | दिसम्बर-2021

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

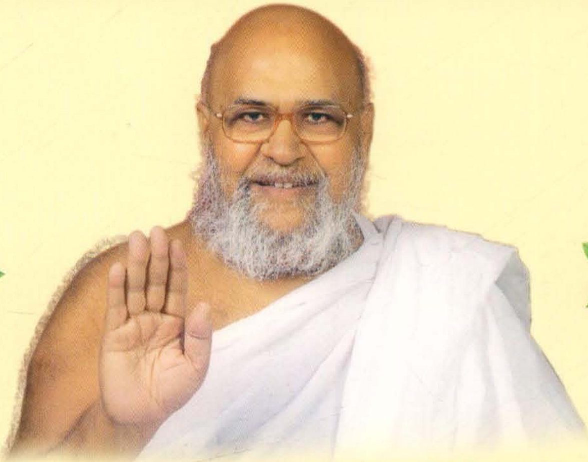

युग प्रभावक पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. का

अवतरण दिवस

पाटण में चातुर्मास के अन्तर्गत भव्य ज्ञानोत्सव का कार्यक्रम। शेष... पृष्ठ 4 पर

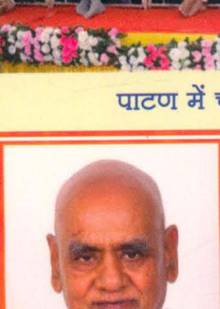

विहार क्रम :-

❖ गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. जालोर चातुर्मास पूर्ण कर श्री भाण्डवपुर तीर्थ पधारे। तथा

शेष... पृष्ठ 4 पर

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, नैनावा (गुजरात)
10. श्री जैन श्वे., त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
11. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
12. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
13. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
14. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा म.प्र.)
15. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
16. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

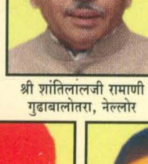
श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

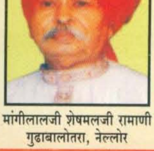
मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

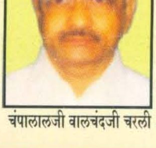
चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

3333

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर
(सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी
धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

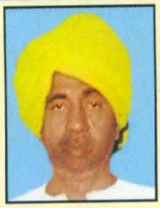
स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी
आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी
जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी
तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी
गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी
सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी
विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी
सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी
बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी
वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी
भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी
धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी
धाणसा

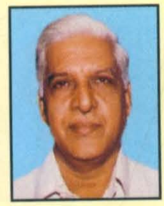
शा पुखराजजी फूलचंदजी
दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी
संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी
सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत
गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी
चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा
कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी
कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

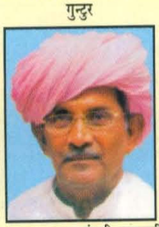
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी
सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी
जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

कोबा (गांधीनगर)

36604

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

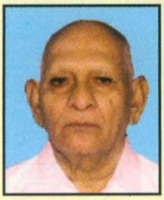
श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

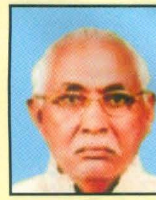
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

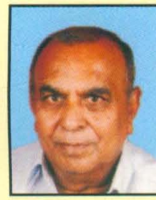
श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

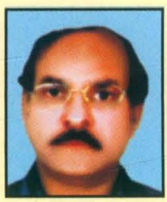
श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

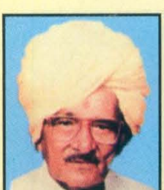
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

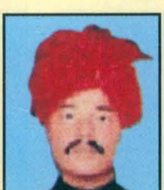
सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

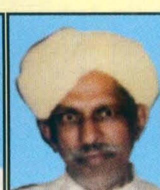
श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

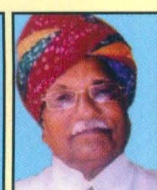
सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

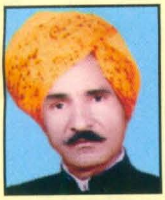
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी वाणीगोता, अमरसर (सरत)

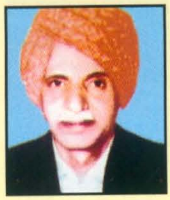
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी वाणीगोता अमरसर (सरत)

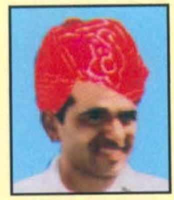
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी सायला

श्री हेमराजजी कबदी सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा सायला

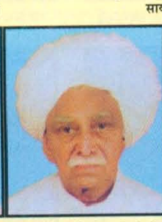
शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी कबदी, सायला

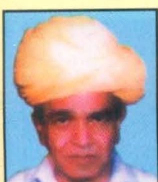
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

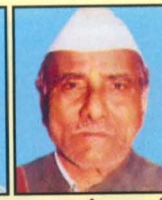
दलाल स्व. श्री बाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

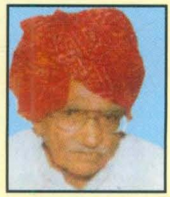

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

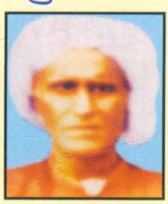

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

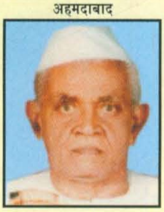

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

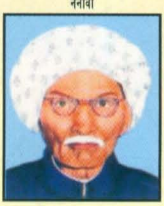

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

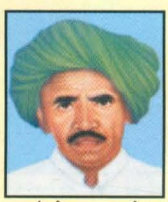

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

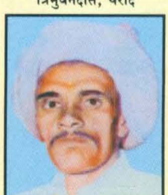

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

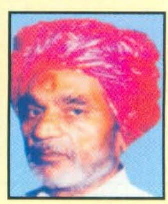

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

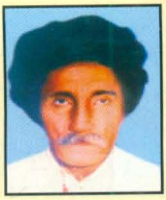

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

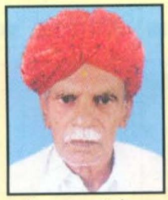

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

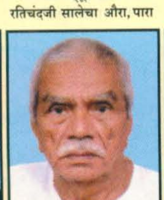

श्री मानसिंहजी
राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

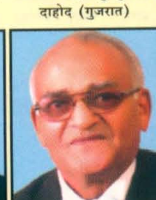

स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

हमारे गौरव

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

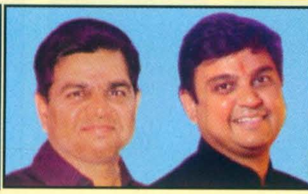

स्व. श्रीशांतिलालजी एवं पुत्र स्व.श्री रितेशकुमारजी
डूंगरवाल, इंदौर

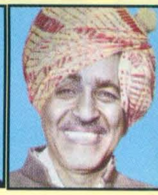

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

समाज गौरव
श्री शांतीलाल सकलेचा
रानापुर

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी , बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

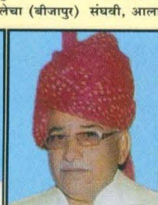

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

अनुक्रमणिका

1.	श्री जयंतसेन जयनाद	08
2.	प्रवचन (स्व. श्री श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	11
3.	मधुकर – मौक्तिक	12
4.	जीवन झलक (साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	13
5.	दरशबिन बहुत दिन बीते (श्री ज्योति सुरेश)	17
6.	संयम जीवन को वंदन हमारा (प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल)	18
7.	गणधरवाद (स्व. श्री श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	19
8.	किस्मत की बात (स्व. श्री श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	21
9.	पढ़ो व समझो (श्री सुरेन्द्र गंग)	23
10.	आज भी छाया करते हैं मुझ पर (मृत्युंजय)	25
11.	अध्यक्षीय पाती (श्री वाघजीभाई वोरा)	28
12.	अध्यक्षीय संदेश (श्री रमेशभाई धरू)	29
13.	सम्पादकीय (श्री सुरेन्द्र लोढ़ा)	30
14.	श्री महावीर वचनामृत – तृष्णाओं से अलिप्त रहना तप है	33
15.	तंत्र–मंत्र–वास्तु (श्रीमती ज्योति जैन)	34
16.	प्राच्य संगीत (स्व. श्री दीपविजयजी म.सा.)	35
17.	चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	36
18.	उत्तम आहार– शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	37
19.	तीर्थंकर–तारेश (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	38
20.	अतिथि रचना – शास्त्र के अनुसार समाधान (वर्द्धमान तपोनिधि आचार्य श्रीमद् विजय कल्याणबोधसूरीश्वरजी म.सा.)	39
21.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)	40
22.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	42
23.	पूजा के दस त्रिक (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	43
24.	वैराग्य सज्झाय (साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	44
25.	पाँचवा स्थान मोक्ष है ?	47
26.	पुण्य सम्राट के हृदय से काव्य प्रस्फुरन (अशोक श्रीश्रीमाल)	49
27.	गुजराती संभाग	51
28.	कुमकुम सने पगलिये	67
29.	परिषद प्रांगण से	72
30.	समाज सौरव	73
31.	जैन विश्व	74
32.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	75–76

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज

विराट् व्यक्तित्व

त्रिस्तुतिक समाज का मुख्य मासिक पत्र

शाश्वत धर्म

(प्रस्तोता - मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

'शाश्वत धर्म' ने वाङ्मय और विद्या के बन्धनों से दूरियाँ स्थापित कर विभिन्न क्रांतियों के ऊँचे स्तर से टकराने का प्रयास किया। अर्ध शताब्दी के समय फासले में शाश्वत धर्म की मूक वाणी विभिन्न विषयों को प्रतिपादित करती रही, दर्शन-चिन्तन तथा संस्कृति के लिये सामग्री जुटाती रही, सामाजिक परिवर्तनों को रेखाओं की जागृति से परिपूर्ण बनाती रही एवं जीवन के शाश्वत मूल्यों के लिये वैचारिक तरंगों का प्रवहन करती रही। 'शाश्वत धर्म' ने समग्र जैन संस्कृति को परिमार्जित करने का उपक्रम कर्त्तव्य की तरह निर्वाहित किया। उसका अभिषेक साहित्यवेदी को पवित्र बनाता रहा। विचारोत्तेजित धाराएँ बार-बार जीवन धरातल की सीमाएँ तैयार करती रही। सामाजिक गतिविधियों का यह प्रेरक बना तथा जैन संस्कृति के प्रभाव का रूप धारण कर इसने धर्म के आदर्शों का प्रतिपालन किया। ईस्वी सन् उन्नीस सौ बावन में पूज्य गुरुदेव स्व. श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के रूप में 'शाश्वत धर्म' को उदार संस्थापक देव प्राप्त हुए। स्व. पूज्य गुरुदेव का साहित्य अनुराग जैन समाज के लिए एक गौरवशाली पतिप्राप्ति है आपके निर्देशन में ही अभिधान राजेन्द्र कोष का मुद्रण कार्य सम्पन्न हुआ और साहित्य पटल पर उसकी दीप्ति स्थिति निर्मित हो पाई। शाश्वत धर्म ने प्रथम अंक से ही सामाजिक चेतना के आन्दोलन का श्रीगणेश किया। यह आंदोलन अपनी विभिन्न परतों से संयुक्त होकर अग्रशील होता गया।

'शाश्वत धर्म' के पृष्ठों में किस विषय ने महत्व प्राप्त किया? राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार, संस्कृति- उत्थान एवं संगठनात्मक अभ्युदय का प्रत्येक स्वर वर्णमाला के अक्षरों के माध्यम से उतरकर साकार हुआ। प्रारम्भ से ही तूफानों ने इसे डगमगाने की कोशिश की, आँधियाँ इसे इसके मार्ग से विचलित करने के लिये बढ़ी, किन्तु गुरुदेवश्री की कृपा

ने पूर्व में और पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' (राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.) के स्नेहयुक्त अनुग्रह से इसे जीवन्त बनाये रखा। श्री सूरजचन्द्रजी डांगी 'सत्यप्रेमी' का इसके प्रथम सम्पादक के रूप में उल्लेख किया जाना प्रासंगिक है। निम्बाहेड़ा (जिला चित्तौडगढ़, राजस्थान) से इसका प्रकाशन हुआ। सामाजिक पत्र होने के कारण सम्पादक मण्डल में क्रमगत परिवर्तन आया। श्री दौलतसिंहजी लोढ़ा, श्री सौभाग्यसिंहजी गोखरू, श्री परदेशीजी, श्री शिवनारायणजी गौड, श्री लक्ष्मीचंदजी जैन तथा पं. श्री मदनलालजी जोशी इसके सम्पादक मण्डल में रहे। श्री कुन्दनलालजी डांगी ने प्रबंध सम्पादक का कार्यभार निर्वहित किया। 1961 में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद ने पूज्य मुनिराज श्री जयन्तविजयजी महाराज 'मधुकर' की प्रेरणा से 'शाश्वत धर्म' को मुखपत्र के रूप में स्वीकृत किया। श्री सौभाग्यमलजी सेठिया को सम्पादक पद का दायित्व सौंपा गया एवं प्रकाशन कार्यालय का स्थानान्तरण मंदसौर (म.प्र.) पर हो गया। श्री राजमलजी लोढ़ा को प्रकाशक के रूप में मनोनीत किया गया। उपरांत श्री सुरेन्द्र लोढ़ा सम्पादन कार्य में सम्मिलित किये गये। जो वर्तमान में पुनः इस उत्तरदायित्व को पूर्ण कर रहे हैं। मंदसौर से शाश्वत-धर्म की जीवन यात्रा का अगला पड़ाव उज्जैन हुआ। शाश्वत-धर्म के सम्पादन कार्य में डॉ. बसंतीलाल बम के पश्चात ठाणे (राज. में आहोर) निवासी श्री जे.के. संघवी ने सम्पादक दायित्व ग्रहण किया। सन् 1985 में श्री भाण्डवपुर तीर्थ पर आयोजित अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वार्षिक अधिवेशन में पारित किए प्रस्ताव के अनुसार शाश्वत धर्म प्रकाशन कार्यालय महाराष्ट्र के ठाणे नगर में परिवर्तित किया गया। सन् 2002 तक शाश्वत धर्म का प्रकाशन ठाणे से होता रहा।

उपरांत अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के एक निर्णय अनुसार सम्पादक के रूप में श्री भंवरलाल कटारिया (बैंगलोर/राजस्थान में धाणसा) ने दायित्व ग्रहण किया। प्रकाशन भी बैंगलोर (कर्नाटक) से प्रारम्भ हो गया। ईस्वी सन् 2009 में शाश्वत धर्म के जीवन को पुनः परिवर्तन ने प्रभावित किया। राष्ट्रीय परिषद के निर्णय के परिपालन में श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने दूसरी बार (प्रथम अवसर सन्1961 से 1970) सम्पादक के कर्तव्य को हस्तगत किया तथा प्रकाशन कार्यालय भी मंदसौर स्थानांतरित किया गया। वर्तमान में इसका प्रकाशन मंदसौर से श्री सुरेन्द्र लोढ़ा के सम्पादकत्व में निरंतर है। इसकी साज सज्जा में भी आधुनिकतम मूल्यों का प्रवेश हो गया है। प्रतिमाह यह आकर्षक आर्ट पेपर का एक सौ पृष्ठों का आकार लेकर बहुरंगी मुद्रण के साथ पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है। राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की कृपा तथा आशीर्वाद रूप मार्गदर्शन इसकी प्राणशक्ति थे। सामान्य अंकों के अतिरिक्त इसके विशेषांकों की अजोड़ परम्परा निरन्तर है।

◆◆◆

राष्ट्रसंत आचार्य जयंतसेनसूरि

श्रीराजेन्द्र वाटिका समिति पिपलोदा।

सुश्रावक राजेन्द्रजी!

धर्मलाभ। पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुए।

पीपलोदा गुरु मन्दिर की राशि की बात हो गई है और रकम भेजने का कह दिया है रकम आ जायगी।

साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी, चिंतनकलाश्रीजी खूब २ शाता में होंगे। मेरी ओर से उन्हें खूब २ शाता पूछें एवं कुशलता के समाचार भी दें।

परम पूज्य कृपालु गुरुदेवश्री की पावन कृपा दृष्टि से हम मुनिमंडल सह यहाँ पर सुखशाता में हैं। स्थानीय संघ में तप जप एवं धर्म आराधना का क्रम अभी भी निरंतर जारी है, तेला एवं अट्ठाई तप के तपस्वी अभी अपनी धर्माराधना से प्रसन्नता से परिपूर्ण हैं। कंठाभरण तप भी सानंद हुआ। ५० आराधकोंने इस में भाग लिया।

अ०भा० श्रीराजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा प्रस्तावित इस वर्ष को अहिंसा वर्ष के रूप में मनाये जाने के स्थानीय शाखा परिषद्‌ने आशातीत प्रयास प्रारंभ किये हैं। १७ स्थानों पर नये कबूतरों के चबूतरे बनाने का तय किया है। गौशाला जो थराद के नेकर में ही थराद संघ द्वारा संचालित है को सहयोग देना। जीवों को बचाना एवं व्यसनों से व्यक्ति को मुक्त कराने के सघन आयाम शुरु हैं।

अभी भांडुआ बुंदडी (फलेचुन्नडी-नगर चौराशी) में सर्व धर्म समभाव भोज का आयोजन हुआ जिस में ३० हजार भावुकोंने भोजन किया। जैन समाज के लिये यह गौरव वर्द्धक रहा।

वर्तमान के वातावरण में संघ समाज के जागरुक भावुकों को खूब चिंतन करना आवश्यक हो गया है। जागृति के लिये प्रयास जरूरी हैं।

ज्ञातव्य ज्ञात करावें।

धर्म उद्यम रखें।

वहाँ सभी श्रावक श्राविकाओं को धर्मलाभ कहें।

श्रीनवपद शाश्वती ओली की आराधना सानंद हुई। ४५० आराधकोंने यह ओली की आराधना की।

श्री जयन्तसेनसूरि
धर्मलाभ

थराद
दि. २४।१०।९६

प्रवचन

पराक्रमी कर्त्तव्य पर डटे रहते हैं

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जिनकी हम प्रशंसा करते हैं, उनसे हम प्रेम करते हैं, उनका आदर भी करते है– यह कोई जरूरी नहीं, क्योंकि हो सकता है, अपना कोई मतलब निकालने के लिए हम उनकी झूठी प्रशंसा कर रहे हों, उनको चने के झाड़ पर चढ़ा रहे हों, उनकी चापलूसी कर रहे हो।

बादशाह ने जब बैंगन की तारीफ की तो चापलूस ने कह दिया कि खुदा ने उसके मस्तक पर हरे रंग का ताज यों ही नहीं बनाया है। वह तो सब्जियों का बादशाह है... आदि। दूसरे दिन जब बैंगन की सब्जी से पेट में गड़बड़ होने लगी और बादशाह ने कह दिया कि बैंगन की सब्जी बुरी होती है तो उसी चापलूस ने कहा– 'हुजूर ! खुदा ने उसके ताज पर काँटे इसीलिए बना दिये हैं कि बैंगन की खूबसूरती को देखकर कोई भ्रम में न पढ़ जाये। उसे अच्छा न समझने लगे।'

यह सुनकर बादशाह बोले– 'अरे ! जिस बैंगन की तुम कल तारीफ कर रहे थे, उसकी आज बुराई क्यों कर रहे हो ?' चापलूस ने कहा– 'हुजूर ! हम आपके गुलाम हैं, बैंगन के नहीं।'

यद्यपि अच्छे कार्यों पर आधारित प्रशंसा का चापलूसी से कोई संबंध नहीं होता और अच्छे कार्यों की प्रेरिका होने से वह उपादेय भी है, फिर भी सज्जन अभिमानहीन होते हैं, इसलिए उसे पसंद नहीं करते। कहीं उनकी प्रशंसा हो रही हो तो वहाँ से उठकर अन्यत्र चले जाते हैं।

एक कवि ने बहुत ही अच्छी शैली में यह बात प्रकट की है। उसके अनुसार प्रशंसा एक कन्या है, जो अब तक कुँआरी (अविवाहित) है, क्योंकि सज्जन उसे पसंद नहीं करते और दुर्जनों को वह (प्रशंसा रूपी कन्या) पसंद नहीं करती। तब विवाह भला किसे और कैसे हो ?

अद्यापि दुर्निवारं, स्तुतिकन्या वहति कौमारम् ।
सद्भ्यो न रोचते साऽसन्तोऽप्यस्यै न रोचन्ते ।।

असल में महापुरुष अपनी प्रशंसा अपने मुँह से तो करते ही नहीं, जो करते हैं वे महापुरुष नहीं। हीरा कभी नहीं कहता है कि उसका मूल्य एक लाख रुपये के बराबर है। परीक्षा करके जौहरी ही उसका मूल्यांकन करते हैं–

बड़ो बड़ाई न करे, बड़े न बोलै बाल ।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारो मोल ।।

बातें करने वाले काम नहीं कर सकते। पराक्रमी केवल अपने कर्त्तव्यमार्ग पर डटे रहते हैं ।

◆◆◆

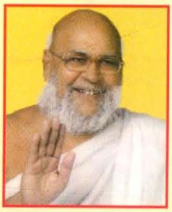

मधुकर-मौक्तिक

- श्रृद्धा ही जीवन है, प्राण है, जहाँ श्रृद्धा नहीं वहाँ अंधकार है, मृत्यु है।
- जो श्रृद्धा निर्मल हो तो हम पूर्ण सत्य के प्रति समर्पित हो सकते हैं।
- निष्कपट समर्पण व्यक्ति को सभी प्रकार से आगे बढ़ाता है।
- गुरु की परम कृपा प्राप्त करने वाला शिष्य महान बन जाता है।
- स्वयं की गई भूलों को स्वीकार करने वाला व्यक्ति महान बनता है।
- जिसके अन्दर मान-माया और मोह ये तीन प्रकार विद्यमान हों, वह भी नमस्कार नहीं कर पाता है।
- द्रव्य स्थिति में रहने वाला जीव हमेशा समस्याओं से घिरा रहता है।
- जो किसी का चरित्र सुनने में आता है तो वह स्वयं के निर्माण हेतु सुना जाता है।
- किसी के भाग्य के विरुद्ध बोलना मिथ्यात्व है।
- कोई भी किसी के साथ बदला नहीं ले सकता है।
- जब तक हमारे दिल से दुर्भावना नहीं निकलती है, तब तक आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता है।
- जब तक जिनेश्वर देव के दर्शन नहीं होते हैं, तब तक स्वयं के दर्शन नहीं होते हैं। जिनेश्वर दर्शन में आत्मदर्शन का समावेश है।
- वह भव्य है, जिसके मन में जिनेश्वर दर्शन की इच्छा है।
- उस व्यक्ति का हृदय तथा जीवन अवश्य प्रकाश में आते हैं, जो सुदेव-सुगुरु तथा सुधर्म का आलम्बन लेता है।
- जिनेश्वर में संशय रखना, यह स्वयं के लिये घातक है।

◆◆◆

- संसारी गृहस्थ द्वारा बताई गई बात मिथ्यात्व पोषक होती है।
- संसार-समुद्र कटु भावों से भरा हुआ है लेकिन भक्ति का सरोवर निर्मलता से परिपूर्ण है।
- व्यक्ति में स्व को प्रस्तुत करने का भाव तभी आता है, जब उसकी अंतरात्मा में पूर्ण समर्पण की भावना जन्म लेती है।
- व्यक्ति का जैसा मानस होता है, दूसरों को भी वह वैसा ही समझता है।
- किसी के प्रति खराब भाव रखना, यह इन्सानियत नहीं हेवानियत है।
- जो व्यक्ति स्वयं का कर्त्तव्य भूल जाय वह शैतान है।
- जीव मात्र को सुख पहुंचाने का भाव हृदय में रखने वाला व्यक्ति ही मानव है।
- आदमी में मानवीय भाव तभी आता है, जबकि वह महामानव बनने का प्रयास करता है।

जीवन झलक

जीवन निर्माण के शिल्पी पू. जयंतसेनसूरिजी म. सा.

(साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

वे साधक - साधिकाओं के जीवन का निर्माण करने वाले महान शिल्पी थे। उन्होंने अपने ज्ञान के सम्यक् निर्मल नीर से संयमपथ पर आरूढ़ साधकों के मिथ्यातम को धोने के लिए अथक परिश्रम किया। संयम साधकों को नई दिशा, नयाबोध दिया एवं उनका नव निर्माण किया। उनकी प्रेरणाएँ, सद्शिक्षाएँ, वात्सल्य शिष्य-शिष्याओं के जीवन विकास के लिए अमूल्य वरदान था।

स्वयं के संयम जीवन के पालन में पू. गुरुदेव की विशिष्ट जागृति थी। उनकी आवश्यक क्रियाओं में रहने वाली अप्रमत्तता को निहारने का सद्भाग्य मुझे भी अनेक बार प्राप्त हुआ है। साधु जीवन में सात प्रकार की मांडली कही गई है। जिसके अन्तर्गत दो समय का प्रतिक्रमण, पडिलेहन सज्झाय, मंदिरविधि एवं संथारा पोरसी आदि निहित हैं। ये सभी क्रियाएँ आचार्य भ. एवं साधु भ. को सामूहिक रूप से सम्पन्न करना होती है। पू. गुरुदेव इतने बड़े आचार्य एवं व्यस्ततम दिनचर्या होने के बाद भी इन सातों मांडली का भली भांति पालन करते थे। अन्तेवासी सभी शिष्यों को भी अपने महान गुरु के साथ सभी क्रिया करने का अनहद आनंद होता था। वे रात को तीन बजे उठ जाते थे एवं सुखासन में बैठकर जाप और ध्यान में संलग्न हो जाते थे। उन्होंने जीवन भर कभी दीवार का सहारा नहीं लिया सदैव बिना टेके से बैठते थे। अत्यंत नियमित दिनचर्या परिमित आहार, आगम सम्मत आचार शैली गुरुदेव के विरल व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। चाहे दिन हो या रात एकांत हो या पर्षदा, सोते हों या जागते उनके जीवन में एकरूपता के ही दर्शन होते थे। उनकी सरलता उनकी आध्यात्मिक ऊँचाई को प्रतिध्वनित् करती थी। उनके साधना जीवन के प्रारंभ से लेकर अवसान पर्यंत समग्र जीवन में ऐसा कोई क्षण नहीं है जब प्रमाद की एक रेखा भी दिखाई दे वे प्रत्येक क्षण किसी न किसी कर्त्तव्य की पूर्ति में लगे रहते थे। वे घंटों-घंटों एक ही आसन में बैठकर धर्मसभाओं को निश्रा प्रदान करते थे। वे ऐसे आत्मप्रज्ञ थे कि दैहिक कष्टों में भी आनंद की अनुभूति करते थे। वे शरीर में रहते थे किन्तु शरीर के स्तर पर जीते नहीं थे।

आत्मभावों में सदा ओत-प्रोत रहते थे। जीवन को आनंदमयी बनाने की कला उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। मिट्टी का तन और मस्ती का मन था। उनके चेहरे पर विद्यमान अद्वितीय तेज उनके साधना एवं संयमपूर्ण जीवन का साक्षी था। उनके उठने बैठने, बोलने, चलने आदि प्रत्येक कार्य में साधना की स्पष्ट झलक थी।

साहित्य सम्पोषक

साहित्य अतीत में झांककर वर्तमान के द्वारा भविष्य को सुन्दर व सुखद बनाता है। यह मानव जीवन को उर्जामय बनाने वाली शक्तिमति सरिता है। साहित्य सर्जन की परंपरा जैनदर्शन में अनवरत् चली आ रही है। पू. गुरुदेव निःसंदेह एक महान साहित्य-सृष्टा दृष्टा थे। उनकी लेखनी से प्रसूत साहित्य विश्व साहित्य का सुंदर रोचक तथा ज्ञानवर्धक अध्याय है। निबंध, नाटक, कथा भक्ति काव्य, मुक्तक, चिंतनसाहित्य, दार्शनिक साहित्य, प्रवचन साहित्य आगम साहित्य, ऐतिहासिक साहित्य, व्याख्यासाहित्य, जीवनीपरक साहित्य, पूजा साहित्य इत्यादि सभी विधाओं में उनकी लेखनी ने अजस्ररूप से आश्चर्यजनित साहित्य का सृजन किया। साहित्य की प्रसिद्ध विधाएँ उनकी पैनी दृष्टि पाकर सजीव हो उठी थीं। साहित्य कल्पना की उड़ान नहीं बल्कि सहृदयता का प्रतिफल है। उनकी लेखनी में नये तर्क थे, नवीन पद्धति थी और स्पष्टोक्ति का नया प्रकार था।

पू. गुरुदेव ने न केवल स्वरचित पुस्तकों का ही प्रकाशन करवाया वरन् उन्होंने अपने दादा गुरुदेव प्रातः स्मरणीय विश्वपूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं गुरुवर श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की महत्वपूर्ण कृतियों का भी प्रकाशन करवाया। ऐसे ग्रंथों के प्रकाशन में सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशन श्री अभिधान राजेन्द्र कोष का द्वितीय संस्करण है। विश्वपूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के द्वारा लिखित विश्व की असाधारण कृति है अभिधान राजेन्द्र कोष। विश्व ग्रंथालयों में इसकी भारी मांग रही। अतः इसका स्टॉक समाप्त हो गया। इस वृहद् विश्वकोष के प्रकाशन की हलचल प्रारंभ हो गई। दिल्ली की प्रकाशन संस्थाओं ने त्रिस्तुतिक समाज की अनमोल धरोहर इस पुनीत ग्रंथ को व्यवसायिक दृष्टि से चुपचाप प्रकाशित कर नैतिकता का भंग किया। अतः पू. गुरुदेव के प्रयासों से उस पर प्रतिबंध लगाकर अखिल भारतीय श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ के द्वारा महाकोष पुनः मुद्रित किया। पू. गुरुदेव के सान्निध्य में श्री अभिधान राजेन्द्र कोष की द्वितीय आवृत्ति का विमोचन इंदौर में 22 जून 1987 को रामकृष्ण आश्रम रायपुर के अधिष्ठाता स्वामी आत्माचंदजी ने किया।

पू. गुरुदेव जन्म से गुजराती होने पर भी उन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रगाढ़ स्नेह था। उनका साहित्य मुख्य रूप से दो भाषाओं में है। गुजराती- हिन्दी दोनों भाषाओं में लगभग 200 पुस्तके लिखकर विभिन्न विषयों पर अपनी दक्षता सिद्ध की।

1. आगम साहित्य- आचार्यश्री ने तीन आगम ग्रंथों का अनुशीलन कर उन्हें प्रकाशित भी करवाया जिनके नाम है - 1. महावीर ने कहा हृदय में रहा (उपासक दशांग) 2. केशी गणधर की वाणी परदेशी ने प्रमाणी (राज प्रश्नीय सूत्र) 3. नन्दीसूत्र एक परिशीलन।

2. निबंध साहित्य- इसके अन्तर्गत पू. गुरुदेव द्वारा रचित निम्नांकित कृतियाँ हैं 1. जीवन ऐसा हो, 2. साधक की प्रार्थना, 3. प्रेरणा केन्द्र, 4. कर्म प्रकृति, 5. रात्रि भोजन नरक द्वार, 6. मार्गानुसारी जीवन, 7. त्याग निधन, 8. जीवन धन, 9. आध्यात्मिक विकास की पूर्णता एवं भूमिकाएँ, 10. मिला प्रकाश खिला बसंत, 11. मनवा पल-पल बीती जाय एवं 12. अरिहंते सरण पवज्जामि । ये बहुमूल्य कृतियां हैं जो हमारे अंतरचक्षु खोलती हैं । अध्येताओं के कान में चुप-चुप कोई गुढ़ संदेश देकर सन्मार्ग पर प्रेरित करती है।

3. प्रवचन साहित्य- इसके अन्तर्गत 1. जीवन साधना, 2. जीवन सौरभ, 3. नवकार आराधना, 4. नमो मन से नमो तन से, 5.6. राजेन्द्र कोष में 'अ' (प्रथम भाग) (द्वितीय भाग), 7. जयन्त प्रवचन सरिता, 8. जयन्त प्रवचन निधि, 9. जयंत प्रवचन परिमल, 10. जयन्त प्रवचन वाटिका एवं 11. नवकार करे भवपार । इन कृतियों में उन्होंने जैन दर्शन के गूढ़गुण विषयों को सुगठित भाषा में बड़ा सरल और मनोहर रूप से प्रस्तुत किया है।

4. कथा साहित्य- इस वर्ग में निम्नांकित कृतियाँ हैं। 1. शीलत्व की सौरभ, 2. मैं जानता हूँ, 3. इसमें क्या शक है?, 4. अनोखी सलाह, 5. किस्मत की बात, 6. भाग्योदय एवं स्वर्णप्रभा, जिसमें पू. गुरुदेव द्वारा लिखित कहानियाँ प्राचीन कहानियों का नवीन संस्करण है। जिसमें बोधगम्य भाषाशैली के द्वारा साफ-सुथरी विवेचना की है। इन कहानियों में से हम ऐसा सब कुछ पा सकते हैं जो हमारे तन-मन को निर्मल करे एवं समाज के जीवन को जगमगाए।

5. चिंतन साहित्य- इसके अन्तर्गत 1. आत्मदर्पण, 2. पारसमणि, 3. जीवनमंत्र, 4. चिंतननिधि, 5. अप्पो दीपोभव, 6. जगमग ज्योति, 7. मानस मोति, 8. जयन्तसेन प्रवचन पीयूष एवं 9. प्रवचन मोक्तिक आदि। इन कृतियों में पू. गुरुदेव ने अपने प्रकृष्ट चिंतन के द्वारा अमूल्य रहस्य का आलेखन किया है। ये पाठकों के मुरझाए व खण्डित चिंतन को परिष्कृत

कर प्राणवान बनाने वाली है।

6. ऐतिहासिक साहित्य- इसके अन्तर्गत 1. जैनआगम साहित्यः एक अनुशीलन, 2. पानसर तीर्थ एवं 3. सोनेरी संभारणा है। इसमें प्रथम कृति में आगमों की प्राचिनता को सिद्ध किया है।

7. जीवनीपरक साहित्य- 1. गुरुदेव (पद्यम) 2. श्री गुरुदेवपुष्पांजली 3. परमयोगी परमज्ञानी, 4. परमयोगी श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि। इन कृतियों में विश्वपूज्य दादा गुरुदेव एवं गुरुवर श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के तेजस्वी जीवन पर प्रकाश डाला है।

8. व्याख्या साहित्य - इसके अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण कृति है 'भगवान महावीर ने क्या कहा।' इस कृति में पू. गुरुदेव ने आगम के गंभीर रहस्यों की थाह लेकर उसके मर्म को प्रकट किया है। यह पुस्तक अत्यंत ही लोकप्रिय रही जो हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत पाँच भाषाओं में उपलब्ध है।

9. काव्य कृतियाँ - इसके मुक्तक एवं भक्ति काव्य ऐसे दो विभाग किये जा सकते हैं। मुक्तक साहित्य में 1. चिरप्रवासी, 2. गुरुवंदना, 3. चिंतन के स्वर एवं जयंतसेन सतसई महत्वपूर्ण है। भक्ति काव्य- रचना में उन्हें विशेष अर्हता प्राप्त थी। वे काव्यकला के ग्राहक नहीं बने कविता ने उनके चरण चूमे हैं एवं कल्पना के पीछे नहीं दौड़े, कल्पना ने स्वयं उनका अनुगमन किया। वे विहार में चलते-चलते भक्ति स्तवनों की रचना कर देते थे। उन्होंने हजारों भावपूर्ण स्तवन- चैत्यवंदन, स्तुति एवं संज्झाय की रचना की। उनके 2000 से अधिक स्तवन एवं 200 से अधिक संज्झाय हैं।

10. पूजा साहित्य- इस वर्ग में निम्नांकित कृतियों को लिया जा सकता है - 1. श्री आदिश्वर पंचकल्याणक पूजा 2. श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा 3. श्री नेमिनाथ पंच कल्याणक पूजा 4. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा 5. पंचतीर्थ पूजा 6. वास्तुक पूजा 7. श्री यतीन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजा 8. श्री भुपेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा 9. आठ कर्म की अलग-अलग पूजाएँ धर्मेतर साहित्य में ज्योतिष प्रवेश, राज राजेन्द्र तिथि दर्पण को लिया सकता है।

इसके अलावा अनुदित , सम्पादित एवं प्रेरणा से प्रकाशित ढेरों कृतियाँ हैं। जिसने साहित्य जगत को समृद्ध किया है।

उनकी कृतियाँ माईल स्टोन की तरह है जो मानव जगत का पथप्रदर्शन कर रही है। पू. गुरुदेव पार्थिव शरीर के रूप में दुनिया की नजर से ओझल हो गये किन्तु उनके चिन्तन का दिव्यप्रकाश साहित्य के अमर पृष्ठों तथा इस धरती के विस्तृत वक्षस्थल पर युगों-युगों तक बना रहेगा।

◆◆◆

दरशबिन बहुत दिन बीते...

(श्री ज्योति सुरेश, राणापुर)

हे जयंतसेन । हे संत शिरोमणी
हे दाता, प्राणप्रियंते
लौट आओ मेरे गुरुवर
दरश बिन बहुत दिन बीते ।।

तरस रहे हैं लाखों लोग
बना है ये कैसा संयोग
गुरु विरह की विषम ज्वाला
सही न जाये जीते ।। दरश।।

रो-रो अँखियाँ हो गई प्यासी
मेरे मन में छाई उदासी
कहें व्यथा हम अपनी किससे
घूंट गमों के हम हैं पीते ।। दरस।।

लाखों लोगों का ये संघ है
बिन 'जयंत' के सुनापन है
बिनु स्वाति के विकल पपीहा
मेघ चाहे जल जितना देते ।।दरश।।

संस्कारों के जयंत हे सागर
धर्म के रक्षक सदा उजागर
ज्योति तड़प रही दर्शन को
बिछुड़ी जैसे मछली जल से ।।दरश।।

◆◆◆

संयम जीवन को वंदन हमारा...

(प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागांव)

गुरुभक्ति से सजा है देखो जिनशासन ये हमारा
त्याग, तप और शुभ भावों से महक रहा जैन धर्म हमारा
मैत्रीभाव से आध्यात्म के रंगों में रंग रहा है संघ हमारा
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा...

दीप जला रहे हैं जो ज्ञान के अंधकार को मिटा रहे हैं
रोशन कर रहे हैं जो जीवन हमारा ऐसा मार्ग बता रहे हैं
सही गलत का मर्म बताकर प्रभु वाणी हम तक पहुंचा रहे हैं
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा...

अनुमोदना कर रहे हम उनकी जो संयम अँगीकार कर रहे
बड़ा ही मुश्किल ये सफर है, उज्जवल इसे कर रहे हैं
महावीर के मार्ग पर चलकर अपना आत्मोद्धार कर रहे
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा...

भाग्यशाली हैं हम जो 'पुण्य सम्राट' को हमने पाया
नित्यसेन सूरि और जयरत्नसूरि की निश्रा को हमने पाया
हो सके हमारा भी आत्मोद्धार ऐसा आशीष हमने पाया
ऐसे संयम जीवन को वंदन हमारा ....

◆◆◆

श्री मधुकर मौक्तिक

* जिनने संशय का समाधान कर लिया है, उनने प्रगति के मार्ग पर एक कदम आगे बढ़ा लिया है।
* व्यक्ति स्वयं के कारण से ही दुःख प्राप्त करता है।
* तीर्थंकरों द्वारा कथित बात शाश्वत सत्य है।

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

इस संसार में ही अपने प्रकृष्ट पाप का फल भोगने वाले अति दुःखी मनुष्य और तिर्यंच हैं और अपने प्रकृष्ट पुण्य का फल भोगने वाले अति सुखी मनुष्य भी हैं। यदि ऐसा मान लिया जाये तो अदृश्य नारक और देवों को अलग से मानने की क्या आवश्यकता है ?

महावीर – आयुष्मन ! इस संसार में सुखी और दुःखी मनुष्य एवं तिर्यंच हैं। लेकिन पृथक् नारक और देवयोनि मानने का कारण यह है कि प्रकृष्ट पाप का फल सिर्फ दुःख ही होना चाहिए और प्रकृष्ट पुण्य का फल मात्र सुख ही होना चाहिए। इस दृष्ट संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं दिखता, जो सिर्फ दुःखी ही हो और न ऐसा ही कोई प्राणी दिखता है, जो मात्र सुखी ही हो और उस पर दुःख का छींटा भी न पड़ा हो। मनुष्य चाहे जितना सुखी हो, फिर भी उसे कुछ न कुछ रोग-जरा-इष्ट वियोग आदि जन्य थोड़ा बहुत दुःख तो होता ही है। इसलिए कोई ऐसी भी योनि होनी चाहिए, जिसमें अपने प्रकृष्ट फल मात्र सुख ही मिले। ऐसी योनियाँ तो क्रमशः नारक और देवयोनि हैं। अतएव उनका पृथक् अस्तित्व मानना चाहिए।

देवों के यहाँ न आने-जाने का कारण

मौर्यपुत्र – किन्तु आपके कथनानुसार यदि देव हैं ही, तो स्वैर विहारी होने से वे मनुष्य लोक में क्यों नहीं आते ?

महावीर – वे यहाँ आते ही नहीं, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता, क्योंकि तुम स्वयं उन्हें समवसरण में बैठे हुए देख रहे हो। हाँ, सामान्यतया यह बात सच है कि वे नहीं आते। किन्तु उसका कारण यह नहीं कि देव हैं ही नहीं। किन्तु कारण यह है कि वे स्वर्ग की

दिव्य वस्तुओं में आसक्त हो जाते हैं, स्वर्ग के विषयभोगों में लिप्त हो जाते हैं। वहाँ का कार्य ही समाप्त नहीं होता। उनके यहाँ आने का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है और इस मनुष्य लोक की दुर्गन्ध के कारण वे यहाँ नहीं आते। यही सब तो हुए न आने के कारण। फिर भी वे कभी-कभी इस लोक में आते भी हैं। तीर्थंकर के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान प्राप्ति, निर्वाण आदि सभी महोत्सवों के प्रसंगों पर वे इस लोक में आते हैं। उनमें से कितने ही इन्द्र आदि स्वयं भक्ति पूर्वक आते हैं और कितने ही उनके अनुसरण में आते हैं और कितने ही अपने संशय निवारणार्थ आते हैं। इसके उपरान्त भी देवों के यहाँ आने के अन्य कारण हैं। जैसे कि पूर्व भव के पुत्र, मित्र आदि के राग के कारण, मित्रादि को प्रतिबोध देने के लिए आने का पूर्व संकेत हो तो, तपस्या गुण से आकृष्ट होकर पूर्व भव के वैरी को पीड़ा देने, मित्र पर उपकार करने और काम क्रीड़ा के निमित्त भी देव इस लोक में आते हैं और कई बार किसी साधु आदि की परीक्षा के बहाने भी आते हैं।

देवसाधक अनुमान

मौर्यपुत्र– देवसिद्धि में अन्य क्या प्रमाण हैं ?

महावीर– हाँ, अनुमान प्रमाण हैं। वे इस प्रकार हैं

देव के अस्तित्व में श्रृद्धा रखनी चाहिए। क्योंकि – 1. जाति स्मरण ज्ञानी कोई आप्त पुरुष अपने पूर्व भव का ज्ञान करके 'मैं देव था' ऐसा कहता है। 2. कितने ही तपस्वियों को देव प्रत्यक्ष दिखते हैं। 3. कितने ही विद्या, मंत्र, उपयाचन से देवों द्वारा अपने कार्य की सिद्धि करते हैं। 4. कितने ही मनुष्यों में ग्रह विकास अर्थात् भूत पिशाच कृत विक्रिया दिखती हैं। 5. तप दानादि क्रिया से उपार्जित प्रकृष्ट पुण्य का फल होना चाहिए और 6. 'देव' ऐसा अभिधान है। अतः इन सभी हेतुओं से देवों की सिद्धि होती है । तथा सभी शास्त्रों में देवों का अस्तित्व स्वीकार किये जाने से भी देवों के बारे में शंका नहीं करनी चाहिए।

ग्रह विकास की सिद्धि

मौर्यपुत्र– आपने जो यह कहा कि ग्रह विकास होने से देवों का अस्तित्व मानना चाहिए, किन्तु मनुष्य शरीर की अमुक क्रिया ग्रह विकास है, यह कैसे जाना जाये ?

महावीर– जैसे यन्त्र पुरुष में चलने की शक्ति नहीं है, किन्तु उसमें कोई पुरुष प्रविष्ट हो, तो यन्त्र में गति आती है। उसी प्रकार शरीर में अमुक कार्य करने की शक्ति न हो, फिर भी शरीर यदि वह कार्य करता हो, तो मानना पड़ता है कि शरीराधिष्ठिता जीव के अतिरिक्त अन्य किसी अदृष्य जीव ने उसमें अधिष्ठान किया हुआ है। और ऐसा अधिष्ठाता जो है, वही देव है, जिसके कारण ही मनुष्य की शक्ति के बाहर के कार्य उसके अपने शरीर से होते हैं ।

(क्रमशः)

◆◆◆

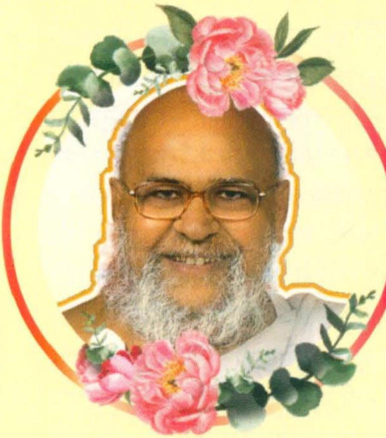

(लेखांक-14)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रतिज्ञा लेना जितना सरल है, उससे कई गुना कठिन उसका निर्वाह करना है। व्यक्ति कठोर परिश्रम करके अपार सम्पत्ति एकत्र कर सकता है, किन्तु उससे भी कठिन कार्य उस स्व-अर्जित सम्पत्ति की रक्षा करना है। व्यक्ति के कल्याण में उसके कोई सहायक नहीं होते, किन्तु उसके पतन में अनेक लोग सम्मिलित हो जाते हैं। एक बात ओर यह है कि बुरे कार्य व्यक्ति को अपनी ओर शीघ्र ही आकर्षित भी कर लेते हैं। उनकी चकाचौंध में व्यक्ति अपनी सुध-बुध खो बैठता है। फिर साथ में रहने वाले व्यक्ति भी कुछ इस प्रकार का वातावरण निर्मित कर देते हैं, जिसमें व्यक्ति अनचाहे डूबता चला जाता है। उस समय विवेक सम्पन्न व्यक्ति का विवेक भी काम नहीं करता है। एक कोमल रस्सी जब बार-बार पत्थर को रगड़ती रहती है तो पत्थर घिस जाता है। यदि किसी मनुष्य के सम्मुख बारम्बार कोई बात दोहराई जावे। उत्तेजक दृश्य प्रस्तुत किये जावें तो वह अपनी प्रतिज्ञा से स्वाभाविक रूप से ही विचलित हो जावेगा। आखिर हाड़- मांस का पुतला ही तो है, मनुष्य । दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य तो लाखों- करोड़ों में ही कोई होता है। स्थूलिभद्र का एक अनूठा उदाहरण जैन साहित्य में मिलता है, जिन्होंने मुनिव्रत/ संयम ग्रहण करने के बाद अपना वर्षावास अपने गुरु की आज्ञा से वेश्या कोशा की चित्रशाला में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। यह वही कोशा थी जिसके प्रेम में स्थूलिभद्र दीक्षा के पूर्व डूबे रहते थे। मुनिव्रत/संयम अंगीकार करने के पश्चात्, जब वे कोशा की चित्रशाला में वर्षावास हेतु पधारे तो कोशा ने अपने आपको धन्य माना। उसने अपने पूर्व प्रेमी को आसक्त करने के लिये जितने भी उपाय करने थे, वे सब कर लिये, किन्तु स्थूलिभद्र उन सबसे अप्रभावित ही रहे। अंत में संयम के सम्मुख वासना पराजित हो गई। कोशा करबद्ध हो उनके सामने क्षमायाचना करने लगी।

रूप-यौवन और काम विकार के वशीभूत होकर राजा वीरधवल अपनी प्रतिज्ञा भंग करने पर तुल गए तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। राजा वीरधवल ने अपनी प्रतिज्ञा भंग करके अपने सामान्य व्यक्ति होने का ही परिचय दिया। राजा की स्वीकृति मिलने के पश्चात् राजा के सम्मुख विवाह के लिये प्रस्ताव रखे जाने लगे कि अमुक राजकुमारी श्रेष्ठ रहेगी। अमात्यों

एवं अधिकारियों ने ऐसी अनेक राजकुमारियों का वर्णन राजा के सम्मुख किया। राजा के सामने श्रीपुर के रूप- यौवन सम्पन्न राजकुमारी का प्रस्ताव भी आया। उस समय श्रीपुर राज्य की विशेष ख्याति थी। कोई भी राजा श्रीपुर से अपना सम्बन्ध जोड़कर अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर सकता था। कई राजा तो श्रीपुर से अपना सम्पर्क किसी न किसी रूप में जोड़ने के लिए लालायित थे। जब राजा वीरधवल के सामने श्रीपुर की राजकुमारी का प्रस्ताव आया तो वह कुछ गंभीर हो गया। उसने राजकुमारी के सम्बन्ध में कुछ और जानकारी चाही, वह भी उसे उपलब्ध हो गई। राजा वीरधवल ने श्रीपुर के राजा वसु की पुत्री राजकुमारी मधुलता से अपने विवाह की स्वीकृति देकर राजा वसु से बातचीत करने के लिये अपने अमात्य और कुछ अधिकारियों को श्रीपुर भेजा।

श्रीपुर के राजा वसु को जब कनकपुर के अमात्य और कुछ अधिकारियों के आगमन और दर्शन करने की सूचना मिली तो वह एकाएक इसका कारण नहीं जान सका। वैसे कनकपुर राज्य का और वहाँ के राजा वीरधवल का नाम उसने सुन रखा था। राजा वीरधवल की कुशलता और वीरता के विषय में उसने सुन रखा था। वह भी कनकपुर से अपने सम्बन्ध बनाना चाहता था, किन्तु सम्बन्ध किस प्रकार बने, यह उसकी समझ में नहीं आ पा रहा था। उसने कनकपुर के अमात्य और अधिकारियों को ससम्मान अतिथि कक्ष में बैठाने का निर्देश दिया और कुछ ही देर बाद वह भी अतिथि कक्ष में जा पहुंचा। अमात्य आदि राजा वसु के सम्मान में खड़े हो गए और उन्हें सादर अभिवादन किया। राजा वसु ने उनके अभिवादन को स्वीकार करते हुए उन्हें बैठने का संकेत करते हुए कहा- 'कहिए ! यहाँ तक आने के लिए किसलिये कष्ट किया ?

'हमारे महाराज वीरधवल ने आपकी कुशलक्षेम पूछी है। वे महाप्रतापी हैं, वे न्याय प्रसिद्ध है। उनके प्रभाव से और राज करने की शैली के कारण कनकपुर राज्य अपराधविहीन है। उनके नेतृत्व में कनकपुर राज्य चहुँमुखी उन्नति कर रहा है, कोई भी राजा उनसे अपना सम्बन्ध जोड़कर गौरव का अनुभव कर सकता है। ऐसे प्रतापी, तेजस्वी, ओजस्वी, कुशल, प्रशासक, नीतिज्ञ, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, विवेक सम्पन्न वीर महाराजा वीरधवल अपना पुनर्विवाह करना चाहते हैं। उनके लिये हम आपकी कन्या का हाथ माँगने आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं।' अमात्य ने कहा।

अमात्य का यह प्रस्ताव अप्रत्याशित था। राजा वसु को ऐसी कोई अपेक्षा नहीं थी। उसने जब इस प्रस्ताव को सुना तो वह अपने-आपको धन्य मानने लगा। वह तो स्वयं ही कनकपुर राज्य से अपना सम्बन्ध जोड़ने का मार्ग खोज रहा था। अब तो घर बैठे ही गंगा आ गई। यदि इसमें स्नान नहीं किया तो मूर्खता ही होगी। एक स्वर्ण अवसर हाथ से निकल जाएगा। एकाएक वह कुछ कह नहीं पाया। उसको मौन देखकर अमात्य आदि कुछ असमंजस में पड़ गए। अमात्य ने पुनः निवेदन किया- 'महाराज ! हमने आपकी सेवा में कुछ निवेदन किया है। हमारे निवेदन पर 'आप विचार कर हमें उत्तर देने का कष्ट करें।'

'ओह ! हाँ ! चौंकते हुए राजा वसु ने कहा- ' महाराज वीरधवल की कीर्ति के सम्बन्ध में

(क्रमशः)

◆◆◆

पढ़ो व समझो

वास क्षेप ने किया ऐसा कमाल

(श्री सुरेन्द्र गंग)

कर्म सिद्धान्त के अनुसार बिना योग संजोग के कोई भी कार्य इस जगत में पूर्ण नहीं होता है। यह संयोग ही था कि वर्ष 2016 के चातुर्मास की रतलामवासियों के प्रबल-पुण्योदय के कारण ही स्व. गच्छाधि पति आचार्य देवेश श्रीमद् जयंत सेन सूरिजी महाराज साहब की स्वीकृति मिली। उनके भव्य ऐतिहासिक प्रवेश (10 जुलाई) में रतलाम शहर के सभी जनों की पूर्ण आस्था प्रगट हुई व 4 माह तक रतलाम शहर ही नहीं आसपास के सभी क्षेत्रों का जन सैलाब लगा रहा। यह ऐतिहासिक चातुर्मास रतलाम शहर के लिए यादगार रहेगा। सभी वर्गों की आस्था गुरुदेव के प्रति रही। चातुर्मास प्रायोजक त्रिस्तुतिक समाज के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्यजी काश्यप थे।

मैं गत 8 वर्षों से नीमवाला उपाश्रय रतलाम में बच्चों में जैनधर्म के प्रति बीजारोपण करने हेतु पाठशाला से जुड़ा हुआ हूँ। सामायिक, चैत्यवंदन गुरुवंदन, प्रतिक्रमण विधि याद कराते-कराते बहुत कुछ मुझे भी याद हो गया। लेकिन मेरे ज्ञानावरणीय कर्म शायद प्रबल थे। जिसके कारण मैं उन्हें उपयोग में नहीं ले रहा था। परिषद व श्रीसंघ के सभी जन सपरिवार रोज गुरु दर्शन का लाभ ले रहे थे, लेकिन रतलाम श्रीसंघ पर गुरुदेव की अनंत कृपा थी। उनके द्वारा सितम्बर - अक्टूबर माह में दोपहर 3-5 बजे का रतलाम श्रीसंघ के प्रत्येक घर से 5-7 परिवार के परिचय हेतु बुलावा भिजवाया गया। यह एक अनुकरणीय पहल गुरुदेव द्वारा रतलाम श्रीसंघ को मिली थी। जिन परिवार को यह संदेश मिलता था वह आश्चर्यचकित भाव विभोर हो जाता। गुरुदेव ने मुझे मिलने को बुलाया है। यह संदेश मिलते ही भावअश्रु आ जाना स्वाभाविक है। सभी सदस्य कल किसका नम्बर है। यह जानकारी लेने को उत्सुक रहते थे। ऐसा ही एक मौका मेरे परिवार को मिला। फोन आने के बाद अति उत्साहित हुआ। मन में अनेक विचार आए। गुरुदेव से कैसे मिलेंगे, क्या बात करना है, गुरुदेव क्या पूछेंगे, मुझे क्या जवाब देना है। मन में 24 घंटे

विचार मंथन होता रहा। फिर विचार आया गुरुदेव के पास जाना है तो क्यों न ऐसा विचार प्रगट करूं जिससे मेरे जीवन में कोई आवश्यक बदलाव आये।

गुरुवंदन के बाद परिवार से परिचय हुआ। गुरुदेव ने सभी को आशीर्वाद स्वरूप वासक्षेप किया। मेरा नम्बर आने पर मैंने गुरुदेव से कहा कि मुझे ऐसा आशीर्वाद दो जिससे मैं पंच प्रतिक्रमण/दो प्रतिक्रमण करना सीख जाऊँ। गुरुदेव ने पुनः पूछा क्या... तब गुरुदेव के पास खड़े मुनिराज निपुण रत्न विजयश्री महाराज ने कहा कि इन्हें पंच प्रतिक्रमण करना सीखना है। गुरुदेव ने मुस्कुराकर मेरे सर पर वासक्षेप किया व कहा कि इस पद की एक माला रोज गिनना व कोशिश करते रहना हो जाएगा। मैंने उनकी आज्ञानुसार उसी दिन से प्रतिक्रमण करना शुरू किया। गुरुदेव के आशीर्वाद से छह माह में मैंने राई-देवसीय प्रतिक्रमण करना सीख लिया। यह गुरुदेव का आशीर्वाद है कि मैं जो कार्य 62 वर्ष में न कर सका वह कार्य छह माह में हो गया। गुरुदेव की कृपा सदा हम रतलामवासी श्रीसंघ, परिषद आदि पर बरसती रहे इसी भावना के साथ।

◆◆◆

उत्कृष्ट चारित्र्य पालन

'उत्कृष्ट चारित्र पालन'- पूज्य गुरुदेव संघ एवं समाज की अनेक जिम्मेदारी होते हुए भी साधु जीवन की आचार-विचार एवं क्रियाओं के प्रति दृढ़तापूर्वक पालन करने में सदैव समर्पित रहे। इसका एक साक्षात उदाहरण है बड़नगर चातुर्मास में एक शाम गुरुदेव की छाती में दर्द हुआ, चिकित्सक आये, दवाई लिखी। उस वक्त सुर्यास्त हुए एक मिनट हो चुका था। पता चलने पर गुरुदेव ने दवाई लेने से स्पष्ट इंकार करते हुए कहाँ मेरे प्रभु ने पंचममहाव्रत के साथ रात्रि भोजन विरमण भी दिया है अर्थात् विषम परिस्थिति में भी चरित्र धर्म पालन में कभी शिथिलता नहीं आने दी। संयम जीवन की सभी आवश्यक क्रियाओं के साथ-साथ एक ही आसन पर 8-8 घंटे बैठकर संघ की योजनाओं को क्रियान्वित करते थे। अनेक मुमुक्षु आत्माओं के संयम जीवन में ज्ञान के प्रसुन पल्लवीत करने वाले गुरुदेव का ऐसा था- 'उत्कृष्ट चारित्र पालन'

- श्रीमती अरूणा संजय बांठिया

181, तेजाजी मंदिर मार्ग, रिंगनोद (धार)

मो. 9424004226

आज भी छाया करते हैं मुझ पर

(मृत्युंजय)

मेरे गुरुदेव पूज्य लोकसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. का मेरे उपर अनन्त उपकार है। मैं आज भी जीवित हूँ तो सिर्फ उनकी वजह से। वे मेरे रोम-रोम में बसे हैं। हमेशा उनकी वचन सिद्धि एवं उनके वासक्षेप के प्रभाव से मुझे नया जीवन मिला है। मैं यह चाहता हूँ मेरे गुरुदेव के वासक्षेप का कितना प्रभाव रहा एवं वे एक सिद्ध पुरुष थे- यह शाश्वत धर्म के माध्यम से पूरे देश के गुरुभक्तों को पता चले। मैं कुछ व्यक्तिगत कारणों से अपना नाम नहीं छपवाना चाहता हूँ।

बन्धुओं मेरा परिचय सिर्फ यह है मैं केवल एक गुरुभक्त हूँ। गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी मेरे रोम-रोम में बसे हैं। उन्होंने मुझे एक नहीं कई बार नया जीवन दिया है। पहली घटना उस समय की है जब पूज्यश्री का चातुर्मास चैन्नई में एवं पूज्य मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा. का चातुर्मास म.प्र. के मेघनगर में था। उस समय मेरे घर में कुछ ऐसी असामान्य घटना घटने लगी जिसे लेकर मैं काफी परेशान था। धीरे-धीरे जब मेरी परेशानी बढ़ने लगी तो मैं अनायास ही कुछ तंत्र-मंत्र करने वाले तांत्रिकों के सम्पर्क में आया। उन्होंने धीरे-धीरे मुझे अपने जाल में फँसा लिया एवं मुझसे काफी रुपये ऐंठने के बाद मुझे मानसिक रूप से इतना परेशान कर दिया कि मैं जिस घर में रहता था उस घर में कोई भूत प्रेत का साया है एवं मुझे वह घर खाली करना होगा। अन्यथा मेरी एवं पूरे परिवार की जान को भी खतरा है। जब परेशानी बहुत अधिक हो गई तब मैंने फोन पर पूज्य मुनिराज श्री सिद्धरत्नजी म.सा. से चर्चा की। उन्होंने मुझे सांत्वना देते हुए कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है। गुरुदेव की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। तू एक बार चैन्नई गुरुदेव से बात कर ले। तब मैंने हेमूभाई के नम्बर पर फोन लगाया। उन्होंने फोन का स्पीकर चालु कर गुरुदेव से मेरी बात करवाई। मैंने गुरुदेव को पूरी घटना बताई एवं कहा कि गुरुदेव बहुत अधिक परेशानी है तो उन्होंने सहजभाव से कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है। तेरे पास नमस्कार महामंत्र का वासक्षेप है मैंने कहा हाँ है। तब उन्होंने कहा कि वासक्षेप की एक पुड़िया लेकर तीन नवकार एवं गुरुदेव का नाम स्मरण कर मुख्य द्वार पर बांध। दुनिया की कोई भी ताकत कुछ नहीं कर पायेगी। मैंने ठीक वैसा ही किया बन्धुओं ! यह गुरुदेव के वासक्षेप का चमत्कार ही था कि ठीक 24 घंटे के अन्दर अनायास ही मेरे सामने उन अनहोनी घटनाओं का सारा भेद खुल गया। वह

कुछ लोगों के द्वारा रचा गया षड़यंत्र था। मैं उन तांत्रिकों के चक्कर से बाहर आ गया।

दूसरी घटना भी तभी की हैं मुझसे कभी उपवास नहीं होता था। उस वर्ष संवत्सरी महापर्व पर परिवार वालों ने जबरदस्ती मुझसे उपवास करने को कहा तो मैंने कर लिया। दिनभर जैसे-तैसे निकल गया लेकिन रात 12 बजे के लगभग अचानक उल्टियाँ हुई एवं ब्लडप्रेशर लो हो गया। हालत ऐसी थी कि रात में ही हास्पिटल में एडमिट करना होगा एवं पच्चक्खाण तोड़कर पारणा करना होगा। तभी मुझे गुरुदेव के वासक्षेप का ध्यान आया और मैंने उनका वासक्षेप तीन नवकार गिनकर अपने हृदय एवं पेट पर लगाया। 10 मिनिट के पश्चात मुझे ऐसी नींद आयी की सुबह नवकारसी आने के बाद नींद खुली। ऐसा था मेरे गुरुदेव के वासक्षेप का प्रभाव।

तीसरी घटना नवम्बर माह की है । 8 नवम्बर को अचानक से हुई नोटबंदी के कारण मुझे काफी नुकसान हुआ। इतनी बड़ी आर्थिक समस्या आ गई कि मेरे लिये जीवन-मरण का प्रश्न बन गया। एक तरफ कुआं दूसरी तरफ खाई की स्थिति निर्मित हो गई थी। दूर-दूर तक कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी। उस परिस्थिति से बाहर आना जरूरी था। मान-सम्मान, प्रतिष्ठा सभी दाँव पर लगी थी। उस समय पूज्य गुरुदेव रतलाम में चातुर्मास हेतु विराजित थे। मुझे अचानक गुरुदेव का स्मरण हुआ और मैं सीधा रतलाम जाकर पूज्य गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. से (तब मुनिराज श्री नित्यानंदजी म.सा.) मिला। उन्हें पूरी घटना बताई एवं गुरुदेव से चर्चा करने की विनती की। उन्होंने बहुत स्नेह से मुझे बिठाया एवं स्वयं जाकर गुरुदेव से चर्चा की। तब गुरुदेव ने उस वक्त उनके पास जो श्रावक थे उन्हें कुछ देर के लिये बाहर भेजा एवं मुझे बुलाया। गुरुदेव के समीप पहुँचते ही मेरी अश्रुधारा फूट पड़ी। गुरुदेव ने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा घबराने की बात नहीं है। बता क्या बात है ? तब मैंने उन्हें पूरी घटना बताते हुए कहा कि गुरुदेव अब मेरा मान सम्मान, प्रतिष्ठा सब समाप्त होते नजर आ रहा है। तब उन्होंने मेरे सिर पर वासक्षेप कहते हुए कहा ऐसा कुछ नहीं होगा। जा सब ठीक हो जायेगा। उनके इतना कहते ही मेरे अन्दर उम्मीद की एक किरण जगी एवं मेरा खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आने लगा। लगा 24 घंटों के भीतर मेरा एक ऐसा कार्य जो पिछले पाँच वर्षों से नहीं हो रहा था एवं अगले पाँच वर्षों तक भी नहीं होने की कोई उम्मीद नहीं थी वह बिना किसी प्रकार के सहज भाव से हो गया। मैं उस आर्थिक समस्या से धीरे-धीरे बाहर आ गया। ऐसे थे मेरे गुरुदेव एवं उनका वासक्षेप। मेरे लिये आज भी वे उसी प्रकार हैं, हर संकट की घड़ी में वो मेरे साथ नजर आते हैं। उनका नाम जब भी स्मरण करता हूँ मेरे निकट खड़े हो जाते हैं।

◆◆◆

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

दिसम्बर 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 12
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2078

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

परास्त किया काम को मुनि स्थूलिभद्र ने

कामवासना एकदम उत्तेजित हो जाये

ऐसा वार्तालाप, कहानी-किस्से, मुहावरे

कस-कस कर रूपकोशा सुनाती रही

लेकिन,

स्थूलिभद्र टस से मस नहीं हुए वे मुनिवेश में चातुर्मास करने आये थे तथा उनका जीवन बदल गया था। इसी रूपकोशा के साथ उन्होंने रंगरेलियाँ की थीं

अब !

कामविजेता साबित होने के लिए उनने चातुर्मास किया। मुनि स्थूलिभद्र के लिये कवियों ने लिखा

ये मुनि आग में कूद पड़े किन्तु जरा से जले नहीं

इन्होंने सांप के बिल में हाथ डाला लेकिन सांप डंक नहीं मार पाया

काजल की वर्षा में खड़े हो गये परन्तु दाग तक नहीं लगा

रूपकोशा बराबर आती रही। स्वभाव से रिझाती रही लेकिन मुनि स्थूलिभद्र बेदाग उपाश्रय लौटे।

गुरुदेव के चारों ओर विभिन्न अग्नि परीक्षाएँ देकर आये चारों प्रखर शिष्य एकत्र हो गये। उन्होंने पूछा हमने ऐसे-ऐसे साहस किये, फरमाइये अव्वल कौन?

गुरु के मुख से निकल पड़ा -

स्थूलिभद्र।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

अध्यक्षीय पाती

हम कैसा सुख चाहते हैं ?

श्री वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

हम सुख की खोज में तल्लीन रहते हैं हालांकि हम में से अधिकांश को यह सही रूप में ज्ञात नहीं है कि सच्चा सुख किसे कहते हैं ? ऐसा अज्ञान होने के कारण ही हम सुख की खोज सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति में करते रहने में व्यस्त हैं। इस खोज के प्रयास में हम राग-द्वेष उत्पन्न करते रहते हैं तथा मोह-माया में पड़े रहते हैं। अठारह पाप स्थानक का सेवन हमें खुशी का कारण दिखाई देता है। क्षण - क्षण हम संसार के सम्बन्धों की चिन्ता में डूबे रहते हैं। ऐसा करते रहने से न हम परम सुख तक पहुँच पाते हैं, न सच्चे सुख से हमारा स्पर्श हो पाता है।

शास्त्रों में उल्लेख है कि जो लोग भोग एवं ऐश्वर्य में अत्यन्त आसक्त हैं, उनकी बुद्धि मलिन होती है। ऐसी बुद्धि में सच्चा सुख नहीं आता है। जब तक भौतिक इच्छाएँ हमें घेरे रहती हैं या हम इन इच्छाओं के घेरे में रहते हैं तब तक हम कर्मों के बंधन में हैं। इन इच्छाओं की प्रेरणा से हम नवीन कर्म के बंधन की ओर अग्रसर हो जाते हैं। ये बंधन ही हमारे सुख दुःख की अनुभूतियों के कारण हैं। जब तक हम बंधन में हैं, पूर्वोपार्जित कर्मों का उदय तथा नूतन का बंध एक सायंकाल की तरह निरंतर रहते हैं। स्थिति ऐसी विकट है कि व्यक्ति अपने विवेक से यह निश्चय ही नहीं कर पाता है कि उसके लिये वास्तविक मार्ग कौन सा है ? वह भटकता रहता है। चौरासी लाख जीव योनियों में भटकना उसकी प्रकृति बन गई है।

जीवन में दुःखों का कारण हमारी तृष्णा भी है। हमारी तृष्णा कभी पूरी नहीं होती है, शांत नहीं होती है। एक वस्तु की हम इच्छा करते हैं, वह प्राप्त होते ही उसकी ओर प्राप्ति के लिये लालसा जागृत हो जाती है। यह प्राप्ति धन, परिवार, मकान, व्यवसाय, पद, वाहन, नौकरी सभी से जुड़ी हुई है। उसे किसी भी वस्तु की इच्छा पूर्ण होने तथा उसकी प्राप्ति होने पर प्रसन्नता अवश्य होती है, उसे सुख मिलता है लेकिन यह स्थिति क्षणिक है, अस्थायी है क्योंकि नई आकांक्षाओं तथा तृष्णाओं के जन्म उसके मानस को ग्रस्त कर देते हैं।

इसीलिये तीर्थंकर श्री महावीर देव ने कहा है कि अपनी इच्छाएं सीमित करो, उन पर नियंत्रण करो। यदि सच्चा सुख चाहते हो तो मुक्ति के लिये पराक्रम करो, उसकी शरण लो, उसे जीवन का परमोच्च लक्ष्य बनाओ ।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

उनकी विरासत को निरंतर रखिये

श्री रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
परिषद् परिवार

पुण्य सम्राट युग प्रभावक राष्ट्रसंत/ लोकसंत गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अपना सम्पूर्ण जीवन त्रिस्तुतिक रूप में परिमार्जित करने में समर्पित किया। दादा गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के क्रियोद्धार तथा जैनाचार्य व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा समुन्नत कल्पनाशक्ति के क्रियोद्धार के मूलभूत सिद्धान्तों को सार्थक करने के प्रयासों को यदि सुदृढ़ कर त्रिस्तुतिक समाज को समग्र जैन समाज में पहचान दिलाने का पराक्रम किसी ने सफल बनाया है तो हमें पुण्य सम्राट युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का नाम सर्वोच्च स्थिति पर स्थापित करना पड़ता है।

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने समाजके उत्थान के लिये तथा इसका सर्वांगीण स्वरूप निखारने के लिये क्या नहीं किया ? वे चिरविदाई के साथ अपने उत्तराधिकारी चतुर्विध संघ के लिये क्या नहीं छोड़ गये। उन्होंने समाज को किस कोने में कमजोर होने दिया ? उत्तर मिलता है वे ढाई सौ मुनिगणों तथा साध्वी समुदाय का विशाल संघ समाज के मार्गदर्शन के लिये तैयार कर भेंट कर गये। कई तीर्थों की नूतन रचना की, जीर्णोद्धार किये, वहाँ प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न कर उन्हें पूर्णता दी तथा यात्रियों के लिये सुविधाओं (धर्मशाला, भोजनशाला आदि) का विस्तार कर तीर्थों को चमका दिया। ये सभी तीर्थधाम देव-गुरु-धर्म की उपासना के केन्द्र बने हुए हैं। कई तीर्थों पर ज्ञानभण्डार बनाये तथा शोधकेन्द्र स्थापित कर ज्ञान प्रभावना की। पाठशालाओं को अनुदान दिये, ज्ञानपीठ की स्थापना की, कमजोर परिवारों को सम्बल प्रदान किये, व्यावहारिक शिक्षा में छात्रवृत्ति की उदार धारा प्रवाहित की। जन कल्याण के उद्देश्य से परिषद शाखाओं के माध्यम से चिकित्सा शिविर, नैत्र शिविर, अनुकम्पा प्रवृत्तियाँ, वृद्धाश्रमों-गरीब केन्द्रों में भोजन व्यवस्था जैसी प्रवृत्तियों का आयोजन किया जा रहा है। इन सभी को पुण्यसम्राट की स्मृति में नियमित तथा सुसंगठित की जानी आवश्यक है। इस हेतु परिषद परिवार की प्रत्येक शाखा को चाहे वह नवयुवक हो, तरुण हो, महिला हो, वधू हो या बालिका, परिवार हो या कहीं भी हो ये सभी गठित हो उनको पुण्य सम्राट युग प्रभावक के उपदेशों के अनुसार गतिविधियाँ संचालित करने के लिये अपनी शाखा में गुरुदेव श्रीमद् जयंतसेनसूरि प्रकोष्ठ का गठन करना चाहिये।

◆◆◆

सम्पादकीय

卐 स्वस्तिक 卐

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

स्वस्तिक विश्व की किसी भी भाषा की प्रचलित वर्णमाला का कोई अक्षर या शब्द नहीं है, न ही मंत्रों की दृष्टि से गणना बीज अक्षरों में है, फिर भी इसका प्रचलन पूरे विश्व में है। यह केवल एक चिन्ह है तथा यों कोई भी चिन्ह किसी देवी-देवता से सम्बन्ध उनके प्रतीक के रूप में होता है। उस चिन्ह की उपासना से देवी-देवता की उपासना की पूर्ति मानी जाती है लेकिन स्वस्तिक किसी नामांकित भगवान, देवी-देवता या डायन-पिशाच कैसी भी शक्ति का परिचायक नहीं है। यह प्रत्येक स्थान पर अंकित हुआ होता है। हालांकि कहीं भी इसका तात्पर्य अशुभ से नहीं अर्थित किया गया है।

विश्व के प्रत्येक धर्म ने इसे अपना रखा है तथा इसे परम पवित्र, शुभ, मंगलकारी चिन्ह माना जाता है। भारत में चाहे धार्मिक क्षेत्र हो या सामाजिक अथवा लोक व्यवहार स्वस्तिक ने अपना स्थान बना रखा है। भारत विविध धर्मों का देश है, उन धर्मों के रिवाजों, पर्वों, आचारों में टकराव भी हो सकता है लेकिन स्वस्तिक सभी धर्मों के लिये मान्य तथा मंगलकारी चिन्ह है। हम भी मंदिर जाते हैं तथा भगवान के सन्मुख अक्षत अर्पित कर द्रव्य पूजा करते हैं तब जो आकृति तीन ढगलियां तथा उन पर सिद्धशिला का आकार बनाते हैं वहाँ सबसे नीचे अक्षत से स्वस्तिक की रचना ही करते हैं। इसका भावार्थ शास्त्रकारों ने यों किया है कि स्वस्तिक की चार भुजाएँ चार गति (देव, मानव, तिर्यंच तथा नारक) की प्रतीक हैं तथा स्वस्तिक बनाकर हम यह प्रार्थना करते हैं कि मैं इन चार गतियों में भ्रमण से मुक्त होऊँ जिससे संसार में मेरा जन्म व मरण रुक जाय। यह सर्वथा आध्यात्मिक प्रक्रिया है लेकिन दूसरी ओर हम ही दीपावली की बेला में देवियों लक्ष्मी-सरस्वती की पूजा

करते समय बहीखाते में शुभ-लाभ के शब्दों के मध्य कुंकुम से स्वस्तिक बनाते हैं जिसका तात्पर्य पुण्य, मंगल तथा आशीर्वाद की वांछा से है। यहाँ स्वस्तिक समृद्धि एवं सुख की प्राप्ति की प्रार्थना के लिये है। व्यवहार में अपने घरों पर भी मुख्य द्वार पर चांदी (रजत) से बने स्वस्तिक की पूजा कर उसकी तस्वीर स्थापित करना भी समृद्धिदायक माना जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों में चाहे वे वैदिक परम्परा के अनुसार हों या श्रमण (जैन व बौद्ध) परम्परा के अनुसार स्वस्तिक का प्रयोग किया जाता है। स्वस्तिक बनाये बिना उस अनुष्ठान की पूर्णता नहीं हो पाती है। वैदिक यज्ञों से लेकर जैन पूजाओं तक में स्वस्तिक अंकित कर उस पर श्रीफल स्थापित करने का प्रचलन है। इतना ही नहीं शुभ के लिये शादियों की विधि में भी स्वस्तिक को स्थान मिला हुआ है।

यह अभी तक निश्चित नहीं हुआ है कि स्वस्तिक की आकृति की रचना कब हुई तथा यह किसके शासनकाल या धर्म श्री गणेश की उपज है। इस चिन्ह को प्रारंभ से ही शुभ, कल्याण, मंगल, धार्मिक अपेक्षाओं के लिये अंकित किया जाता है। यह प्रथा आदिकाल से है। आदिकाल से इसके विभिन्न अर्थ किये जाते रहे हैं। विशेषतः मांगलिक कार्यों में इससे ही शुभारंभ किया जाता है। वैदिक संस्कृति के गणेश पुराण में कहा गया है कि स्वस्तिक गणेशजी के स्वरूप हैं। इसकी स्थापना से मांगलिक कार्यों में बाधाओं को हरने या अमंगल को दूर करने की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है कि स्वस्तिक शुभ तत्वों को निमंत्रण देता है। जैन तत्वज्ञान का कथन है कि स्वस्तिक की चार भुजाएँ चार गति को प्रदर्शित करती हैं तथा स्वस्तिक की आकृति पाँचवीं गति के लिये पुरुषार्थ का आह्वान करती है। यह पाँचवी गति मोक्ष है जो जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य है। प्रत्येक घर पर अंकित किये जाने पर यह अमृत की वर्षा की स्थिति प्राप्त करवाता है।

आज भी विश्व के प्रत्येक देश में वहाँ के मान्य धर्म के आधार पर स्वस्तिक की सर्वप्रियता है, पश्चिमी देशों में इसे नाजी का प्रतीक भी मानते हैं। नाजी जर्मनी में थे तथा हिटलर इनका नेता था । हिटलर ने तब जर्मनी के ध्वज पर भी स्वस्तिक अंकित करा रखा था। एक तर्क यह दिया जाता है कि हिटलर ने इसे अपना कर इसका दुरूपयोग किया, इससे स्वस्तिक अशुभ नहीं हो जाता है। हिटलर की स्पष्ट धारणा थी कि आर्य जर्मनी के निवासी थे, उन्होंने जर्मनी से जाकर भारत

पर आक्रमण किया था । आर्यों ने भारतीयों को प्रभावित करने के लिए ही अपनी सेना के झण्डे पर स्वस्तिक अंकित कर भारत में प्रवेश किया था। लेकिन यह भ्रम पूर्ण है कि आर्यों ने भारत को स्वस्तिक दिया । क्योंकि आर्य के भारत आगमन से पूर्व ही यहाँ सिन्धु घाटी की सभ्यता प्रचारित थी। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई में जो प्रतिमाएँ मिली हैं, उन पर स्वस्तिक के चिन्ह हैं। स्वस्तिक का निशान भारत से ही पूरे विश्व में फैला । इसका माध्यम बौद्धधर्म बना। बौद्धधर्म के साथ ही स्वस्तिक का निशान, चीन, श्रीलंका, कोरिया, जापान तथा समुद्री देशों में प्रविष्ठ हुआ। स्वस्तिक के निशान का जहाँ तक आर्यों से संबंध है, यह आर्यों से भी पूर्व का है। यह भी दावा किया जा सकता है कि आर्यों ने स्वस्तिक का निशान भारत से लिया। इंग्लैण्ड जैसे देशों में इसका प्रयोग फैशन की तरह किया जाता था। बाद में 18 वीं शताब्दी में ब्रिटेन के लोगों ने भारत से स्वस्तिक के उपयोग की शिक्षा ली। आज स्थिति यह है कि ब्रिटेन में व्यापक तौर से स्वस्तिक का प्रयोग होता है। वहाँ रेलवे स्टेशनों, सरकारी ईमारतों तथा चर्च जैसी धार्मिक स्थलों पर भी स्वस्तिक बना हुआ है। लेखक रूडयार्ड किप्लिंग अपनी किताबों की जिल्द पर स्वस्तिक को ट्रेड मार्क की तरह बनाते थे।

स्वस्तिक का अर्थ मंगल होता है। 'स्व' से 'शुभ' तथा 'अस्ति' से तात्पर्य 'अस्तित्व' हैं। स्वस्तिक का मतलब हुआ, जहाँ मंगल का अस्तित्व हो। मंगल का तात्पर्य ही अशुभ का गलन है। अतएव यह धारणा अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है, कि मानव संस्कृति ही अमृतमयता को प्राप्त करने के लिए स्वस्तिक से जुड़ी हुई है। इसे ऋग्वेद में एक ऋषि ने 'सूर्य' माना है, तथा आचार्य चरक ने अविनाशी ब्रह्म की संज्ञा दी है। इतना ही नहीं कुछ शास्त्रों ने धन की देवी लक्ष्मीजी का प्रतीक चिन्ह माना है।

निश्चित ही स्वस्तिक सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरी, सर्वमान्य, सर्वत्र प्रचलित चिन्ह है।

◆◆◆

- वीतराग देव ने हमको एक जड़ी दी है। इस जड़ी को सूंघ कर एक भयंकर नाग और पांच नागिनें मर जाती हैं। वह जड़ी है तप।
- तप रूप जड़ी से मन रूप भुंजग और पांच इन्द्रियाँ रूप नागिनें मर जाती हैं।
- तपस्या से काम पर काबू पाया जा सकता है।

श्री महावीर वचनामृत : आध्यात्मिक मंच

तृष्णाओं से अलिप्त रहना तप है

भगवान महावीर का प्रथम उपदेश जो कि उन्होंने सिंहासनासीन होकर दिया, सबने एकाग्र चित्त से सुना। उससे मानव हित के, शांतिपूर्ण सामाजिक विकास के, सहअस्तित्व के, समता के तथा सहयोग के नये द्वार खुल गये। मगध, काशी, कोशल तथा उत्तर एवं मध्य भारत के देशवासियों को नया जीवनदर्शन मिला। उस दिन बौद्धिक जागृति, मानव स्वातंत्र्य, परस्पर प्रेम, सहनशीलता, कला एवं साहित्य की प्रगति, कर्मबद्ध आत्मा की जागृति, सांसारिक दुःखों से मानव की मुक्ति के मार्ग के नये युग का सूत्रपात हुआ। उनका एक प्रहर का प्रवचन जिन्होंने सुना वे उनकी अथाह विद्वत्ता से, मधुर वाणी से, उनके द्वारा उपदिष्ट धर्म सिद्धान्तों के अकाट्य तर्कों से स्तंभित हो गये। उन्हें विश्व कल्याण का नया मार्ग मिला।

भगवान महावीर ने अपने उपदेश में स्पष्ट किया कि आत्मानुभूति की ओर अग्रसर करने वाले धर्म का मूल आधार सम्यक् ज्ञान, सम्यक्चारित्र तथा सम्यकदर्शन है- 'सम्यक् दर्शनज्ञान चरित्राणि मोक्षमार्गः'। उन्होंने वस्तुमात्र के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए पदार्थ-जीव-अजीव- के आंतरिक रचना पर प्रकाश डालते हुए उत्पत्ति- स्थिति- लयादि गुणों का विश्लेषण किया। आत्मा के शांत रूप के अनुरूप स्वयं को ढ़ालना ही वास्तविक अहिंसा है। प्राणिमात्र के प्रति करुणा का भाव रखना अथवा उन्हें पीड़ा न पहुँचाना ही अहिंसा नहीं है अपितु आत्मा को अनीति, विकारादि में उलझने से बचाना वास्तविक अहिंसा है। भौतिक शक्तियों का आध्यात्मिक शक्ति पर आधिपत्य ही आत्मा के अनंतज्ञान, अखंड आनंद आदि स्वभावगुणों के प्रकटीकरण में बाधक है। इंद्रियजन्य विकारों पर विजय 'संयम' है। आत्मानुभूति के लिये संयम अनिवार्य है। बाह्यजगत् के संपर्क से निर्मित तृष्णाओं से अलिप्त रहना 'तप' है। मोक्षप्राप्ति के लिये संयम तथा तप अत्यावश्यक है। शास्त्र-वचनों के गहन अध्ययन से सम्यकदर्शन की उपलब्धि होती है। सत्यान्वेषण उसका अंग है। जीवन में उसके क्रियात्मक प्रकटीकरण के लिये सम्यकज्ञान तथा सम्यक्चरित्र (आचार) सहायक होते हैं। मोक्ष के लिये चारित्रिक विकास चाहिये। समस्त पापों की जड़ 'राग' है। मोक्षार्थी को, फलतः रागरहित रहना आवश्यक है। हमारी अनुभूतियाँ हमारे भूतकालीन तथा वर्तमान कर्मों के फल हैं। मूलतः आत्मा निर्विकार तथा पवित्र है परन्तु अहिंसा, संयम तथा तप से ही उसकी वास्तविक अनुभूति संभव है। ◆◆◆

इन मंत्रों में अपार शक्ति, आप स्वयं करिये अनुभूति

(श्रीमती ज्योति जैन)

* रक्षा मंत्र-

ॐ नमो भगवते श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्मचक्षु, परचक्षु, भूतचक्षु, डाकिनीचक्षु, सर्वलोकचक्षु पितरचक्षु आत्मकश कश-हन-हन-दह-दह पंच-पंच ॐ फट् स्वाहा।

अचानक किसी भी प्रकार की शारीरिक अस्वस्थता आदि गंभीर स्थिति से बचने के लिए तत्काल इसका इक्कीसबार पाठ करने से शान्ति मिलती है।

* तनावमुक्ति मंत्र-

'ॐ उसभ' किसी भी प्रकार की उलझन एवं तनाव से इस मंत्र का सतत मानसिक जप करने से तुरंत निदान होता है।

* लक्ष्मी मंत्र-

ॐ ह्रीँ श्री महालक्ष्मयै नमः एवम् श्री नमः' का पाठ आशातीत सफलता देता है।

* रोग मुक्ति मंत्र-

किसी भी रोग का डाक्टर से इलाज करवाना चाहिए, किन्तु कई बार रोग पकड़ में नहीं आता है ऐसी स्थिति में यह पाठ काफी राहत देता है।

* सुबह, दोपहर एवं शाम को **चार लोगस्स का ध्यान।**

* **आरूग्गबोहिलाभभ्, समाहिवर मुत्तमं दिन्तु**।- एक माला।

* **ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् उर्वारूकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्** । इस मंत्र की एवं **'ॐ नमः शिवाय'** का मन ही मन स्मरण।

* श्री क्षेत्रपाल मंत्र

किसी भी स्थान पर शुभकार्य से पूर्व **'ॐ क्षेत्रपालदेवाय नमः'** का जप कर लेने से बाधाएँ नहीं आती हैं।

* भैरव मंत्र

ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं नाकोड़ा भैरवाय नमः इस मंत्र से जप करने से संकट मुक्ति धन धान्य वृद्धि एवं जप विजय की प्राप्ति होती है।

* सर्व सिद्धिदायक मंत्र

'ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ ब्ली ऐँ नमः' इस मंत्र की प्रतिदिन प्रातः एक माला सभी तरह से सुखद एवं सिद्धि प्रद है।

प्राच्य संगीत

गुरु सूरिराजेन्द्रजी ने गावजो रे

(स्व. श्री दीपविजयजी म.)

पर्व पजूस पूरव पुण्यथी जी.ए राह-

गुरु निज जनुथी पावन करयो रे गुरु शहर भरतपुर सार रे।
गुरु जन्मोच्छव अधिको करे रे, गुरु 'ऋषभजी तात अपार रे ।।1।।
गुरु सूरिराजेन्द्र ने गावजो रे गुरु मन में निशदिन धारजो रे ।।गु.।।टेर।।'

गुरु दशमें दशोट्टण भांतसुं रे, गुरु न्याति गोति सहुनूत रे ।
गुरु नव नवा भोजन सुं करी रे, गुरु भक्ति करे अद्भुत रे।। गु. ।।2।।

गुरु जनमे आनन्द वधामणा रे, गुरु घर घर मंगलाचार रे ।
गुरु गुण गावे गोरी मिली रे, गुरु नाचे थै थै कार रे ।।गु।। 3।।

गुरु वैराग्ये मन वालियुं रे, गुरु जाएयुं संसार असार रे।
गुरु सुविहित मुनि मग आदरयो रे, गुरु शुद्ध थया अणघार रे ।।गु.।।4।।

गुरु अनुपम गुण परगट किया रे, गुरु विद्या गुण भंडार रे।
गुरु जोग सूरि पद आचरे रे, गुरु प्रतिबोध्या नर नार रे ।।गु.।। 5।।

गुरु शिष्य वाड़ी शुध सींचने रे, गुरु वरतावी निज आण रे।
गुरु दुनियाथी वेगला थया रे. गुरु सुणस्यां कब तुम वाण रे ।।गु.।।6।।

गुरु भीनमाले गुण गुहली रे, गुरु गूंथी हर्ष मझार रे ।
गुरु आवे छे टोले परे परे रे, गुरु आय वधावे हजूर रे ।। गु. ।।7।।

गुरु संवत उनसीतर समे रे, गुरु पौषी दसमी आय रे।
गुरु कृष्ण पक्ष शुभ पक्ष में रे. गुरु रटिया नवनिय थाय रे।।गु.।।8।।

गुरु एक ध्यान मन धार ने रे. गुरु नाम रटे नित एक रे।
गुरु 'दीपविजय' आणंद में रे, गुरु गुण गावे धरी टेक रे ।।गु.।।9।।

◆◆◆

चिन्तन का चित्रांकण

गुरुपूजा करने वाले को मिलती है शान्ति

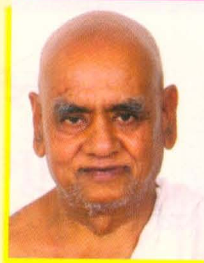

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 23.04.2016

पवन (हवा) नहीं तो संसार में कोई जिन्दा नहीं रह सकता । पवन ही श्वांस है, श्वांस है तो आस है, आस है तो विश्वास है। ये जीवन को जिन्दा रखने के लिये खास है। पवन नहीं तो श्वांस नष्ट होते ही जीव के जाने के बाद शरीर जड़ है वह स्वयं कुछ नहीं कर पाता है। इसलिये पवन जीवन के लिये आवश्यक है।

दिनांक 24.04.2016

चरण रज गुरु की सिर पर चढ़ जाये
तो जीवन पवित्र हो जाता है।
चरण पूजा गुरु की करने वाला
जीवन में शान्ति को पाता है।
हृदय के भाव निर्मल रखकर
गुरु पूजा करने वाला
अनन्त संसार बन्धन की
जंजीरों को तोड़ता है।

दिनांक 25.04.2016

पैदल चलने वालों को वाहन पकड़ाया भरपेट खाने वाले को भूखे मराया। अपनों में आराम करने वालों को रोड पर सुलाया। अपनों में रहने वालों को जंगलों में भटकाया। परिवार के बीच रहने वाले को अकेला कराया। हँसते-हँसते लोगों को खूब रुलाया। राज करने वालों को रंक बनाया। कानों से सुनने और मुँह से बोलने वालों को बहरा-गूँगा बनाया। दौड़-दौड़कर चलने फिरने वालों को लूला-लंगड़ा बनाया। आँखों से देखने वाले को अंधा बनाया। हे कर्म ! तूने ये क्या-क्या नाटक कराया।

दिनांक 29.04.2016

सिद्ध !

सिद्धि को जिसने प्राप्त कर ली वो सिद्धात्मा मानी जाती है। सिद्धि को पाने के लिये आठ कर्मों पर विजयता प्राप्त करनी होती है। अष्ट कर्म का दूरा यानि आठ कर्म-कर्म मुक्त आत्मा सिद्धशिला पर वास करती है। आठ में एक भी कर्म शेष रह जाय तब तक वह संसार के आंगन में काल व्यतीत करता है। उसे सिद्ध नहीं मान सकते अभी वह असिद्ध है। सिद्ध बनकर सिद्धशिला में स्थान पाने के लिये सम्पूर्ण रूप से प्रयत्न करना चाहिए।

दिनांक 30.04.2016

अरिहंत उपदेशक होते हैं। मार्ग दृष्टा होते हैं। शरणदाता हैं। धर्म का सत्य मार्ग बताते हैं। चार घाति कर्मों का क्षय करने से अरिहन्त बनते हैं। अरिहंत अघाति कर्मों की निर्जरा करते हैं। इसलिये अरिहंत की शरण ही जीवन का सबसे बड़ा आलंबन है, आधार है। मानव को चाहिये की अरिहंत की शरण स्वीकार कर उन्हीं के मार्ग का अनुसरण करे, यदि सच्चा सुख चाहते हैं तो।

◆◆◆

उत्तम आहार-शाकाहार 42

मांसाहार याने कैन्सर को न्यौता

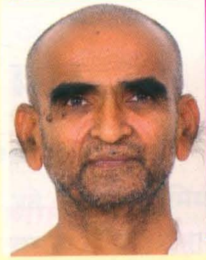

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

केन्द्रीय मंत्री श्री मेनका गाँधी ने अपने ालेख में कहा है कि कुछ वर्ष पहले तक केन्सर, खासकर उसके इलाज में कोई बड़ी कामयाबी, स्वास्थ्य संबंधी खबरें सुर्खियों में होती थीं। अब वह स्थान एड्स ने लिया है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि आज भी कैंसर से, मरने वालों की संख्या एड्स के मुकाबले हजारों ज्यादा है। भारत में किये जाने वाला अधिकांश अनुसंधान कार्य अनुवर्ती यानी अमेरीका के मुख्य चिकित्सा अनुसंधान संस्थानों में हुए काम पर आधारित है। इसलिये अमेरीका में जो हो रहा है उसके कुछ आंकड़े यहाँ प्रासंगिक हैं। अमरीका का राष्ट्रीय कैंसर संस्थान अनुसंधान पर प्रतिदिन 30 लाख डालर खर्च करता है। अमेरीका कैंसर सोसायटी प्रतिदिन 10 लाख डालर। इस सबके बावजूद कैंसर के ज्यादातर मामलों में जैसे फेफड़े, बड़ी आँत, स्तन, प्रोस्टेड और गर्भाशय के मरीजों में मृत्यु दर लगभग वही है, जो पचास हजार वर्ष पहले थी या उससे भी ज्यादा है।

कैंसर का सामना करने के दो तरीके हैं एक तो उसका ईलाज ढूँढ़ना जिस पर, दुर्भाग्यवश, सारी दुनिया समय और पैसा खर्च कर रही है और दूसरा उसे रोकने के तरीकों की तरफ ध्यान देना।

अमेरीका सीनेट की घोषणा और मानव आवश्यकताओं सम्बन्धी प्रवर समिति ने राष्ट्रीय कैंसर स्थान के निदेशक से पूछा कि कैंसर के कितने मामले खान-पान पर निर्भर हैं ? उन्होंने जवाब दिया - 'पचास प्रतिशत तक'। गौर करें पचास प्रतिशत तक! सीनेट समिति यह जानना चाहती थी कि खान-पान की कौन-सी चीजें हैं, जो कैंसर को पनपाती है। खाद्य पदार्थों में मिलाए गए रसायन ? उन्हें सुरक्षित रखने के लिये डाली गई चीजें ? कृत्रिम रंग ? नहीं। इनमें से किसी को मुख्य जिम्मेदार नहीं माना जा सकता। राष्ट्रीय कैंसर संस्थान के निर्देश डॉ. जिओ बी. गोरी का जवाब था- 'सबसे ज्यादा खान-पान की वस्तुओं में माँस और वसायुक्त खाद्य है।'

अमेरीका के राष्ट्रीय कैंसर संस्थान की पत्रिका का कहना है कि विश्व में कोई समुदाय ऐसा नहीं जो माँस का ज्यादा सेवन करता हो लेकिन वहाँ बड़ी आंत के कैंसर के ज्यादा मामले नहीं होते हों। इसका अमरीका के माँस उद्योग ने खण्डन किया और कहा कि- बड़ी आँत के कैंसर ज्यादा होने के मामले अनुवांशित होते हैं। लेकिन दावा एक अध्ययन से गलत साबित हो गया। वह अध्ययन उन जापानियों के बारे में था, जो अमेरीका में बसने के बाद माँस का सेवन ज्यादा करने लगे थे। पाया गया कि उनमें भी बड़ी आंत के कैंसर के उतने ही मामले होते हैं, जितने अन्य अमरीकियों में।

(क्रमशः)

◆◆◆

तीर्थंकर - तारेश (47)

चुप रह गये हिंसा के ठेकेदार

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.)

तलवार का प्रहार होते ही सुलस की जाँघ से खून का फव्वारा फूट निकला। सभी लोग सुलस के कार्य को देख रहे थे। सुलस ने बहते हुए खून तथा जाँघ में तलवार से हुए जख्म की ओर ईशारा कर चिल्लाना शुरू किया- 'हे भगवान ! तूने यह क्या किया ? मैं तो मरा जा रहा हूँ। इस जख्म से दर्द की धारा निकल रही है, मुझसे यह दर्द सहन नहीं हो रहा है। मेरा क्या होगा ? हे भगवान ! क्या आप मुझे भी लेने आ गये हैं। अभी तो मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ। मेरे ये सभी संगी-साथी मुझे नहीं छोड़ना चाहते हैं। प्रभो ! मेरी गत ऐसी क्यों बन रही है।' सुलस की चीख को सभी एकत्र समाजजन चुपचाप सुन रहे थे। कोई कुछ नहीं बोला।

इस पर सुलस ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए, उनको सम्बोधित करते हुए कहा- 'ओ मेरे पिताओं, काकाओं, भाइयों, मित्रों जरा मेरी ओर देखो। मेरे दर्द की सहानुभूति आप लोग भी करो। मैं व्याकुल हो चुका हूँ, मुझे चैन नहीं मिल रहा है। ए मेरे मालिकों ! मेरे सलाहकारों ! आओ! मेरे दर्द को थोड़ा-थोड़ा आप लोग बाँट लो ताकि मुझे इसकी प्रतीति कम हो जाये। आओ ! तत्काल आओ ! मेरी वेदना को थोड़ा-थोड़ा बाँट लो। खड़े क्या हो ? क्या तमाशा देख रहे हो ?'

एक समझदार ने कहा- 'ऐसा कैसे हो सकता है बेटा सुलस ! तुम्हारे दर्द को दूसरा कैसे बाँट सकता है। यह तो अपना दर्द है, अपने को ही भुगतना पड़ेगा ।'

उत्तर सुनकर सुलस को तैश आ गया ! उसने कहा - 'अभी तो आप लोग कह रहे थे तुम्हारे पाप फल को हम सभी बाँट लेंगे, अब बदल गये। जाओ मैं अब पाप नहीं करूंगा। आज से मैंने हिंसा का त्याग किया।'

भीड़ में से अभयकुमार निकलकर आया। उसने सुलस को शाबासी दी। सुलस ने कहा- 'चलो महामंत्रीजी भगवान महावीर की शरण में, मैं उनके चरणों में व्रतधारी श्रावक बनुंगा।' सुलस अभयकुमार के साथ चला गया।

◆◆◆

अतिथि रचना

शास्त्र के अनुसार समाधान

(वर्द्धमान तपोनिधि आचार्य श्रीमद् विजय कल्याणबोधसूरीश्वरजी म.सा.)

प्रश्न – धर्मवचन स्वयंसिद्ध है, इसमें क्या प्रमाण है ?

उत्तर– धर्मवचन में आज तक किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं, जो सिद्धांत प्रभु ने प्रतिपादित किये। जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य की आचार संहिता बताए, वह आज भी ठीक वैसा ही है। अन्य जो भी ज्ञान प्रकाशित किया जाये, उसमें आज भी कोई परिवर्तन का अवकाश नहीं है। यहाँ उसकी स्वयंसिद्धता का प्रमाण है। हाँ कुतर्कों के बल से कोई ऊपर कीचड़ उछाल सकता है, किन्तु वह तो बिल्कुल उसके समान है, जैसे कि कोई सूर्य के सामने धूल झोंकता हो।

इसकी तुलना विज्ञान से करें, जिस बात को 50-100 पहले सभा वैज्ञानिक एक मत से समर्थित करते थे, आज सभी वैज्ञानिक एक मत से उसके विरुद्ध में गन्तव्य रखते हैं। आइन्स्टाइन के सिद्धांतों के आविष्कार के पश्चात न्यूटन के सिद्धांतों का कोई मूल्य नहीं रहा है, यह सर्वविद्वानों को सुविदित है।

प्रश्न – सर्वज्ञवचन पर हमें श्रद्धा है, किन्तु उसका आचरण न करें, हृदय से रागद्वेष मुक्त रहें, फिर तो कोई दोष नहीं है न ?

उत्तर– श्रद्धा के अनुरूप आचरण न हो, तो इसमें असामर्थ्य हो सकता है। सामर्थ्य विद्यमान होने पर भी यदि आचरण न हो, तो वह श्रद्धा नहीं किन्तु दम्भ है।

प्रश्न– शास्त्र कहते हैं 'परिणामियं प्रमाणं' चित्त के अध्यवसाय ही प्रमाणभूत हैं, फिर आचार की आवश्यकता ही क्यों हैं ?

उत्तर– चित्त के अध्यवसायों का आचार के साथ घनिष्ट संबंध है। प्रभु के पास हाथ जोड़कर खड़े रहने में जो भक्तिभाव उल्लसित होते हैं, वो हाथ जोड़े बिना नहीं होते। स्त्री को देखने से जो चित्रविकृत्ति उत्पन्न होती है, वह बंद आँखों से नहीं होती। इस तरह आचारों का चित्तवृत्ति पर विशिष्ट प्रभाव होता है। अतः शुभाचार में प्रवृत्ति एवं अशुभ आचार से निवृत्ति अवश्य करना चाहिए।

प्रश्न– शुभ आचार के पालन बिना भी यदि मन पवित्र रहता हो, तो आचार पालन का आग्रह क्यों रखें ?

उत्तर– जिसका मन पवित्र हो वह तो सहज रूप से आचार पालन करता है। आचार की उपेक्षा या अवज्ञा ही अन्तःकरण के राग-द्वेष को आविष्कृत करती है। उदाहरण के तौर पर जिसे आहारसंज्ञा नहीं वह अनुकूलता होने पर भी रात्रि भोजन क्यों करे ? जिसे स्त्री पर राग नहीं वह ब्रह्मचर्य का पालन क्यों न करें। इस विषय में गंभीरता से पर्यालोचन करें और सत्य स्वयं स्फुरायमान होकर रहेगा।

◆◆◆

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

वय-विलय

बाल युवा अरु जरा वय, हा ! हा ! वेग विलोप ।
जिनशासन नवकार पर, साधक मन-तप सौंप ।।196।।

देवोपासना

नहीं करे सम्मान अब, अन्य देव संसार ।
अर्पित हो चरण में, जिनशासन नवकार ।।197।।

प्रशंसा

जिनशासन नवकार भज, सुख हित अतुल अनन्त ।
देहिक सुख विस्मृत करे, पुण्य पुरुष धीमन्त ।।198।।

लवमात्र

हे रसने ! तुझसे विनय करता बारम्बार ।
विस्मृम करे न मात्र लव, जिनशासन नवकार ।।199।।

अनिष्टरोधक

जिनशासन नवकार जप, किंचित नहीं अनिष्ट ।
जैसे मारूत वेग से, बादल शीघ्र विनिष्ट ।।200।।

अनुत्तर

अहो ! लोक में अनुत्तर, पूर्ण सुखों का कोष।
जिनशासन नवकार भज, सूरीश्वर उद्घोष ।।201।।

पीड़ा-क्रीड़ा

जन्म-मृत्यु के द्वन्द से, सब ही पीड़ित होय ।
जिनशासन नवकार भज, रहे न संकट कोय ।।202।।

जपदान-कृपा

सच्चे ज्ञानी मिल गए, दिया दान नवकार ।
अहो ! पुण्य प्रताप से, भजता श्री नवकार ।।203।।

शंका- शमन

जब तक तेरे उर रहा, संशय का समुदाय ।
तब तक अर्हत् साधना, निष्फल ही कहलाय ।।204।।

सुगम- सुमन

जिनशासन नवकार भज, मुक्त दुःख संसार ।
अहो ! सुगम कलिकाल में, सब से कहे पुकार ।।205।।

यम-पश्चाताप

जिनशासन नवकार भज, यम उर शोक विशाल ।
जायेंगे सब मोक्ष में, मेरा कौन हवाल ।।206।।

घण्टनाद

घण्टनाद सम भव्य उर, जपे सहज नवकार ।
रहे न क्षण भर भिन्न ही, अविरल ही झंकार ।।207।।

व्यर्थ-यत्न

नहीं भजा तू एक क्षण, जिनशासन भगवान ।
यत्न करे नर मूढ़ तू, काया कांच समान ।।208।।

धर्मप्रदाता

धर्म प्रदायक धरा पर, जिनशासन नवकार ।
भटक रहा भू-लोक में, हा ! हा ! मूढ़ लबार ।।209।।

प्रमादा चरण फल

जैसे गनिका तनय का, इज्जत कब संसार ।
जो न जपे नवकार को, वैसा हाल विचार ।।210।।

महाश्रय

ज्ञानी कहते जा रहे, करने भू-उपकार ।
लेना आश्रय शीघ्र ही, जिनशासन नवकार ।।211।।

आभ्यन्तर - जप

भिन्न हुआ मिथ्यात्व ही, जिनशासन उपकार ।
अहो ! भाव अविलम्ब जप, आभ्यन्तर नवकार ।।212।।

अशक्य- वर्णन

जिनशासन नवकार की, महिमा अमित अमाप ।
वह कैसे वर्णन करे, भजो भव्य निष्पाप ।।213।।

गतांक के आगे

जैन धर्म तथा मुस्लिम युगीन मालवा

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

सुल्तान होशंगशाह के युग में दरबार में कई घटनाएँ हुईं। होशंगशाह की पकड़ ढ़ीली थी अतएव दरबार में शहज़ादा उपधमन खाँ तथा शहज़ादा गजनीखां के अपने-अपने गुट बन गये। होशंगशाह ने गजनीखाँ के जिम्मे राजपाट कर दिया। 8 जुलाई 1935 को गजनीखाँ मालवा का सुल्तान बना। उसका नाम मोहम्मदशाह गौरी हुआ। महमूदखाँ को उसका संरक्षक बनाया गया। मेहमूद खाँ ने मोहम्मदशाह गौरी को जहर देकर समाप्त कर दिया। सुल्तान मोहम्मदशाह की मौत का दिन 8 अप्रेल 1936 माना जाता है। गजनी खाँ ने नांदिया ग्राम से धारणाशाह को माण्डव बुलाया।

उससे सम्राट ने तीन लाख रुपये लिये तथा दरबार में उच्च पद पर नियुक्त कर दिया। इससे अन्य अमीरों में असंतोष छा गया। धारणाशाह संघ यात्रा लेकर निकला। उसकी अनुपस्थिति का लाभ इन अमीरों ने उठाया। उनने बादशाह को उल्टा सीधा समझा कर धारणाशाह के खिलाफ कर दिया। सुल्तान ने भड़क कर उसे संघ यात्रा से ही गिरफ्तार कर बुलाया तथा जेल में डाल दिया। जैन समाज ने काफी प्रयास किया कि धारणाशाह किसी प्रकार रिहा हो जाये। दरबार में फिर घटनाक्रम बदला। मोहम्मद शाह को सत्ता से हटा कर मेहमूद खिलजी ने सिंहासन हथिया लिया। उस समय धारणाशाह माण्डव से चुपचाप गायब हो गया। सन् 1936 में मेहमूद खिलजी के माण्डव का सुल्तान बनते ही मालवा में खिलजीवंश का शासन प्रारंभ हो गया। मेहमूद खिलजी का रवैय्या जैन धर्म के प्रति बड़ा उदार साबित हुआ। उसने मण्डन के चार बेटों पूजा, जोगा , संग्रामसिंह तथा श्रीमद् को मांडल में स्थापित किया।

खिलजी के जमाने में जैन धर्म की जहोलजलाली खूब थी। पूरा मालवा जैन धर्म की गतिविधियों से भरपूर था। मुनि मेरूसुन्दरजी का विचरण भी मालवा में उस समय था। माण्डव के संघपति धनराज की प्रार्थना पर इनने शीलापदेश मालवा बालावबोध की रचना की थी मालवा में माण्डव तो जैन तीर्थ था ही लेकिन लालनपुर, लक्ष्मणी, तारापुर सिंघाना, नानपुर भी जैनतीर्थ माने जाते थे। सुल्तान मेहमूद खिलजी ने माण्डव के जैनचंद्र साधु को अपना एक मंत्री नियुक्त कर दिया था। इसका नाम चांदशाह प्रचलित हो गया था। (क्रमशः)

◆◆◆

पूजा के दस त्रिक (3)

(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.)

अवस्था त्रिक के तीन प्रकार :-

(1) पिंडस्थ अवस्था :- इस अवस्था में प्रभुजीकी जन्म अवस्था, राज्य अवस्था और छद्मस्थ मुनि अवस्था इनकी, स्नात्र, प्रक्षालण पूजा वगैरह करते समय भावना करनी यह अवस्था त्रिक का प्रथम भेद है।

(2) पदस्थ अवस्था - इस अवस्था में प्रभुजी केवल ज्ञान उत्पन्न होने के बाद समवसरण में बैठ कर बारह पर्षदा के आगे धर्मदेशना दे रहे हैं और अष्ट प्रतिहार्य युक्त हैं। ऐसी प्रभुजी को आंगी और अलंकारादि चढ़ाते समय सोचना यह अवस्थात्रिक का दूसरा भेद है।

(2) रूपातीत अवस्था- इस अवस्था में सिद्ध याने जब प्रभुजी पद्मासनस्थ या काउस्सग ध्यान में रहते हैं उस समय की अवस्था की भावना भानी चाहिए। यह अवस्था त्रिक का तीसरा भेद है। उक्त तीन अवस्था अलग-अलग योग्य अवसर में ध्यान में आवे तो पूजा रूप शुभ बनता है और ऐसा होने से चित्त प्रसन्न होता है चित्त की प्रसन्नता से क्रिया में अमृत जैसा आस्वादन मिलता है।

(6) त्रिदिशावर्जन त्रिक के तीन प्रकार - परम पूज्य परमात्मा श्री तीर्थंकर भगवान की पूजा में मन, वचन और काया की एकाग्रता लाने की आवश्यकता है। भाव पूजा में चैत्यवंदन करते समय आजु-बाजु की दो दिशा और पीछे की एक दिशा इस तरह तीनों दिशा में नजर करने का वर्जन त्याग करके प्रभुजी के सम्मुख ही नजर रखने में आये और चक्षु इन्द्रीय (आँख) को बराबर काबू में रखी जाय तो जीव पुण्यानुवंधी पुण्य का उपार्जन करता है।

(7) भूमि प्रमार्जन त्रिक के तीन प्रकार - चैत्यवंदन करने से पहले तीन खमासमण देते वक्त उत्तरासन से या तो अन्य रूमाल आदि से जयणा पूर्वक जीव रक्षा के लिये भूमि का तीन बार प्रमार्जन करना चाहिए।

(8) आलंबन त्रिक के तीन प्रकार :- **(1) वर्णालंबन** - चैत्यवंदनादि में शुद्ध उच्चार से सूत्र बोलना यह वर्णालंबन नामक प्रथम भेद है। **(2) अर्थालंबन** - सूत्रों के अर्थ की विचारणा करनी चाहिए। क्योंकि अर्थ की विचारणा करने से प्रभुभक्ति में आत्म जागृति होती है और आत्मजागृति होने से सच्चा आध्यात्मिक सुख प्राप्त हो सकता है यह अर्थालंबन नामक दूसरा भेद है। **(3) प्रतिमालंबन** - उक्त दोनों बातें बराबर ध्यान में रख कर के श्री जिनेश्वर प्रभु की प्रतिमाजी में साक्षात जिनेश्वर प्रभु ही है, परन्तु भिन्न नहीं है इस तरह बुद्धि रखनी यह प्रतिमालंबन रूप आलंबन त्रिक का तीसरा भेद है।

◆◆◆

वैराग्य सज्झाय (3)

(साध्वी प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

अब तू उसे प्रमाद में व्यर्थ न घुमा क्योंकि मनुष्य का आयुष्य दर्भ के अग्रभाग पर लटकता हुआ। ओस के बिन्दु के समान अल्प काल ठहरता हैं। इस प्रकार समझकर क्षण मात्र भी प्रमाद को मतकर-

एक बीजा पर आज चड़ावी जीवन खुदनु खोयु ।

मारवीना जेम हाथ घसीने, फोगट पाणी वलोयु ।।

चेतन रे !! थम नी पडशे लाल पछीत्यां न रक्षण हार ... छोड़ी जवानु...

हे चेतन !!! अनादिकाल के कुसंस्कारों के कारण आज तक तुने एक-दूसरे पर दोषारोपण कर अपना जीवन खोया हैं । योगसार में कहा है -

यथा ऽऽ हतानि भाण्डानि विनश्यन्ति परस्पंरा ।

तथा मत्सरिणोऽन्योन्यं हि दोष ग्रहणाद् धता ः ।।

अर्थात्- जैसे परस्पर टकराकर मिट्टि के बर्तन नष्ट हो जाते है। वैसे ही ईष्यालु व्यक्ति भी मैं ही सच्चा शेष झूठे ऐसी प्ररूपकार एक-दूसरे पर दोषा रोपकर नष्ट हो जाते है। अपना पूरा जीवन इसी में पूर्ण कर दुर्गतियों में पहुँच जाते हैं।

मारवी ना जेम हाथ घसीने, फोगट पाणी वलोयु ।

अर्थात्- जिस प्रकार मधुमक्खी मध इकट्ठा करती हैं। लेकिन उसको अन्य लोग ले जाते हैं और आनन्द से खाते हैं। बैचारी मधुमक्खी हाथ मलकर रह जाती हैं, न खाती है न पीती है। एक कहावत हैं-

'मधुमक्खी मद्य भेलु की धुन स्वादु न पीधु लोटेरो लुंटी लीधु'

जिस प्रकार पानी को कितना ही बिलोओ उसमें से मक्खन नहीं निकलता हैं। उसी प्रकार मनुष्य जड़ सामग्री में भ्रम से सुख मानकर आसक्ति करता है। जड़ पदार्थों का संग्रह करता हैं लेकिन जिस प्रकार बाज पक्षी तितर को सहसा पकड़ता है वैसी ही आयुष्य खत्म होने पर यमराज जीवितव्य को हरण कर लेगा तब मृत्यु से बचाने में हमारी कोई भी रक्षा करने में समर्थ नहीं होंगे...

शान्त सुधारस ग्रंथ में बताते हैं-

'विद्या मंत्र महौषधि सेवां, सृजतु वशीकृत- देवाम् ।

रसतु रसायन गुपचयकरणं, तदपि न मुच्यति मरणम् ।

अर्थात्– संसार में मनुष्य चाहे देवताओं को भी अपने वश करने वाली विद्या, मंत्र, यंत्र, तत्र और ओषधियों का सेवन करे, चाहे शरीर में बल और बुद्धि को बढ़ाने वाले रसायनों का भक्षण करे तो भी काल तो उसे अपना ग्रास बना ही लेता है।

अतः हे जीव !!! तु भी अनादि मुनि जैसे अशरण भावना का चिंतनकर संसार से वैराग्य भाव लाओ, संसार के राग से छुटकारा पाओ...

'सूरि राजेन्द्र' नी यशो पताका, करके आ जगमाय ....(2)
सूरि यतिन्द्र का पुण्य प्रतापे, सत्य सदा समझाय ..... (2)
चेतन रे !!! जयन्तसेन कहे आ दुनिया मां जागो तो जयकार ...
छोड़ी जवानु..

'सूरि राजेन्द्र' के दो अर्थ निकलते हैं- (1) सूरि+राज+इन्द्र= तीर्थकर ! सूरि = आचार्य, राज = गणधर और इन्द्र अर्थात् आचार्य के राजा गणधर हैं और गणधर के इन्द्र तीर्थंकर होते हैं। दूसरा अर्थ अभिधान राजेन्द्र कोष के रचयिता दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज साहेब ।

वर्तमान काल में अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी भगवान का शासन चल रहा हैं। चंडकौशिक को तारने वाले एक रात्रि में संगम देव के द्वारा दिए गए 20 उपसर्गों को समभाव से सहन करने वाले, अनार्यर्त देश में जाकर कर्मों को खपाने वाले ऐसे भी महावीर स्वामी की यश रूपी ध्वजा इस पूरे जगत में लहरा रही है।

'सूरि यतीन्द्र' के भी दो अर्थ निकलते हैं- आचार्य जयंतसेन म.सा. के गुरु यतीन्द्रसूरी म.सा. और 2. सूरि यतीन्द्र यानि गणधर - गणधर भगवंतों ने वीतरागवाणी को शास्त्रों में गुंथी। उन गणधर भगवंतों के द्वारा लिखवाए गए शास्त्रों को पढ़कर गुरु भगवंतों से मुखार विंद से सुनकर हमें सदा के लिए सत्य समझ में आ जाए, संसार के आसार स्वरूप का बोध हो जाए ऐसा गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी फरमाते हैं।

वैराग्य शतक में बताते हैं-

संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोही खलु पेच्च दुल्लह।
नो हु उवणमंति राइओ, नो सुलहं पुणरवि जीवियं ।।

अर्थात्– हे भव्यजीव ! तुम बोध पाओ, किस कारण से बोध को नहीं पाते हो ?? यहाँ धर्म नहीं करोगे तो परभव में भी सम्यक्त्व पाना दुर्लभ ही होगा। जिस प्रकार बीते हुए रात दिन वापिस नहीं लौटते हैं वैसे ही बीता हुआ मनुष्य भव पुनः नहीं मिलता है। अतः हे चेतन !!! इस स्वार्थी दुनिया का चिंतन करके जीव के स्वरूप का चिंतन करके, मोह-माया का त्याग करके तुम जाग जाओ, बोध को प्राप्त करो और इस

असार संसार का त्याग कर निर्दोष, आनंदमय, सुखकारी ऐसा संयम जीवन स्वीकार करो तो तुम्हारी जयकार हैं अन्यथा अभी भी नहीं जागे तो...

वैराग्य शतक में कहा है-

फ्ते वि तंमि रे जीव ! कुणसि पमायं तुमं तयं चेव ।
जेणं भवंध कुवे, पुणोवि पडिओ दुहं लहसि ।।

अर्थात्- हे मुर्ख मनुष्य !!! महा मुल्यवान ऐसा जिन धर्म को प्राप्त करके भी तु जो अभी भी प्रमाद करता हैं तो उसी प्रमाद से फिर से इस भवरूपी अन्ध कुप में गिरकर भयंकर दुःखों को पावेगा।

84 लाख योनियों में भ्रमण करता रहेगा। अतः हे जीव !!! तु जाग जा... आत्मभाव में स्थिर हो जा... अजरामर पद को प्राप्त करके का पुरुषार्थ शुरू कर लो...

इस प्रकार पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वर ने वैराग्य के संदर्भ में अनेकों सज्झाए की रचनाएँ करके ससार के असार स्वरूप को समझाकर हम अज्ञानी जीवों पर महान किया है। ऐसे हमारे महान उपकारी गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चरणों में अनन्तशः वंदना ।

◆◆◆

सिद्धगिरी की महिमा

अति मुक्तक केवली भगवान ने नारद ऋषि को इसकी महिमा ऐसी कही :-

1. किसी तीर्थ पर उग्रतपस्या या ब्रह्मचर्य से जो फल मिलता है वो फल गिरिराज पर रहने पर मिलता है।
2. गिरिराज ऊपर एक उपवास करने से एक करोड़ मनुष्य को भोजन कराने का लाभ मिलता है।
3. तीन लोक के तीर्थ के दर्शन, सिद्धगिरीराज के स्पर्श मात्र से हो जाते हैं।
4. जिस स्थान पर केवलज्ञानी साधुओं ने निर्वाण पाया उन स्थान को गिरिराज की वंदना करने से वंदना हो जाती है।
5. अष्टापद, सम्मेतशिखर, पावापुरी, गिरनार, चंपापुरी वगैरह तीर्थ के दर्शन वंदन करने से शत गुण फल गिरिराज के दर्शन वंदन मिलता है।
6. यहाँ पूजा करने से सौ गुणा, प्रतिमा स्थापना करने से हजार गुणा व तीर्थ की रक्षा करने से अनंत गुणा फल प्राप्त होता है.
7. जो यहाँ प्रतिमा भराता है वो अवश्य चक्रवर्ती पद पाता है।
8. यहाँ एक तप का सौ गुणा फल मिलता है व अप्रमत्त भाव एवं प्रभु-आज्ञा पूर्वक छट्ठ करके सात यात्रा करें, वह तीसरे भाव मोक्ष पाता है।

पाँचवा स्थान मोक्ष है ? (2)

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

मोक्ष का स्वरूप नकारात्मक और विधेयात्मक दोनों प्रकार से समझाया गया है। नकारात्मक स्वरूप दो पासे से विचारना योग्य है। (1) मोक्ष में किसी भी प्रकार का दुख नहीं है। (2) मोक्ष में पौद्‌गलिक सुख और सुख के साधन नहीं है।

जन्म का दुख नहीं,	इन्द्रिया नहीं,
मरण का दुख नहीं,	देह नहीं ।
बुढ़ापे का दुःख नहीं	मन नहीं
रोग का दुःख नहीं	श्रेष्ठ रस नहीं
आधि, व्याधि, उपाधि का दुख नहीं	श्रेष्ठ ग्रंथ नहीं
वेदना का दुःख नहीं	श्रेष्ठ स्पर्श नहीं
भय का दुःख नहीं	भोग सामग्रियों का संपूर्ण अभाव है।

मोक्ष में दुःख के अभाव वाला नकारात्मक पासा जीवमात्र को रूचिकर लगता है। समझ में आ जाता है। किन्तु सुख की सामग्री के अभाव वाला पासा जीवों के लिए अरूचिकर है। यदि जीव को भौतिक सुख के अभाववाला सुख रूचिकर लग जाता है तो वह मोक्ष पाने की योग्यता रखता है।

मोक्ष के विधेयात्मक स्वरूप का वर्णन :- (1) अगुरुलधु- अर्थात् समानता भेदभाव से रहित पना मोक्ष में आत्मा का यह मूलभूत गुण है। मनुष्य समाज में भेदभाव अपरिहार्य है। कर्मजन्य भेदभाव कभी मिट सकता नहीं, जबकि मुक्ति में ज्ञान, गुणों, शक्ति आदि सभी दृष्टि से जीवों में समानता है।

गौत्र कर्म के नाश होने से ऊँच-निचपने का भेदभाव नाश हो जाने से आत्मा का अगुरु लघु गुण प्रकट होता है।

(2) अमूर्तपना- सिद्ध हमेशा अमूर्त्त दशा में होते है। मूर्तपणा होने के कारण ही नुकसान है। अपने सभी संवेदन पुद्‌गल पर आधारित हैं। जबकि पुद्‌गल का कोई भी आघात-प्रत्याघात अमूर्त ऐसी आत्मा को नहीं लगता।

आत्मा एक गति में से दूसरी गति में जाता है, चाहे जिसे निकल जाता है। मोक्ष में कितने भी जीव जाए परन्तु जगह कभी खत्म नहीं होती वहाँ एक स्थान पर एक स्थान अनंत

जीव रह सकते है। यह सब आत्मा का अमूर्तअवस्था के कारण ही सिद्ध जीव एक-दूसरे में समा जाते है। फिर भी व्यक्तित्व स्वतंत्र रहता है। गुणों का के रेदन भिन्न-भिन्न रहता है।

(3) अजरामर पन– संसार का संपूर्ण स्वरूप अशाश्वत है, अमित्य है। अजर और अमर तो सिद्ध ही है। आयु कर्म के क्षय से यह अवस्था प्राप्त होती है। अजर-अमरपन मोक्ष में ही है।

(4) अव्याबाधपन– वेदनीय कर्म के क्षय से आत्मा का अव्याबाध सुख प्राप्त होता है। संसार का सुख लंबे समय तक भोगने पर जीव थक जाता है, जबकि मोक्ष का सुख अनन्तकाल तक भोगने पर भी जीव हैरान नहीं होता, अरूचि नहीं होती.

इस प्रकार आत्मा में अनन्तज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र , अनंतविवेक, अनंतदान, अनंतलाभ, अनंतभोग, अनंतउपभोग, अनंतवीर्य है, अनंतगुण है, अनंतशक्ति है जो कि मुक्त अवस्था में प्रकट होती है।

कोई पूछे कि मोक्ष का सुख किसके समान है बताइये ? तो ज्ञानी भगवन्त कहते है कि इस संसार में कोई भी सुख ऐसा नहीं है जिसके साथ मोक्ष सुख की तुलना कर सके। संसार में प्राप्त सभी प्रकार के सुखों से यह बढ़कर विशिष्ट कोटिका सुख मोक्ष में है।

मोक्ष आकाश कुसुम की तरह नहीं है बल्कि प्रमाणों से सिद्ध है।

प्रत्यक्ष प्रमाण – सर्वज्ञ संपूर्णज्ञानी भगवंत मोक्ष को प्रत्यक्ष निहाल रहे हैं, इसलिए मोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है।

अनुमान प्रमाण – अपूर्ण ज्ञानवाले जीवों को मोक्ष प्रत्यक्ष सिद्ध नहीं होने से युक्ति से अनुमान से सिद्ध हो सकता है। संसारी जीवों में दिखती हुई सुख की तरतमता ही मोक्ष को सिद्ध करती हैं ।संसारी जीवों में सुख की मात्रा कम अधिक देखकर लगता है कि सुख की परकाष्ठा अवश्य होनी चाहिये। योगी आत्मा के पास भोग के साधन नहीं होने पर भी वे भोगी जीवों की अपेक्षा अधिक सुख को अनुभव करते हैं। किन्तु उनमें भी सुख की तरतमता होती है। समान सुख, आत्मसुख की पराकाष्ठा ही मोक्ष है।

जीवों को मोक्ष की इच्छा होती है इस कारण से भी मोक्ष की सिद्धि होती है। जो पदार्थ हीन न हो तो उसकी इच्छा ही न हो जैसे आकाश, कुसुम। किन्तु मोक्ष की इच्छा होती है इसलिये मोक्ष है।

आगम प्रमाण– आप्त प्रणित आगमों में मोक्ष का विधान होने से आगम प्रमाण से भी मोक्ष सिद्ध है। इस प्रकार सभी प्रमाणों से भी मोक्ष सिद्ध है।

◆◆◆

पुण्य सम्राट के हृदय से काव्य प्रस्फुरण

(अशोक श्री श्रीमाल द्वारा)

सिद्धाचलजी की पावन पुण्यभूमि जहाँ कण-कण में अनंत सिद्ध आत्माओं का वास हो, दादा आदेश्वरजी के दर्शन की मन में लगन लगी हो और ऐसे में पूज्य राष्ट्रसंत श्री का सामीप्य हो तो भला ऐसे क्षणों को कौन छोड़ना चाहेगा। काश ये क्षण शाश्वत स्थिर हो जाते।

पूज्य श्री की निश्रा में परिषद और शाश्वत धर्म के प्रयोजन से पालीताना तीर्थ पर अ.भा. जैन संपादक गौष्ठि में प्रतिनिधि के रूप में जाने का हुआ। इसी अवसर पर पूज्य गुरुदेव के साथ सुबह पर्वतराज पर चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, पूज्य नित्यानंदजी म.सा. व पूज्य सिद्धारत्न विजयजी भी साथ थे। तलेटी के चैत्यवंदन के पश्चात् जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते गए प्रकृति के मोहक दृश्यों का आगमन आरम्भ हो गया। मन में दादा के दर्शन की उत्कंठा, ठंडी-ठंडी सुमधुर संगीतमयी पवन पर्वत मालाओं को गुंजायमान कर रही है, वृक्ष श्रृंखलाएँ झूम रहीं हैं, आदित्यराज भी शाश्वत तीर्थ को अपनी रश्मियाँ के माध्यम से वन्दन व अभिषेक को आतुर हो रहे। नीचे पालीताना शहर का दृश्य भी लुभावना दृष्टीगोचर हो रहा है कुछ-कुछ अंधेरा तथा शहर की स्ट्रीट लाइट व भवनों की लाइट कुछ इस प्रकार दिखाई दे रही मानों कि आसमान चाँद सितारों के सौर मंडल परिवार के साथ धरती पर आ गया हो, ऐसे सुंदर दृश्यों को देखकर गुरुदेव का कवि हृदय बाहर आने को आतुर है, गुरुवर प्रकृति के कुशल चितेरे हैं, पद विहार के दौरान जब भी एकान्त, शांत, प्रफुल्लित वातावरण मिल जाता तो आपका कवित्व झरने की तरह बह निकलता है। चिंतन का प्रवाह चालू हो जाता है। प्रकृति के हर आयाम को मानव जीवन के साथ जोड़कर मानव जाति को पाठ पढ़ाने का गुरुवर का अच्छा तरीका है। गुरुदेव की आँखें प्रकृति के दृश्यों को निहार रहीं थीं और मैं अपनी जिज्ञासानुसार गुरुदेव से कह रहा हूँ-

गुरुदेव कितना पावन दृश्य है ऊपर आसमान नीचे धरती और दोनों पर सौर मंडल का राज प्रतीत होता है, पथिक भी बहुत सारे अरमान लिए दादा के दरबार की ओर जा रहे हैं। आपका कवि हृदय क्या कह रहा है ? बस इतना कहना था कि गुरुदेव का हृदय प्रस्फुटित हो गया बोले सुनो, अशोकजी -

गीत

(अशोक श्री श्रीमाल द्वारा)

लो आसमान नीचे आ गया,
काली घटाओं में, सितारों का
साम्राज्य छा गया ।

लुक–छुप कर सूर्य अपनी छटा दिखा रहा है,
अंधेरा जा रहा है, प्रकाश आ रहा है।

लक्ष्य को पाने, पथिक जा रहे हैं,
दिल के अरमान मन को लुभा रहे हैं।

दादा के दर्शन की, लगन मन में लगी है
दिल के मंदिर में श्रद्धा की ज्योति जगी है।

प्रभु के दर्शन के अरमान हो पूरे
हमारे भाव कोई नहीं रहें अधूरे ।

चलते ही चलते कर लिया दीदार,
बड़ा ही आलौकिक है, दादा का दरबार ।

नमन प्रभु के चरणों में तुम्हारे,
प्रभु आन बसो दिल में हमारे

सम व्याप्त हो, जीवन में, प्रभु आज्ञा तुम्हारी,
प्रतिक्षण यही, याचना है हमारी ।

'नित्य सिद्ध' हो यह भावना रहे सदा 'अशोक'
दादा के दरबार में, 'जयंत' देता रहे नित धोक ।

◆◆◆

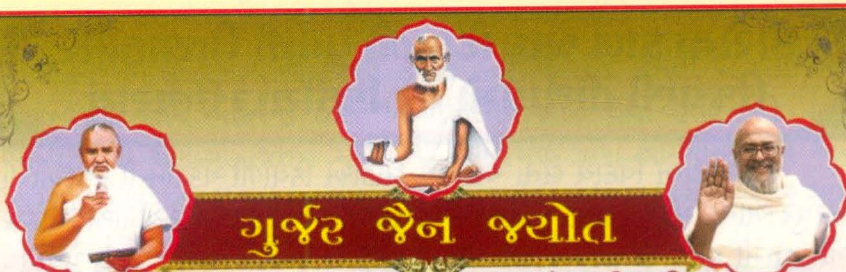

ગુર્જર જૈન જ્યોત
(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ગગનવિહાર સોસાયટી, બી-૧૭૧, નવમા માળે,
ખાનપુર-અમદાવાદ-૦૧. મો. : ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અસંવૃત્તોનો મોહ

'મોહં જતિ નરા અસંવુડા ।'

(અસંવૃત મનુષ્ય મોહિત થઈ જાય છે.)

જે અસંયમી છે - ઇન્દ્રિયોને જે પોતાને વશ નથી રાખી શકતો - મન ઉપર જેનો બિલકુલ અધિકાર જ નથી, એવા લોકો વિષયો તરફ તરત આકર્ષાઇ જાય છે.

વિષયો તરફનું તેમનું આકર્ષણ તેમના કર્તવ્ય પાલનમાં આડે આવે છે - એમની ઉન્નતિમાં વિઘ્નો લાવે છે - એમના ધર્માચરણમાં અડચણો પેદા કરે છે, પરંતુ તેઓ તેને છોડી દેવાનું સાહસ કરી શકતા નથી.

સંવર વિનાની (અસંવૃત) વ્યક્તિ કર્મોનું બંધન બાંધ્યા કરે છે અને એને કારણે સંસારમાં ભટક્યા કરે છે. તેમનો ઉદ્ધાર ત્યાં સુધી નથી થતો જ્યાં સુધી તેનો સંવરનું મહત્વ સમજીને પોતાની જાતને સંવૃત નથી બનાવી લેતા. સંવૃત્ત થયા પછી વ્યક્તિ વિષયોના ક્ષણિક સુખ તરફ આકર્ષિત નથી થતી. આંતરિક સુખ આગળ બાહ્ય સુખ તેમને તદ્દન તુચ્છ લાગે છે. અસંવૃત્ત વ્યક્તિ જ ઇન્દ્રિયોના વિષયોને ભાળીને તેનાથી એકદમ મોહ પામે છે.

- સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર ૧/૨/૧/૨૦

કોરોના કાળ બાદ દિવાળી પર્વની ઉત્સાહભેર ઉજવણી તીર્થધામો પર કિડીયારૂં ઉભરાયું

કોરોનાએ વિદાય લેતાં આ વર્ષે લોકોએ દિવાળી વેકેશનની રજાઓમાં ભરપુર આનંદ માણ્યો હતો. ભારતભરના ધાર્મિક અને પ્રવાસન સ્થળોએ ચિક્કાર ભીડ જામી હતી. દિવાળીના તહેવારોમાં લોકોએ દેવદર્શન સાથે સાથે પર્વતીય પ્રકૃત્તિનો નજારો માણવા નક્કી કર્યું હતું. જેથી માઉન્ટ આબુ, ગિરનાર, સાપુતારા, અંબાજી, દ્વારકા, પાવાગઢ, ડાકોર, સોમનાથ સહિતના ધાર્મિક સ્થળો - હિલ સ્ટેશન ઉપરાંત દિવ-દમણ, ગોવા, ડુમ્મસ બીચ પર જાણે કિડીયારૂં ઉભરાયું હતું. થરાદવાસીઓ માટે તો શ્રી મોહન ખેડાતીર્થ એક મેળાનું સ્થળ બની ગયું હતું. થરાદવાસી સહપરિવારોએ એક દિવસ - બે દિવસ કે ત્રણ દિવસ સુધી શ્રી મોહનખેડા તીર્થમાં સ્થિરતા કરી શ્રી આદિનાથદાદા આદિ જિનબિંબો તથા તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રી મદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ગુરૂબિંબોના દર્શન-વંદન, પૂજા અને ભરપુર ભક્તિ કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. સાથે સાથે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા બેસતા વર્ષે માંગલિક તથા શ્રીગુરૂ ગૌતમસ્વામી રાસ સાંભળવા કેટલાય પરિવારો રાજસ્થાનના જાલોરનગરે પહોંચી ગયા હતા. પાટણનગરમાં પણ ભાવુકભક્તો ઉમટી પડ્યા હતા. જ્યારે થરાદનગરની વાત તો તદ્દન નિરાળી છે. વાઘબારસથી બેસતા વર્ષના પ્રથમ દિવસ સુધી થરાદવાસી પરિવારો થરાદનગરે આવી રોકાયા હતા.

થરાદનગરની દરેક શેરીઓમાં થરાદવાસી જૈન પરિવારોના ઘર ખુલતાં થરાદનગર હર્યુભર્યુ બની ગયું હતું. અને જૈન નગરી જેવું વાતાવરણ સર્જાઇ ગયું હતું. ધનતેરસની સંધ્યાથી મોડી રાત્રિ સુધી સંઘવી-દેસાઇ પરિવારના કુળદેવી શ્રી જયાદેવી માતાજીના મંદિરમાં ચિક્કાર મેદની ઉભરાઇ હતી અને શ્રી માતાજીના દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. પરોઢે શ્રી સંઘવી-દેસાઇ પરિવારજનોએ તેમના પાટ મુજબ પડલી જારી પરિવારના સ્વાસ્થ્ય અને રક્ષા માટે પ્રાર્થના કરી હતી. દિવાળીની સાંજે શ્રી પ્રભુ મહાવીરના જિનાલય (મોટા દેરાસર)ને જાણે દુલ્હનની જેમ શણાગારાયું હતું. રંગબેરંગી લાઇટો, ફુલો અને હજ્જારો દિવડાની રોનકે ભક્તોમાં અદકેરૂ આકર્ષણ જમાવ્યું હતું.

પેટ ભરીને નાચી-ગાઇ અને ભક્તિની રમઝટ મચાવી પ્રભુ મહાવીર

નિર્વાણની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઇ હતી. બેસતા વર્ષની સુપ્રભાતે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિરનો હોલ ખીચોખીચ ભરાઇ ગયો હતો અને પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા શ્રી ગૌતમરાસ અને માંગલિકનું શ્રવણ કરી સહુ ભાવવિભોર બની ગયા હતા અને સહુએ પરસ્પર સાલ મુબારકની આપ-લે કરી સ્નેહ વરસાવ્યો હતો.

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની નિશ્રામાં પિતાંબર વિજેતા આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૧૩૮માં જન્મોત્સવ પ્રસંગે જાલોર નગરે ગુણાનુવાદ કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિશ્રી શ્રીમદ્‌વિજયનિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ જાલોરના તત્વાધાનમાં બડાન્યાતી નોહરા જાલોર ખાતે ત્રિસ્તુતિક પરંપરાના ચતુર્થ પટ્ટધર પૂજ્ય પિતાંબર વિજેતા આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ૧૩૮મા જન્મોત્સવ પર ગુણાનુવાદ સભાનું આયોજન કરાયું હતું.

ગુણાનુવાદ સભામાં પૂજ્યશ્રીએ મંગળાચરણ કરવા સાથે જણાવ્યું હતું કે, ગુણોનો અનુવાદ એમનો કરાય છે જે વાદ-વિવાદોથી દૂર રહી માત્ર ગુણોને જ ધારણ કરે છે. ગુરૂ ગુણધારક અને અવગુણ નિવારક હોય છે. દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સુશિષ્ય તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ગુરૂ પિતાંબર વિજેતા આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.વિલક્ષણ પ્રતિભા સંપન્ન આચાર્ય હતા. જેમને પોતાના જપ-તપ અને આરાધના-સાધનાના બળથી જિનશાનની અભૂતપૂર્વ પ્રભાવના કરી હતી.

ગુણાનુવાદ કરવા સાથે મુનિરાજશ્રી ડો. સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા.એ કહ્યું હતું કે, સદ્‌ગુરૂ એ જ હોય છે, જેમાં શિષ્યના કલ્યાણની ચિંતા રહેતી હોય છે. શિષ્ય સાચો હોય તો તેને ગુરૂ શોધવાની જરૂર નથી રહેતી. ગુરૂ તેને સ્વતઃ મળી જાય છે. લોકો ગુરૂ શોધે છે. પણ સદ્‌ગુરૂ તો સ્વયં શિષ્યને શોધે છે. આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ને પણ દીક્ષા પૂર્વે એક સદ્‌ગુરૂની તલાશ

હતી અને તેમને સદ્ગુરૂ રૂપમાં ત્યાગી-વૈરાગી-તપસ્વી-જપસ્વી અને યશસ્વી આચાર્યશ્રી રાજેન્દ્રસૂરિજી મળ્યા.

રાજસ્થાનના ધોલપુરમાં જન્મેલ રામરત્ન એ સદ્ગુરૂને તપાસ્યા તો સદ્ગુરૂએ સુશિષ્યને તપાસ્યા અને શિષ્યને પણ સદ્ગુરૂ બનાવી દીધા. મુનિરાજશ્રી સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા.ને વર્ધમાન તપની ૪૩મી ઓળી ચાલી રહી તે તે જ્ઞાનપંચમીના સંપૂર્ણ થઈ હતી. મુનિરાજશ્રી જયસેનવિજયજી મ.સા.એ વીસસ્થાનક ઓળીના ૧૦ છઠ્ઠ એટલે કે ૨૦ ઉપવાસ કરી પારણું કર્યું હતું. આ અવસરે શ્રી સંઘના પદાધિકારીઓ અને ગણમાન્ય સહિત ભાવુક ભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

શ્રીમદ્ યતિન્દ્ર - જયંત જ્ઞાનપીઠ પરીક્ષા કેન્દ્રનો શુભારંભ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષથી જાલોરનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશીર્વાદથી અને જ્ઞાનપીઠના અધિષ્ઠાતા શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા તથા યોજનાના લાભાર્થી પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂના માર્ગદર્શન હેઠળ જાલોર નગર ખાતે શ્રીમદ્ યતિન્દ્ર - જયંત જ્ઞાનપીઠ પરીક્ષા કેન્દ્રનો શુભારંભ કરાયો હતો.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોનું ચાતુર્માસ પરિવર્તન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને પ્રથમ શિષ્ય ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોએ સન ૨૦૨૧ના વર્ષનું જાલોરનગરે યશસ્વી અવિસ્મરણીય અને ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી કારતક સુદ ૧૫ તા. ૧૯-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૫.૦૦ કલાકે શ્રી ઓસવાલ ન્યાતિ નોહરા ઉપાશ્રયથી પ્રસ્થાન કરી શ્રી સ્વર્ણગિરી તીર્થની યાત્રા કરી ચાતુર્માસ પરિવર્તન કર્યું હતું. યાત્રા સંપન્ન કરી શ્રી ત્રિસ્તુતિક ધર્મશાળામાં પધરામણી કરી હતી. (ફોલાવાસ ખાતે બિરાજમાન દેવાધિદેવ શ્રી વાસુપૂજ્ય સ્વામી ભગવાનની પ્રતિમા પર પૂજ્યશ્રીએ વાસક્ષેપ કર્યો હતો.) જ્યાં ૧૦-૩૦ કલાકે ધર્મ સભાનું આયોજન કરાયું હતું અને પૂજ્યશ્રીએ વ્યાખ્યાન ફરમાવ્યું હતું. વ્યાખ્યાન બાદ

જાલોર શ્રી સંઘનું શ્રી ઓસવાલ ન્યાતિ નોહરા ખાતે સ્વામી વાત્સલ્ય યોજાયું હતું. પૂજ્યશ્રીએ સોલંકી પરિવાર દ્વારા નવનિર્મિત શ્રી જયંતધામનું અવલોકન કરી શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ જિનાલય ખાતે સ્થિરતા કરી હતી. ચાર ચાર માસના ધર્મ સહવાસમાં જોડાયેલા જાલોર શ્રી સંઘના ભક્તો માટે પૂજ્યશ્રીની વિદાય વસમી લાગી હતી. સહુ કોઈએ ભાવવિભોર બની પૂજ્યશ્રીને પુનઃ જાલોર નગરે પધારવા પ્રાર્થના સાથે વિનંતી કરી હતી. તા. ૨૦-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ પૂજ્યશ્રી પરિવારે અલાસન શ્રીસંઘમાં વાજતે-ગાજતે પધરામણી કરી હતી. ત્યારબાદ સાયલા, ચોરાઉ શ્રીસંઘમાં સ્થિરતા કરી શ્રી ભાંડવપુર તીર્થે ખાતે ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે તા. ૨૨-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ પધરામણી કરી હતી. ત્યાં સ્થિરતા કરી ગુરૂજન્મ ભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે ઉપધાન કરાવવા અને નિશ્રા પ્રદાન કરવા વિહાર કર્યો હતો.

શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થથી શ્રી ચંદ્રલોક જૈન તીર્થનાં ચૈત્યપરી પાટી તથા કાર્તિકી પુનમ પ્રસંગે બે દિવસીય કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક, સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આદિ શ્રમણ શ્રમણી ભગવંતોની પાવનકારી નિશ્રામાં સાંચોર નિવાસી શા. દુદાજી ચંદાજી કટારીયા સંઘવી પરિવારના લાભાર્થે શ્રી મહાવીર જૈન શ્વેતાંબર પેઢી ટ્રસ્ટ, શ્રી વર્ધમાન રાજેન્દ્ર જૈન ભાગ્યોદય ટ્રસ્ટ સંઘ ભાંડવપુર તીર્થના તત્વાધાનમાં શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થથી શ્રી ચંદ્રલોક જૈન તીર્થનો ચૈત્યપરી પાટી તથા કાર્તિકી પુનમ પ્રસંગે બે દિવસીય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. સંવત ૨૦૭૮ના કારતક સુદ-૧૪ ને ગુરૂવાર તા. ૧૮-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૮-૩૦ કલાકે શોભાયાત્રા સહિત પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાની નિશ્રામાં વાજતે-ગાજતે શ્રી ચંદ્રલોક જૈન તીર્થે જવા ચૈત્યપરી પાટીએ પ્રસ્થાન કર્યું હતું. દિવસભર ધર્મમય કાર્યો સંપન્ન થયા હતા. સાંજે ૭.૦૦ કલાકે શ્રીકુમારપાલ મહારાજની ભવ્ય આરતી કરાઈ હતી. સંવત ૨૦૭૮ના કારતક સુદ ૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૮ કલાકે શ્રી શત્રુંજ્ય પટ્ટદર્શન અને નવકારશી ૧૦ કલાકે પ્રવચન અને ચાતુર્માસ લાભાર્થી પરિવારનું પેઢી તરફથી બહુમાન કરાયું હતું. બપોરે સંઘસ્વામી વાત્સલ્ય અને સાંજે ૪ કલાકે ચાતુર્માસ પરિવર્તન માટે વિહાર કર્યો હતો.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણનગરે જ્ઞાનોત્સવનો અદ્‌ભુત કાર્યક્રમ સંપન્ન
ગજરાજ પર સિદ્ધહેમ ગ્રંથની ઐતિહાસિક શોભાયાત્રા

સિદ્ધહેમ શબ્દાનુશાસન સહિત ૪૫ ગ્રંથોનું ચાંદીની મુદ્રાઓથી પ્રથમવાર કરાયું પૂજન

મુખ્ય મહેમાન શ્રી વિજયભાઈ રૂપાણી (પૂર્વ મુખ્યમંત્રી, ગુજરાત) મુખ્ય અતિથિ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા (રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ)

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા, યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા તથા શ્રમણીવૃંદ કુલ આદિઠાણા ૩૪ની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના ઉપક્રમે પાટણ યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો છેલ્લા ત્રણ વર્ષથી પાટણનગરે ધાર્મિક અધ્યયન કરી રહ્યા હતા. જે પરિપૂર્ણ થતાં તેની અનુમોદનાર્થે અધ્યયન કરાયેલા ગ્રંથોના જ્ઞાનપૂજન અને જ્ઞાનદાતા પંડિતવર્યોના બહુમાન પ્રસંગે તા. ૧૩ નવેમ્બર-૨૧ અને તા. ૧૪-નવેમ્બર-૨૧ બે દિવસીય જ્ઞાનોત્સવનો અદ્‌ભુત કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

પ્રથમ દિવસ : સવારે પ્રવચન અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા જ્ઞાનદાતા પંડિતજી અને વૈયાવચ્ચ કરવાવાળા ભક્તોનું પાટણ પોલીસ અધિક્ષક શ્રી અજયભાઈ તથા અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂએ શ્રી રમણિકભાઈ, શ્રી પ્રવિણભાઈ, શ્રી કૃણાલભાઈ, શ્રી કૌશલભાઈ, શ્રી વિજયભાઈ, શ્રી રશ્મિભાઈ, શ્રી ઉમેશભાઈ, શ્રી રાકેશભાઈ, શ્રી જયભાઈ, શ્રી મેહુલભાઈ, કુ. ભવ્યા મહેતા વિગેરેનું બહુમાન કર્યું હતું. બપોરે શ્રી પાર્શ્વનાથ પંચકલ્યાણક પૂજા ભણાવાઈ હતી. સાંજે પરમાત્માની ભક્તિ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. થરાદ નિવાસી માતુશ્રી વીરાબેન વીરચંદભાઈની સ્મૃતિમાં વીરવાડીયા બાબુલાલ વીરચંદભાઈ પરિવાર, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ), શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નેનાવા, રેવતડા નિવાસી મુનિલાજી મંગલચંદજી હીરાણી પરિવાર, સાયલા નિવાસી પારસમલજી હસ્તમલજી ભંડારી પરિવારે આ જ્ઞાનોત્સવનો મુખ્ય લાભ લીધો હતો.

દ્વિતીય દિવસ : તા. ૧૪-૧૧-૨૦૨૧ને રવિવારના રોજ પાટણનગર અને જૈન શાસનમાં એક નવા ઈતિહાસનું સર્જન થયું હતું. જેમાં પાટણનું ગૌરવ

એવા શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય સર્જિત સિદ્ધહેમ શબ્દાનુશાસન વ્યાકરણ ગ્રંથ સહિત ૪૫ ગ્રંથોનું ચાંદીની મુદ્રાથી પ્રથમવાર પૂજન કરાયું હતું. જે સિદ્ધહેમ ગ્રંથની ગજરાજની અંબાડી પર પાટણના રાજવી સિદ્ધરાજ જયસિંહ દ્વારા શોભાયાત્રા કાઢવામાં આવી હતી. ત્યારબાદ રવિવારના રોજ ફરીથી ગજરાજ પર શોભાયાત્રા કાઢવામાં આવી હતી. શહેરના બગવાડા દરવાજા ખાતેથી ગજરાજ ઉપર સિદ્ધહેમ ગ્રંથની શોભાયાત્રા ઉપાશ્રય સુધી કાઢવામાં આવી હતી. પંચાસરા જૈન દેરાસર પાસે આવેલ સિદ્ધહેમ જ્ઞાનપીઠના માધ્યમથી વિશાળ રંગ મંડપ તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો. તેના મધ્યમાં રંગબેરંગી અક્ષતથી વિભિન્ન પ્રકારની રંગોળીઓ અને ગહુલીઓથી સજ્જ સ્ટેજ બનાવી તેના પર ગ્રંથરાજોને સ્થાપિત કરાયા હતા.

આપ્રસંગે ગુજરાત રાજ્યના પૂર્વ મુખ્યમંત્રી શ્રી વિજયભાઇ રૂપાણી મુખ્ય મહેમાન તથા અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઇ વોરા મુખ્ય અતિથિ તરીકે ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. શોભાયાત્રા આકર્ષણ જમાવતી બગીમાં દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.નો ફોટો લઇ બેસવાનો લાભ પિલુડા નિવાસી શેઠ વાઘજીભાઇ બાદરમલ પરિવારે લીધો હતો. બગવાડા દરવાજાથી પ્રારંભાયેલ શોભાયાત્રા શહેરના મુખ્યમાર્ગોનું પરિભ્રમણ કરી કાર્યક્રમ સ્થળ પર આવી ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તિત થઇ હતી. ત્યાં સવારે ૯.૩૦ કલાકે જ્ઞાનોત્સવના મુખ્ય કાર્યક્રમની શરૂઆત કરાઇ હતી. જેમાં યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોએ કરેલ અધ્યયન શ્રી સિદ્ધહેમ વ્યાકરણ સહિત સંસ્કૃત, પ્રાકૃત ભાષાના ૪૫ થી અધિક ગ્રંથોની ચાંદીની મુદ્રાથી પૂજા કરાઇ હતી.

ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં પૂર્વ મુખ્યમંત્રીશ્રીનું આગમન થયું હતું, અને પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.ના આશિર્વાદ મેળવ્યા હતા. જ્યાં પૂર્વ મુખ્યમંત્રીના મસ્તક પર કુમકુમ તિલક કરી તેમના હાથોમાં સિદ્ધહેમ વ્યાકરણ પ્રદાન કર્યું હતું. જેને લઈને પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીની નિશ્રામાં પૂર્વ મુખ્યમંત્રી પગે ચાલી કાર્યક્રમ સ્થળે પહોંચ્યા હતા. કાર્યક્રમમાં અધ્યન સહાયક એવા જ્ઞાનદાતા પંડિત શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઇ સંઘવી અને રાજુભાઈનું શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું. ત્યારબાદ પૂર્વ મુખ્યમંત્રીશ્રી વિજયભાઇ રૂપાણી, રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઇ વોરા તથા કાર્યક્રમના મુખ્ય લાભાર્થી વીરવાડીયા પરિવારના પંકજભાઇ અને મહેશાભાઈનું શ્રી સંઘ તરફથી બહુમાન કરાયું હતું.

કાર્યક્રમમાં પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.એ પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. બંને પંડિતશ્રીઓ, પૂર્વ મુખ્યમંત્રીશ્રી, રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષશ્રીએ તેમનું વ્યક્તવ્ય રજુ કર્યું હતું.

પ્રથમ દિવસના કાર્યક્રમનું સંચાલન શ્રી રમેશભાઈ દોશી (અનોખી)એ કર્યું હતું. બીજા દવસના કાર્યક્રમનું સંચાલન શ્રી ઓમપ્રકાશ આચાર્યશ્રીએ કર્યું હતું. મન મધુકર ગ્રુપ એ મન મુકીને સંગીત પીરસ્યું હતું. આ પ્રસંગે પાટણ જૈન સંઘના સભ્યો સહિત ભારતના વિભિન્ન રાજ્યોમાંથી શ્રીસંઘ અને ગુરૂભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

ચાતુર્માસ પરિવર્તન પ્રસંગે વિવિધ કાર્યક્રમો સંપન્ન

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. આદિઠાણા ૩૪ના ચાતુર્માસ પરિવર્તન પ્રસંગે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણની આજ્ઞાથી ઈઢાટા નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત શારદાબેન બાબુલાલ ટીલચંદભાઈ દોશી પરિવારના લાભાર્થે વિવિધ કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. પૂનમના રોજ સવારે ૭.૦૦ કલાકે શોભાયાત્રાએ મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું. જેમાં દાદા ગુરૂદેવ તથા પુણ્ય સમ્રાટના ફોટાને લઈ લાભાર્થી પરિવારના શ્રી બાબુલાલ દોશી બગીમાં બિરાજમાન થયા હતા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક ઉપાશ્રયથી પ્રારંભાયેલ શોભાયાત્રા સહસ્ત્રફણા પાર્શ્વનાથ જિનાલયે પહોંચી હતી. ત્યાં પરમાત્માના દર્શન કરી જિનાલયના પ્રાંગણમાં ૧૨૦થી અધિક વર્ષ પૂર્વે દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્ય મુનિરાજશ્રી હિંમતવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં સ્થાપિત શત્રુંજ્ય તીર્થના પટ્ટના દર્શન-દેવવંદન કરી પુનઃ શોભાયાત્રા પંચાસરા યાત્રિક ભવન હોલ ખાતે ધર્મ સભારૂપમાં પરિવર્તિત થઈ હતી. તેના પહેલાં યાત્રિક ભવનના મુખ્ય દ્વાર પર લાભાર્થી પરિવારની પુત્રવધુઓ તેમજ પૌત્રીઓએ મંગળકળશ ધારણ કરી શ્રી સકળ સંઘનું સામૈયું કર્યું હતું. ત્યારબાદ લાભાર્થી પરિવાર દ્વારા સાધર્મિક ભક્તિ કરાઈ હતી. સવારે ૧૦ કલાકે સિદ્ધાચલ ભાવયાત્રા અને યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા પ્રવચન ફરમાવાયું હતું. જેમાં મુનિરાજશ્રીએ શત્રુંજ્યની મહિમા અને કાર્તિક પૂર્ણિમા પર સાર ગર્ભિત મહત્વ સમજાવ્યું હતું. રાજ રાજેન્દ્ર પ્રકાશન ટ્રસ્ટ અને યતિન્દ્ર ભવનના ટ્રસ્ટીશ્રી નવિનભાઈ દોશીએ ભારે જહેમત ઉઠાવી કાર્યક્રમને અત્યંત સફળ બનાવ્યો હતો. જેમાં ચીનુભાઈ, નીતિનભાઈ, દિલીપભાઈ, મહેશભાઈ અને પ્રીત કેયુર દોશીનું વિશેષ યોગદાન રહ્યું હતું.

શ્રુત પ્રભાવક મુનિરાજશ્રી વૈભવ રત્નવિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોનું ચાતુર્માસ પરિવર્તન

શ્રી શત્રુંજય તીર્થ ભાવયાત્રાનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન

સૌધર્મ બૃહતગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત, અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા સુરત (થરાદવાળા)ના તત્વાધાનમાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર (ઉપાશ્રય) અડાજણ સુરત ખાતે ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સુશિષ્ય શાસનના ઉદયમાન સિતારા શ્રુત પ્રભાવક મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૩ તથા શ્રમણી ભગવંતોએ સુરતનગરનું યશસ્વી, અવિસ્મરણીય અને ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી શ્રી શત્રુંજયતીર્થ ભાવયાત્રાના ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સાથે ચાતુર્માસ પરિવર્તન કર્યું હતું.

સંવત ૨૦૭૮ના કારતસ સુદ ૧૫ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ સવારે ૬.૪૫ કલાકે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી ગુરૂમંદિર અડાજણથી પ્રસ્થાન કરી ૭.30 કલાકે માણિભદ્ર રેસીંડેન્સી પાલ ખાતે પધરામણી કરી હતી. ત્યાંથી ચાતુર્માસ પરિવર્તન નિમિત્તે ભવ્ય શોભાયાત્રાનું આયોજન કરાયું હતું. આ શોભાયાત્રા મુખ્ય માર્ગો પર ફરી સિદ્ધગિરિ રેસીંડેન્સી પાલ ખાતે આવી પહોંચી હતી જ્યાં ધર્મસભામાં પરિવર્તિત થઇ હતી. ધર્મ સભામાં મુનિરાજ ભગવંતે પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. ત્યારબાદ શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થ ભાવ યાત્રાનો ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પરિવર્તનનો લાભ મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા.ના સાંસારિક પરિવાર ઉંદરાણા નિવાસી સમસ્ત દોશી પરિવારે લીધો હતો. દોશી પરિવારમાંથી ૨૦ જેટલા પુણ્યવંત આત્માઓએ દીક્ષા ગ્રહણ કરી છે અને વીરતીધર્મનું ચુસ્તપણે પાલન કરી મોક્ષ માર્ગે જવા પ્રયાસ કરી રહ્યા છે.

ઉલ્લેખનીય છે કે, શ્રુત પ્રભાવક મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા.ના સુરતના બે ચાતુર્માસ દરમ્યાન શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત જપ-તપ અને આરાધનામાં પ્રવૃત્તમય બનેલ છે. ૐ હ્રીં શ્રી અર્હમ્ નમઃના બીજમંત્રના

સત્વશાળી શંખનાદ દ્વારા શ્રી જૈન સંઘને અરિહંત પરમાત્માની આરાધનામાં જોડાવાનું કર્મનિર્જરા માટે પ્રેરણાત્મક શ્રેષ્ઠ અને ઉમદા ધર્મપ્રભાવનાનું કાર્ય કર્યું છે. ઉક્ત મંત્રની આરાધના માત્ર સુરત સંઘમાં જ નહી પરંતુ અન્ય અનેક નગરોના જૈન સંઘોમાં પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીની પ્રેરણાત્મક પ્રેરણાથી પ્રેરાઇ થયેલ છે અને થઇ રહી છે. પ્રખર તાત્વીક પ્રવચનોના માધ્યમે સકળ જૈન સંઘમાં પ્રચલિત એવા શાસનના ઉદયમાન સિતાર શ્રુત પ્રભાવક પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા.ના પ્રવચનના પ્રભાવે સન-૨૦૨૧ના સુરતનગરના ચાતુર્માસ દરમ્યાન શ્રી સંઘમાં ઐતિહાસિક આરાધનાઓ સંપન્ન થઇ હતી. અત્યંત પવિત્ર એવા ૪૫ આગમોની વાચના પૂજ્ય મુનિરાજ ભગવંતે કરી હતી. જે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના ઈતિહાસમાં ૧૩૮ વર્ષ બાદ પ્રથમવાર સંપન્ન થઇ હતી. જે વિરલ ઘટના હતી. જૈન જગતમાં અત્યંત સન્માનીય પ્રાકૃત - સંસ્કૃત ભાષામાં આલેખાયેલ શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષનું ગુજરાતી-હિન્દી ભાષામાં સંપૂર્ણ અનુવાદન પણ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી કરી રહેલ છે. બે વર્ષના તપ-જપ આરાધનાના સહવાસ બાદ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીના વિહારથી શ્રીસંઘના અનેક આરાધક વર્ગમાં દુઃખની લાગણી વર્તાઇ ગઇ હતી.

પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણાનું અમદાવાદ નગરથી ચાતુર્માસ પરિવતન

સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન શ્રી સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના અંતેવાસી પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નવિજીયજી મ.સા. આદિઠાણા તથા માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ સન ૨૦૨૧ના વર્ષનું યશસ્વી, અવિસ્મરણીય અને ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ અમદાવાદ મીઠાખળી ખાતે સંપન્ન કર્યું હતું. જે ચાતુર્માસ પૂર્ણ થતાં પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી આદિઠાણા તેમજ શ્રમણી ભગવંતોએ ચાતુર્માસ પરિવર્તન કર્યું હતું. સંવત ૨૦૭૮ના કારતક સુદ ૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૯-૧૧-૨૦૨૧ના રોજ સુપ્રભાતે પૂજ્ય મુનિરાજ આદિ ઠાણા

તેમજ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોએ રાજેન્દ્ર સૂરિ આરાધના ભવન મીઠાખળી અમદાવાદથી શ્રી સકળ સંઘ સાથે પ્રસ્થાન કર્યું હતું. ચાતુર્માસ પરિવર્તનના લાભાર્થી વોહેરા ચંપાબેન કેશવલાલ નાગરદાસ પરિવારના નિવાસસ્થાન સોહમ ફ્લેટ મીઠાખળી ખાતે પગલાં કરી ધી ટેન ફ્લેટ મીઠાખળી અમદાવાદ ખાતે અલ્પ સ્થિરતા કરી ચાતુર્માસ પરિવર્તન કર્યું હતું. ત્યાં લાભાર્થી પરિવાર દ્વારા નવકારશીનું આયોજન કરાયું હતું. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીએ વિહાર કરી શ્રી મહાસુખભાઈ શાંતિલાલ અદાણીના નિવાસસ્થાને પગલાં કરી સરસ્વતી રત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા.ના સંસારી પરિવારના પરીખ સેવંતીલાલ બાદરમલના સુપુત્ર ચિ. પ્રણેશ તથા પ્રકાસની વિનંતીનો સ્વીકાર કરી એ-૫૦૬ પાર્શ્વ લકઝરીયા, શ્રીજયઘોષ સૂરિ ચોક, અશોક વાટિકા આંબલી ખાતે પગલાં કર્યા હતા. પરીખ પરિવારમાંથી પૂજય મુનિરાજશ્રી સુજશવિજયજી મ.સા. તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી જશનિધિશ્રીજી મ.સા.એ દીક્ષા ગ્રહણ કરી હતી. જે પ્રથમવાર પગલા કરવાના હોઈ પૂજ્ય મુનિરાજ ભગવંતો અને શ્રમણી ભગવંતોનું શ્રી જયઘોષસૂરિ માર્ગથી ભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું. લાભાર્થી પરીખ સેવંતીલાલ બાદરમલ પરિવાર દ્વારા નવકારશીનું આયોજન કરાયું હતું. આ લખાઈ રહ્યું છે ત્યારે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી શેરીસા થઈ પેપરાલ તીર્થ તરફ જવા વિહાર કર્યો હતો.

યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ અને વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોથી જાવરાનગરની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી ઉઠી

પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની અને માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરલ સ્વભાવી, વચનસિદ્ધ વયોવૃદ્ધ વિદૂષી પૂજ્ય સાધ્વજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા. તેમજ તેમની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી હિતપ્રજ્ઞાશ્રીજી મ.સા., મધુર ગાયિકા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજી મ.સા. યુવા પ્રવચનકાર પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વૈરાગ્યગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ માળવાના જાવરાનગરે યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન કર્યું હતું. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ અને વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોથી જાવરાનગરની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી ઉઠી હતી.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ

જાવરામાં ચોથો આો વર્તાતો હોય તેવું ધર્મમય વાતાવરણ છવાઈ ગયું હતું. ચાતુર્માસની શરૂઆતથીજ એક પછી એક યશસ્વી-અવિસ્મરણીય શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ-જપ આરાધનાના વિવિધ દશ્યો સર્જાયા હતા.

પ્રતિ રોજ સવારે ભક્તામ્બર સ્તોત્ર પાઠ તથા ગુરૂ ગુણ એક્કીસાના પાઠ સામુહિક રૂપે કરાતા હતા. પ્રતિરોજ પ્રવચન અપાતું હતું. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં અષાઢ સુદ ૫ ના રોજ મનમોહન જિનાલયમાં પ્રભુ મહાવીર સ્વામી અને પુણ્ય સમ્રાટના મંદિરનો ભૂમિપૂજન કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. અને અષાઢ સુદ ૯ ના દિવસે શિલાન્યાસ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. ગણધરતપ તથા વિવિધ તપ કરાવાયા હતા, જેમાં મોટી સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હતા જેના પારણા શ્રાવણ- વદ ૨ ના રોજ કરાવાયા હતા. પારણા તથા સ્વામી વાત્સલ્યનો લાભ શ્રીમાન ઇન્દ્રમલજી દસેડા (સાફાવાળા) પરિવારે લીધો હતો. પંચાન્હિકા મહોત્સવ, સાંકળી આયંબિલ, સાંકળી અઠ્ઠમ, નવકાર મહામંત્રની આરાધના, સામુહિક અઠ્ઠાઈ, નવ, અગિયાર વિગેરે તપશ્ચર્યાઓ સુખરૂપ શાતાપૂર્વક સંપન્ન થઈ હતી. પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી આનંદ અને ઉમંગ સાથે કરાઈ હતી. મનમોહન વાટિકા ખાતે જન્મવાંચનનું સુંદર આયોજન કરાયું હતું. જન્મવાંચનમાં ચઢાવા બોલવાની હોડ લાગી હતી. સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું. સંવત્સરી મહાપર્વના દિવસે ૮૦ વર્ષીય સરળ સ્વભાવી વચનસિદ્ધ વિદુષી પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા.એ બારસા સુત્રનું વાંચન ઉભા ઉભા કર્યું. ત્યારે સમસ્ત શ્રીસંઘ ભાવવિભોર બની ગયો હતો.

ભાદરવા સુદ ૫ ના દિવસે સામુહિક પારણા, નવકારશી, બપોરના સ્વામીવાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું. તેનો સમસ્ત લાભ શ્રી સમરથમલજી દસેડા પરિવારે લીધો હતો.

આજના દિવસે સામુહિક ક્ષમાપના અને મિચ્છામિ દુક્કડમની પરસ્પર આપ-લે કરાઈ હતી. જાવરા શ્રીસંઘે ઉમંગ ઉત્સાહ અને પ્રબળ ઈચ્છા સાથે, પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.ને ''વચનસિદ્ધ'' પદવીથી અલંકૃત કર્યા હતા. ત્યારે જાવરા શ્રીસંઘમાં આનંદની અમિ વર્ષા થઈ ગઈ હતી અને હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી. ચોમેર જયજયકાર ગુંજી ઉઠ્યો હતો.

પુણીયા શ્રાવકના સામાયિક વિગેરે નાના મોટા અનુષ્ઠાનો સંપન્ન થયા હતા. બહુ પરિષદ તથા બાલિકા પરિષદના માધ્યમથી પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સૌમ્ય ગુણાશ્રીજી મ.સા.ના નેતૃત્વ હેઠળ બે રવિવાર દરમ્યાન અલગ અલગ એક એકથી ચઢિયાતા વેષભૂષા સહિત અનેક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. આસો માસમાં શાશ્વતી નવપદજીની સામુહિક ઓળી આરાધના અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવ દિવાળી દિવસે પ્રભુ મહાવીર નિર્માણની ઉજવણી ચંદનબાળાના તપ વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી નમ્રગુણાશ્રીજી મ.સા.ની નિશ્રામાં થરાદનગરે અનેકાનેક ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ના પ્રશિષ્યા અને પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરળ સ્વભાવી પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી નમ્રગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨ એ શ્રી શ્વે. મૂ.પૂ. શ્રી સંઘ થરાદના તત્વાધાનમાં શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર થરાદ ખાતે જપ-તપ આરાધના સાથે સન ૨૦૨૧ના વર્ષનું ચાતુર્માસ સંપન્ન કર્યું હતું.

સંવત ૨૦૭૭ના અષાઢ સુદ - ૫ તા. ૧૫-૭-૨૦૨૧ના મંગલમય દિવસે પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોનો ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ થરાદનગરે થયો હતો. ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ થરાદ શ્રી સંઘમાં ઉત્સાહી માહોલ જામ્યો હતો અને થરાદનગરની ધન્યધરા તપોમય બની ગઈ હતી. ચાતુર્માસ દરમ્યાન પ્રતિરોજ પ્રવચનમાં ઉપદેશમાળા તથા વીરભાણ ઉદયભાણ ચરિત્રનું શ્રવણ કરાવતાં તેનું શ્રવણ કરવા દુર દુરથી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ આવી પહોંચતા હતા. પ્રવચન બાદ ત્રણ પ્રશ્ન પુછવામાં આવતા હતા. અને વિજેતાઓને પારિતોષિક અપાતું હતું. રોજ રૂ. ૫ ની પ્રભાવના કરાતી હતી. તપમાં ઉકોદરી વ્રતના એકાસણા, અષ્ટ મહાસિદ્ધિ તપ, પાંચ રવિવાર શિબિર, નમસ્કાર મહામંત્રના જાપ અને નવેય દિવસ સ્નાત્ર, પર્યુષણ પર્વના આઠેય દિવસ પ્રશ્નાવલી અને ઈનામ ૮૧ ગાથા કરનારનું બહુમાન, ૬૪ પ્રતિક્રમણ કરનારનું બહુમાન તેમજ ૮૫ સામાયિક કરનારનું બહુમાન તદ્‌ઉપરાંત માસક્ષમણ, અગિયાર, દસ, અઠાઈ, અઠમ તપની આરાધનાઓ સંપન્ન થઈ હતી. પુણ્ય સમ્રાટની ચાર માસિક તિથિએ સામુહિક આયંબિલ, સામુહિક, સામયિક અને રૂ. ૫૦ની પ્રભાવના કરાતી હતી.

શ્રી મહાવીર જિનાલયે સક્રસ્તવ અભિષેક, શ્રી વિમલનાથ ભગવાનના જાપ, પર્યુષણ પર્વમાં અષ્ટાનિકા, કલ્પસૂત્ર તેમજ બારસાસૂત્રનું

વાંચન કરાયું હતું. કલ્પસૂત્ર વહોરાવવાનો લાભ વોહેરા વીરચંદ વજેચંદભાઇ પરિવારે લીધો હતો. બારસાસૂત્ર વહોરાવવાનો લાભ પણ વોહેરા વીરચંદ વજેચંદભાઇ પરિવારે લીધો હતો. માસક્ષમણની તપશ્ચર્યાની અનુમોદનાર્થે સંઘ સ્વામીવાત્સલ્ય યોજાયું હતું. જેનો લાભ શ્રી દિનેશભાઇ રાજમલભાઇ વામીવાળા પરિવારે લીધો હતો. સ્નાત્ર મહોત્સવનો લાભ વોરા હિંમતલાલ ભીખાલાલ ગડસીસરવાળા પરિવારે લીધો હતો. ત્યારબાદ નવપદ ઓળી અને નવેય દિવસ શ્રી પાળરાજાના રાસનું વાંચન સુંદર શૈલીમાં કરાયું હતું. ગુરૂ જન્મદિન ત્રિદિવસીય મહોત્સવ ત્રણેય દિવસ દાદા ગુરૂદેવના જાપ, શ્રી સિંમધરસ્વામીના જાપ જેનો લાભ અદાણી અમરતલાલ ફોજાલાલ પરિવારે લીધો હતો. ત્રણ દિવસ ગૌતમસ્વામીના જાપ જેનો લાભ વોહેરા પ્રવિણચંદ્ર પ્રેમચંદભાઇ પરિવારે લીધો હતો. થરાદનગરના દરેક જિનાલયોમાં સક્રસ્તવ અભિષેકનું આયોજન કરાયું હતું. જેમાં શ્રી મહાવીર જિનાલયના અભિષેક, શ્રી અભિનંદન જિનાલયના અભિષેક, શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ જિનાલયના અભિષેક શ્રી સુપાર્શ્વનાથ જિનાલયના અભિષેકનો લાભ વોહેરા પ્રવિણચંદ્ર પ્રેમચંદભાઇ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી વિમલનાથ જિનાલયના અભિષકનો લાભ ઘરૂ વસંતભાઇ રાજમલભાઇ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી મુનિસુવ્રત જિનાલયના અભિષેકનો લાભ દેસાઇ હાલચંદભાઇ ઉજમશીભાઇ પરિવારે લીધો હતો. શ્રી વિમલનાથ જિનાલય (આંબલીશેરી)ના અભિષેકનો લાભ અદાણી ચંપકલાલ અમુલખભાઇ (ટટી) પરિવારે લીધો હતો. શ્રી સુમતિનાથ જિનાલયના અભિષેકનો લાભ સંઘવી નટવરલાલ અમૃતલાલ પરિવારે લીધો હતો. વરખડી ધામના અભિષેકનો લાભ દેસાઇ હીરાલાલ રાજમલભાઇ પરિવારે લીધો હતો. વર્ણપ્રમાણે નવપદ ઓળીમાં પ્રભાવના કરાઇ હતી. ૨૫૦ ગ્રામ ચોખા એક ગુરૂભક્ત તરફથી, ૨૫૦ ગ્રામ સિંગ ઘરૂ મફતલાલ ડાહ્યાલાલ પરિવાર, ૫૦૦ ગ્રામ ગોળ સંઘવી સેવંતીલાલ વીરચંદભાઇ પરિવાર, ૨૫૦ ગ્રામ વરિયાળી દેસાઇ હાલચંદભાઇ ઉજમશીભાઇ પરિવાર, ૨ પેકેટ અડા તથા ૨૫૦ ગ્રામ પૌઆ વોહેરા પ્રવિણચંદ પ્રેમચંદભાઇ પરિવાર, ૨૫૦ ગ્રામ સાકર અને પાણી ગાળવાના ગરણા ભણસાળી કાંતિલાલ ભુદરમલ પરિવાર, ૨૫૦ ગ્રામ ખાંડ સંઘવી મહાસુખલાલ હીરાલાલ (લાટી) પરિવાર, ૨૫૦ ગ્રામ વોરા બાબુલાલ જયંતિલાલ પરિવાર.

વેદલીયા મફતલાલ ભાણજીભાઈ પરિવાર દ્વારા ડીસાનગરે ચૈત્યપરી પાટી કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની શુભ નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૭ના ભાદરવા વદ - ૪ ને શનિવારના તા. ૨૫-૯-૨૦૨૧ના રોજ ચૈત્યપરી પાટીનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. સકળ સંઘ સાથે વાજતે-ગાજતે સવારે રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર નેમિનાથનગર ડીસાથી પ્રસ્થાન કરી આ ચૈત્યપરી પાટીએ ડીસા શહેરના જિનાલયોને જુહારી મહાવિદેહ ધામ ખાતે પહોંચી હતી. ત્યાં ધર્મસભામાં પરિવર્તીત થઈ હતી. જ્યાં પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતે પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. ત્યારબાદ દર્શન-સેવા પૂજા વિગેરે કાર્યક્રમ પતાવી ભક્ત સમુદાયે બપોરનું ભોજન લીધું હતું. આ ચૈત્યપરી પાટીનો સંપૂર્ણ લાભ ભોરડુ (થરાદ) નિવાસી વેદલીયા મફતલાલ ભાણજીભાઈ પરિવારે લીધો હતો.

પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાનું ચાતુર્માસ પરિવર્તન

શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર, તુલસી વિહાર, ખાનપુર અમદાવાદ ખાતે ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ સાધ્વીજી ભગવંતોએ ગુરૂ મંદિરથી પ્રસ્થાન કરી શ્રી નમિનાથ દાદાના જિનાલયને જુહારી, ગગનવિહાર સોસાયટી સ્થિત શ્રી કલિકુંડ પાર્શ્વનાથ ભગવાનના દર્શન-વંદન કરી વાજતે-ગાજતે સકળ સંઘ સાથે ગગનવિહાર સ્થિત શ્રી ચંદુલાલ ભોગીલાલ વોહેરાના નિવાસસ્થાને ચાતુર્માસ પરિવર્તન કર્યું હતું. ચાતુર્માસ પરિવર્તનના લાભાર્થી પરિવાર દ્વારા રૂ. ૧૦ની પ્રભાવના કરાઈ હતી.

પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા નૂતનવર્ષનો માંગલિક કાર્યક્રમ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી

સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા રાજસ્થાનના જગપ્રસિદ્ધ શ્રી નાકોડાજી તીર્થ ખાતે સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રધામમાં ચાતુર્માસ બિરાજમાન હતા. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતના મુખકમળ દ્વારા નૂતન વર્ષે મહામાંગલિકનું શ્રવણ કરાવાયું હતું. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતે નવા વર્ષે સારગર્ભિત મહત્વ સમજાવતાં કહ્યું હતું કે, નવા વર્ષમાં નવા જીવનની શરૂઆત કરો. આજની સવાર જેમ ગૌતમસ્વામીના જીવનમાં આવી એવી સવાર આપણા સહુના જીવનમાં આવે.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા પારા દ્વારા પરિષદના ૬૩માં સ્થાપના દિવસે વિવિધ કાર્યક્રમ સંપન્ન

વિશ્વવંદનીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા સ્થાપિત પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. દ્વારા સંચિત અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના ૬૩માં સ્થાપના દિવસ પર શાખા પારા દ્વારા ધ્વજવંદન કરી કાર્તિક પૂર્ણિમાના પાવન અવસર પર ભગવાન આદિનાથના ફોટાને લઈ મુખ્ય માર્ગો પર શોભાયાત્રા કાઢવામાં આવી હતી. આ અવસરે સમાજનો મોટી સંખ્યામાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. અને સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનું આયોજન કરાયું હતું. પરિષદના સ્થાપના દિવસ પર પારા પરિષદે સંપૂર્ણ ભારતની પરિષદને વધાઈ આપી, શુભકામના પાઠવી હતી. અને પરિષદ દ્વારા ભવિષ્યમાં અધિકથી અધિક કાર્ય કરવાની શપથ લીધા હતા. આ અવસરે રાષ્ટ્રીય અલ્પ બચત મંત્રી પ્રકાશ તલસેરા, વરિષ્ઠ પરિષદ પદાધિકારી શ્રી પ્રકાશજી છાજેડ, પારા પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી દિલીપજી કોઠારી અને અન્ય પરિષદના પદાધિકારીઓ અને સદસ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

આત્મોદ્ધાર : ૫ તા. ૨૭-૧-૨૦૨૨

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ તથા આત્મોદ્ધાર - ૫ ના મુર્હૂતદાદા ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિશ્રી મદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી જયંતસેન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલના તત્વાધાનમાં ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં આત્મોદ્ધાર-૫નું આયોજન કરાયું છે. જે આત્મોદ્ધાર દીક્ષા દિવસ પોષ વદ ૧૦ ને ગુરૂવાર તા. ૨૭-૧-૨૦૨૨ના રોજ નક્કી કરાયો છે. જે આત્મોદ્ધાર-૫માં બે મુમુક્ષુઓના પૂજ્યશ્રી દ્વારા મુર્હુત પ્રદાન કરાયા છે. (૧) થરાદ નિવાસી મુંબઈ સ્થિત શ્રી નવીનભાઈ નરપતલાલ બલ્લુના પૌત્ર અને શ્રી પારસભાઈ બલ્લુના સુપુત્ર ચિ. મુમુક્ષુ આગમ બલ્લુ (૨) થરાદ નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત ચંપાબેન કાંતિલાલ ભણસાળી પરિવારના શ્રી જયેશકુમાર ભણસાળીની સુપુત્રી ચિ. મુમુક્ષુ ખુશી ભણસાળી

प्रभु के पंचामृत से अभिषेक जीवन को अमृतमय बनाता है

जालोर में गच्छाधिपतिजी का चातुर्मास सम्पन्न

जालोर-राज.(नेमीचंद पारख) । के बड़ा न्याती नोहरा में त्रिस्तुतिक श्री जैन संघ के तत्वावधान में आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के पट्टधर गच्छाधिपति आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का चातुर्मास आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में तपावास में स्थित श्री महावीर स्वामी जिनालय में जालोर नगर की सुख शांति हेतु मंगलमय 18 अभिषेक भेरूलालजी सेठ परिवार की ओर से सम्पन्न हुए।

आचार्यश्री ने कहा कि 18 अभिषेक हमारे आंतरिक-आध्यात्मिक भावों को शुद्ध करते हैं। वर्ष भर में दर्शनार्थ पधारे श्रद्धालुओं के द्वारा यदि पूजा विधि-विधान में कोई भूल या दोष रह गया हो तो उस दोष को दूर करने हेतु जिनालय में 18 अभिषेक करते हैं। विभिन्न औषधियों से मिश्रित पंचामृत द्वारा परमात्मा का अभिषेक करके श्रद्धालु अपने जीवन को भी अमृतमय बनाने का प्रयास करते हैं। हम हमारे शरीर को कितना ही जल से शुद्ध कर लें, लेकिन वह पुनः मैला-कुचैला हो ही जाता है। जबकि परमात्मा सदैव शुद्ध-विशुद्ध निरंजन-निराकार रहते हैं। हमारा चित्त निर्मल रहे इस हेतु निर्मल शीतल जल से परमात्मा का अभिषेक करते हैं। 18 अभिषेक का विधान आहोर से पधारे गुरुजी श्री विनयचंद्रजी ने सम्पन्न करवाए।

मंगलवार को ज्ञान पंचमी के दिन ज्ञान प्राप्ति हेतु दोपहर को 2 बजे चतुर्विध संघ के साथ ज्ञान का देववंदन सम्पन्न हुआ।

एक अन्य धर्मसभा में आचार्यश्री ने कहा कि गुणों का अनुवाद उन्हीं का किया जाता है, जो वाद-विवाद से दूर रहकर मात्र गुणों को ही धारण करता है। गुरु हमारे

गुणधारक व अवगुण निवारकर होते हैं। आचार्य श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी के सुशिष्य एवं आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के गुरु पीताम्बर विजेता आचार्यश्री यतीन्द्रसूरिजी के 138 वे जन्मोत्सव प्रसंग पर गुरु गुणानुवाद करते हुए मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने कहाकि सद्गुरु वही होता है। जिसमें शिष्य के कल्याण की चिंता होती है। सच्चे शिष्य को गुरु अपने आप दीक्षा देते हैं। यदि शिष्य सच्चा हो तो उसे गुरु ढूंढने की आवश्यकता नहीं रहती, अपितु गुरु उसे स्वतः ही प्राप्त हो जाते है। सच्ची लगन वाले को सच्चे महात्मा मिल जाते हैं। लोग गुरु को ढूंढते हैं, पर सद्गुरु तो स्वयं शिष्य को ढूंढते हैं। आचार्य यतीन्द्रसूरिजी को भी दीक्षा के पूर्व एक सद्गुरु की तलाश थी और उन्हें सद्गुरु के रूप में त्यागी-वैरागी-तपस्वी-जपस्वी यशस्वी आचार्यश्री राजेन्द्रसूरिजी मिले। राजस्थान के धौलपुर में जन्मे रामरतन (यतीन्द्रसूरिजी) ने सद्गुरु को तलाशा तो सद्गुरु ने सुशिष्य को तराशा और शिष्य को भी सद्गुरु बना दिया। मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी के वर्धमान तप की 43 वीं आयंबिल ओली चल रही है, जो ज्ञान (लाभ) पंचमी 9 नवंबर को संपूर्ण होगी। मुनि श्री जयसेन विजयजी ने विशस्थानक ओली के 10 छठ याने 20 उपवास की तपस्या का पारणा किया।

विशाल धर्मसभा में गच्छाधिपति आचार्य नित्यसेनसूरि ने कहाकि एकमात्र निर्दोष परमात्मा ही हमें निर्दोष बना सकते हैं। प्रभु महावीर ने अपनी उत्तर (अंतिम) अवस्था में जो उपदेश दिए, वे सभी उत्तराध्ययन सूत्र के रूप में गुंफित हुए हैं। ज्ञान प्राप्ति में जिस चित्त दशा की अपेक्षा होती है, वही चित्त दशा विनय कहलाती है। गुरु के प्रति संपूर्ण भाव से ही शिष्य में विनय गुण की प्रतिष्ठा होती है। मुनि डॉ. संयमरत्न विजय ने कहाकि धन से नहीं अपितु धर्म से धन्यता की प्राप्ति होती है। भगवान महावीर ने तेरस को जन्म लिया और तेरस से ही अंतिम देशना का प्रवाह प्रारंभ किया, इसीलिए तेरस धन्य हो गई, जिसे आजकल धनतेरस कहते हैं। जितना परिश्रम - पुरुषार्थ ज्यादा, उतनी ही सिद्धियां ज्यादा, जीवन में नियमितता होना अत्यंत आवश्यक है। सूर्य नियमित निकलता है, तो लोग उसे पूजते हैं, नदी का पानी नियमित बहता है, तो नदी भी सागर बन जाती है, छोटा सा भी कार्य यदि नियमित रूप से किया जाय तो वह बहुत बड़ा फल देता है। जीवन को आशा की दृष्टि से देखो। निराशा की आदत छोड़ दो। हर अंधेरी रात में चमकते हुए तारे और हर काले बादल में चमकती हुई बिजली

का गोटा जड़ा है। गुलाब की झाड़ी में काँटे मत गिनी, फूल गिनी क्योंकि जो काँटे गिनने में रह जाते है, उनके लिए फूल भी कांटे हो जाते हैं। संसार में सुख से अधिक दुःख स्वर्ग से अधिक नर्क है। ज्ञानी तो वह है, जो दुःख में सुख और नर्क में भी स्वर्ग खोज लेते हैं। श्री संघ के मीडिया प्रभारी नेमीचंद पारख ने बताया कि इस अवसर पर श्री संघ के अध्यक्ष रमेशचंद भंडारी, भक्ति राज भंडारी, विकास कुमार बोहरा, मदनराज जैन व इंद्र पोरवाल, देवेन्द्र मेहता, डूंगर मल मुणोत व संघ के काफी लोग उपस्थित थे।

आचार्य श्री के सान्निध्य में ज्ञान पंचमी की आराधना सम्पन्न हुई। चातुर्मास में तन-मन-धन से सहयोग करने वाले सहयोगियों का बहुमान किया गया। आचार्य श्री ने कहाकि जो ज्ञान प्राप्ति हेतु कौए की तरह चेष्ठा, बगुले की तरह ध्यान, श्वान जैसी निद्रा लेने के साथ अल्पाहारी व सदाचारी होता है, वही वास्तविक विद्यार्थी कहलाता है। ज्ञान बिना मनुष्य पशु के समान होता है। मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने ज्ञान प्राप्ति के गुणों को समझाते हुए कहाकि ज्ञान प्राप्ति करने के लिए सर्वप्रथम शरीर का स्वस्थ होना जरूरी है। दूसरा गुरु हमें जो ज्ञान दे, उसे समझने, ग्रहण करने के साथ धारण करने की पर्याप्त बुद्धि होना चाहिए। ग्रहण शक्ति व स्मरण शक्ति द्वारा मानव सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। तीसरे क्रम पर विनय होना चाहिए। ज्ञान का मूल विनय है। माता-पिता व गुरुजनों का विनय, सन्मान करने से शीघ्र ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। चौथे क्रम पर ज्ञान प्राप्ति हेतु उत्साह चाहिए, क्योंकि आलसी-प्रमादी कभी भी ज्ञानी नहीं बन सकते। पाँचवें क्रम पर शास्त्र श्रृद्धा चाहिए। आगम शास्त्रों द्वारा ही मोक्ष मार्ग, हेय-उपादेय एवं पुण्य-पाप का ज्ञान होता है, ऐसी श्रद्धा रखने से ही ज्ञान प्राप्ति में बाधक कर्मों का क्षय होता है, जिससे बुद्धि निर्मल व तेजस्वी बनती है। छठे स्थान पर शास्त्र ज्ञानदाता गुरु का संयोग होना आवश्यक है, जिनके समीप जाकर हम ज्ञान प्राप्त कर सकें। सातवें क्रम में गुरु से प्राप्त ज्ञान की पुनरावृत्ति हेतु पुस्तक-ग्रंथ होना भी जरूरी है, तो आठवें क्रम में जहाँ हिंसा, कोलाहल न हो, शांति व प्रसन्नता का वातावरण हो ऐसा सुयोग्य स्थान भी चाहिए। नवमें क्रम में अध्ययन करते समय यदि शांत, संयमी, उध्यमी, प्रज्ञावान-पराक्रमी सहपाठी हो तो ज्ञानार्जन में उत्साह बना रहता है। दसवें क्रम में शरीर को स्वस्थ बनाएँ रखने के लिए समुचित भोजन भी आवश्यक है। संयमित व नियमित भोजन लेने से प्रमाद नहीं आता है।

मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. की पावन निश्रा में पाटण में हुआ दो दिवसीय ज्ञानोत्सव का कार्यक्रम

पाटण । पाटण नगर में बिराजमान जैनाचार्य पुण्यसम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य एवं गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. और आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वर म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा., मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. आदि साधु - साध्वी भगवंत ठाणा 34 की पावन निश्रा में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा ने श्री सिद्ध हेम व्याकरण सहित अध्ययन किए 45 से अधिक ग्रंथों का ज्ञान पूजन एवं ज्ञान दाता पंडितवर्यों के बहुमान प्रसंगे 13 नवम्बर और 14 नवम्बर 2021 को दो दिवसीय ज्ञानोत्सव का त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से आयोजन हुआ, जिसमें प्रथम दिन सबुह में प्रवचन एवं ज्ञानदाता पंडितजी एवं वैयावच्च करने वालों का पाठण पुलिस अधीक्षक अक्षय भाई मकवाना ओर अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेशभाई धरू ने, रमणीकभाई, प्रवीणभाई, कुणालभाई, कौशलभाई,

विजयभाई, रश्मिभाई, उमेशभाई, राकेशभाई, जयभाई मेहुलभाई, कु.भव्या मेहता आदि के बहुमान किए एवं दोपहर में जयन्तसेन सूरी अष्टप्रकारी पूजन पढ़ाई गई एवं ज्ञानोत्सव के दूसरे दिन पूर्व मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी ओर त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोरा की उपस्थिति में 14 नवम्बर को मुख्य कार्यक्रम हुए।

जिसमें सुबह 7 बजे पाटण के प्रमुख स्थल बगवाडा दरवाजा से सिद्धहेम व्याकरण ग्रंथ को हाथी पर स्थापित कर शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें में व्याकरण को गजराज पर पडितवर्य श्री चंद्रकांतभाई संघवी एवं राजुभाई लेकर बैठे, शोभायात्रा में गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. एवं पुण्यसम्राट युगप्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की तस्वीर को बग्गी में लेकर बैठने का लाभ पीलुडा (गुजरात) निवासी शेठ वाघजीभाई बादरमल परिवार सूरत, डीसा ने लिया।

शोभायात्रा प्रमुख मार्गों पर परिभ्रमण कर कार्यक्रम स्थल पर सम्पन्न हुई, जिसमें में विशाल संख्या में भाई-बहन उपस्थित

रहे, उसके बाद सुबह 9.30 बजे ज्ञानोत्सव का मुख्य कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सहित पंडितवर्य ने विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. और पुण्य सम्राट युग प्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की तस्वीर के सामने दिप प्रकट कर फूलों की माला पहनाई। उसके बाद मुनिराज श्री निपुण रत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा ने अध्ययन किये श्री सिद्धहेम व्याकरण सहित संस्कृत प्राकृत भाषा के 45 से अधिक ग्रंथों की चांदी से ज्ञान पूजा की गई, ज्ञान पूजा को लेकर भव्य मंडप की सजावट की गई ओर रंग बिरंगी अक्षत से विभिन्न प्रकार की गहुंली बनाई गई, कार्यक्रम के पूर्व त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में पूर्व मुख्यमंत्री का पदार्पण हुआ जहाँ उन्होंने मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. के आशीर्वाद प्राप्त किए। वहाँ पर पूर्व मुख्यमंत्री के 'मस्तक' पर कुमकुम तिलक कर उनके हाथों में सिद्धहेम व्याकरण प्रदान किया गया।

जिसको लेकर मुनिराज श्री की निश्रा में पूर्व मुख्यमंत्री पैदल चलकर कार्यक्रम स्थल पहुंचे, कार्यक्रम में मुनि भगवंतों को अध्ययन में सहायक ऐसे ज्ञानदाता पंडित श्री चंद्रकांतभाई संघवी एवं राजुभाई का त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री का बहुमान किया, उसके बाद कार्यक्रम के मुख्य लाभार्थी परिवार के पंकजभाई ओर महेशभाई का बहुमान किया गया, कार्यक्रम में मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. एवं मुनिराज श्री निपुण रत्न विजयजी म.सा. के प्रवचन ओर दोनों ज्ञानदाता पंडितजी एवं अतिथियों का उद्बोधन हुआ, कार्यक्रम का संचालन प्रथम दिन रमेशभाई दोशी अनोखी, सूरत ने एवं मुख्य दिन ओमप्रकाशजी आचार्य ने किया, कार्यक्रम को संगीत के स्वरों से मन मधुकर ग्रुप के राजुभाई सोनी ने सजाया, इस प्रसंग पर पाटण जैन संघ के सदस्यों सहित भारत के विभिन्न राज्यों के श्रीसंघ एवं गुरु भक्त उपस्थित रहे, ज्ञानोत्सव के दोनों दिन बाहर गांव से पधारे श्रीसंघ एवं गुरु भक्तों सहित पाटण श्रीसंघ के सभी समुदाय के सदस्यों की तीनों समय की साधर्मिक भक्ति की गई। ज्ञानोत्सव के कार्यक्रम में मुख्य लाभार्थी थराद निवासी मातुश्री वीरांबेन वीरचंदबाई की स्मृति में बाबुलाल वीरचंदभाई वीरवाडीया अहमदाबाद एवं लाभार्थी थराद त्रिस्तुतिक जैन संघ, अहमदाबाद, नेनावा, त्रिस्तुतिक जैन संघ, मुनीलालजी मंगलचंदजी हिराणी परिवार रेवतड़ा, चैन्नई, मुम्बई, सायला निवासी पारसमलजी हस्तिमलजी भंडारी परिवार विजयवाड़ा ने लिया।

परिषद प्रांगण से

श्रीश्रीमाल इंदौर शाखा के अध्यक्ष

इंदौर । अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद इंदौर इकाई के पदाधिकारियों व कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वानुमति से आगामी द्विवर्षीय कार्यकाल के लिए श्री रमेशजी श्रीश्रीमाल का चयन किया गया। इस हेतु वरिष्ठ सदस्य श्री नरेन्द्रजी सुराणा ने प्रस्ताव रखा जिसका समर्थन श्री दिनेशजी मेहता, श्री तेजकुमार बंबोरिया, श्री नीरजजी सुराणा, श्री संजयजी लुक्कड़, प्रभातजी चौपड़ा सहित उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि के साथ किया। रमेशजी को बधाई व शुभकामनाएँ दी। इसके पूर्व सचिव श्री नरेन्द्रजी राठौर ने पूर्व मीटिंग का विवरण तथा आगामी कार्य योजना की जानकारी दी ।

* इंदौर । कार्तिक पूर्णिमा को परिषद के स्थापना दिवस पर धार रोड़ स्थित (श्री राजेन्द्र धाम) पर देववन्दन के बाद प्रातः 10.30 पर परिषद का झंडावंदन हुआ। इसके पश्चात् संघ का स्वामी वात्सलय आयोजित किया गया।

परिषद के स्थापना दिवस पर झंडावंदन

इंदौर । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के स्थापना दिवस पर इंदौर परिषद द्वारा पूज्य साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी की निश्रा में श्री राजेन्द्र जयंत धाम पर झंडावंदन कर परिषद गीत गाया।

इस अवसर पर संघ समाज व परिषद के श्री निरज सुराणा, महेन्द्र जैन बागवाले, उत्सवलालजी पोरवाल, नरेन्द्र सुराणा, शिखरजी मनोज जैन, तेजकुमार बंबोरिया, दिनेशजी मेहता, रमेशश्रीश्रीमाल, डॉ. राजेन्द्र जैन, यशवंतजी बोराणा, रवि रांका, जयंतिलालजी बाग सहित वरिष्ठ समाजजन तथा महिला परिषद व महिला मंडल से महिला परिषद की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती राखी रांका, सरोज श्रीश्रीमाल, अर्चना जैन, अमिता जैन, सुषमा सुराणा, दीपमाला, किरण मेहता, तारा श्रीश्रीमाल आदि बहनों ने ध्वज वंदन किया। पश्चास्त श्री सिद्धाचलजी के देववन्दन किये।

श्री संघ सौरभ

85 वीं रेंक आने पर आयुषी जैन का बहुमान

महिदपुर। परम गुरु भक्त रमेश काका-अंगुरबाला मेहता की नाती व डग (राजस्थान) निवासी अजीत - हंसा मुणत की सुपुत्री आयुषी जैन ने यु.पी.एस.सी. की परीक्षा में 85 वीं रेंक प्राप्त कर नगर व समाज को गौरवान्वित किया।

आयुषी जैन की सफलता पर नगरवासियों व समाजजनों ने हर्ष व्यक्त करते हुए आयुषी जैन का बहुमान किया।

आत्मोद्धार के लिए आरोहण

अमदावाद । मुंबई निवासी नवीनभाई नरपतलाल रामचन्द्रभाई बल्लु परिवार - थराद के सुपुत्र मुमुक्षु रत्न आगम पारसभाई बल्लु 19 वर्ष मोहमाया से भरी इस संसारनगरी को छोड़कर आत्मोद्धार के परम पावनीय मार्ग पर प्रस्थान करने जा रहे है। यह आत्मोद्धार गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न होगा।

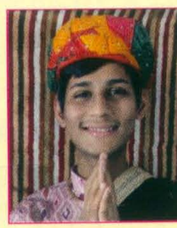

रजत रश्मियाँ

1100/- डग निवासी अजित -हंसा मुणत की सुपुत्री आयुषई जैन ने यूपी.एसी की परीक्षा में 85 वीं रेंज प्राप्त करने पर महिदपुर नाना-नानी रमेश काका-अंगुरबाला मेहता की ओर से शाश्वत धर्म पत्रिका को सहायतार्थ प्रदान ।

गत अंक में मुद्रित डॉ. निर्मल मेहता रतलाम द्वारा प्रदत्त रुपये 10,000/- की सहयोग राशि त्रुटी वश डॉ. निर्मला मेहता छप गया था। उसे डॉ. निर्मल मेहता पढ़ा जावें।

जैन विश्व

* अमेरिका द्वारा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान सौंपी गई 157 प्राचीन कलाकृतियों को भारत भेज दिया गया है। इसमें नौ जैन धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाएँ है। जैन मूर्तियों के पद्मासन व खड़े तीर्थंकरों, चौवित्र तथा अनाकार युग की प्रतिमाएँ हैं।

* दिगम्बर आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा. ने तीर्थ तिलवाड़ा में प्रवचन दिया कि हम भगवान महावीर के तीर्थंकर काल में है। भक्ति करने से कर्म विशेष की निर्जरा होती है।

* 24 बच्चों ने सिविल सर्विस में सफलता प्राप्त कर जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। रैंक नाम-03 अंकिता जैन, 16 अर्थ जैन, 21 वैशाली जैन, 22 नितेश जैन, 53 अहिंसा जैन, 56 जयंत नाहटा, 67 वाशु जैन, 85 आयुषी जैन, 90 प्रखर जैन, 96 अमृत जैन, 122 अंशुल जैन, 205 चिराग जैन, 269 श्रेयांस सुराना, 277 मेघना जैन, 279 अर्पित जैन, 309 प्रेक्षा जैन, 329 संधि जैन, 333 समीक्षा जैन, 341 अभी जैन, 938 सुराना अंकित महावीर, 354 मेघा जैन, 484 वृष्टि जैन, 503 हरीश जैन, 529 उर्जा विकास जैन।

* अयोध्या में केवडिया कॉलोनी में भारत सरकार ने जैन मंदिर, म्युजियम तथा भोजनालय बनाने हेतु पाँच एकड़ भूमि स्वीकार की है। यह कार्यवाही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सीधी देख रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी बचपन की बड़नगर-गुजरात की यादों को ताजा करते हुए कहाकि मैंने जैन संस्कार जहाँ से लिए है, उसका ऋण अदा करना मेरा फर्ज है। मोदीजी ने अयोध्या राम मंदिर के बाजू में 5 एकड़ भूमि की पक्की व्यवस्था कर दी है।

* पालीताना में हस्तगिरी रोड़ पर सुणतरभुवन जैन धर्मशाला के निकट वृद्ध मुनि श्री दिव्येश शेखर विजयजी म. पर हमला हुआ। जैन समाज ने इस पर विरोध प्रकट किया है तथा हमलावर पर कठोर कार्यवाही करने की मांग की है।

* अहमदाबाद शाहीबाग गिरधर नगर में मुनिश्री करुणादृष्टिविजयजी म. की पावन निश्रा में कई कार्यक्रम 18 हजार सामायिक, छःरीपालक संघ आदि का आयोजन हुआ।

* शाहीबाग गिरधरनगर अहमदाबाद में दीक्षा दानेश्वरी आचार्यश्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म. के शिष्य पू. मुनिराज श्री अर्हद्रत्न विजयजी म. का स्मरण करते (काल धर्म) स्वर्गवास हो गया है। उनकी पालखी यात्रा निकाली गई।

* सूरत-उमरा जैन संघ में 'श्री गुणरत्न श्लोक समुच्चयं' ग्रंथ का विमोचन आचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म. तथा दो सौ से अधिक साधु-साध्वियों की निश्रा में किया गया।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार

  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सरत

श्रीमती चमेली बाई शांतिलालजी बोहरा का स्वर्गवास

इंदौर । संघ की वरिष्ठ श्राविका, धर्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ, सरलमना परम गुरुभक्त श्रीमती चमेलीबाई शांतिलालजी वोहरा का 78 वर्ष की उम्र में कार्तिक पूर्णिमा को प्रातः 7.30 बजे पच्चखाण में नमस्कार महामन्त्र के ध्यान में अरिहंत शरण हो गया। नियमित पूजन, प्रतिक्रमण तथा सामायिक करने वाली श्रीमती वोहरा ने पूज्य राष्ट्रसंत श्री जयंतसेन सूरिजी म.सा. की निश्रा में तीन उपधान, नमस्कार महामंत्र, आराधना तथा उन्हीं की प्रेरणा से वर्धमान ओली, बीस स्थानक ओली, नवपद ओली, मासक्षमण, अठाई ग्यारा, अट्ठम, भव निवारण एकासने, शत्रुंजय तप आदि विभिन्न आराधना करती रही। आपके परिवार से पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिजी की निश्रा में इंदौर से हासामपुरा, मक्सी पैदल संघ निकाला था, आपका परिवार एक लंबे अरसे तक तपस्वियों को नाकोड़ाजी की यात्रा कराता रहा। व्यावसायिक क्षेत्र में भी आपके परिवार ने बुलंदियों को छुआ।

पूज्य गुरुदेव श्री नित्यसेन सूरिजी म.सा. ने अपने संदेश में नमस्कार महामन्त्र जाप करने की प्रेरणा दी, गुमास्तानगर ट्रस्ट की ओर से श्री पुखराजजी पगारिया, त्रिस्तुतिक संघ से राजेन्द्र रांका, परिषद की ओर से रमेश श्रीश्रीमाल, अ.भा.श्री जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से प्रभातजी चोपड़ा व श्रीश्रीपाल जी सकलेचा ने श्रद्धाजंली देते हुए उन्हें बहुत भद्रिक महिला बताया। परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, सुधीरजी लोढ़ा, म्यूजियम के श्री मिलापजी चौधरी, प्रदेश श्रीसंघ के महामंत्री नीरज सुराणा, प्रदेश परिषद उपाध्यक्ष नरेन्द्र भटेवरा सहित अनेक महानुभावों ने शोक संदेश दिए। संचालन करते हुए अशोक श्रीश्रीमाल ने बताया कि आपने त्याग, परिश्रम, निष्ठा व जुझारूपन से शून्य से शिखर तक के सफर को कैसे तय किया। गुमास्तानगर जिनालय में गुरुदेव की कायमी ध्वजा के आप लाभार्थी हैं।

श्री विमलजी तलेरा का स्वर्गवास

उज्जैन । 25 नवम्बर 2021 को स्व. समरथमलजी तलेरा के सुपुत्र व प्रेमजी व उज्जैन विधायक तथा परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी के अनुज श्री विमलजी तलेरा का स्वर्गवास हो गया।श्री विमलजी का स्वभाव विमलता से ओतप्रोत था, वे परम गुरुभक्त, सरल व विनम्र थे। जब तक सक्रिय रहे, संघ, समाज, परिषद व परिवार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

आप धर्म निष्ठ थे। अंतराय कर्म का उदय था, वे लगभग 6 वर्षों तक अचेतन अवस्था

शेष... पृष्ठ 4 पर

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
ए/RNP/MP/MANDSAUR/113/ 2021-23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष - 68, अंक 11 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 80

विहार क्रम .... पृष्ठ 1 का शेष

25 नवम्बर को भीनामल में दर्शन कर पैदल विचरण कर, 2 दिसम्बर को गुरुतीर्थ भूमि पेपराल पहुँचने वाले थे। वे यहाँ प्रारम्भ होने वाले उपधान तप की आराधना को सानिध्य प्रदान करेंगे।

- आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. श्री भांडवपुरतीर्थ पर आयोजित चातुर्मास समापन समारोह को सान्निध्य प्रदान किये जाने के पश्चात् विहार पर हैं। चार्तुमास समापन समारोह के अतिथि यतिश्री विजयजी सोमजी, राजस्थान के पर्यावरण मंत्री श्री सुखरामा, विधायक श्री छगनसिंह राजपुरोहित थे।
- साध्वी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा. लाबरिया राजोद होकर पैदल विचरण कर रही थीं। बड़ावदा में श्री जयन्त गुरु जन्म जयन्ती पर पधारने वाली थी।
- साध्वी श्री विद्वद्गुणाश्री तथा रश्मिप्रभाश्रीजी उज्जैन से निकले हासमपुरा पैदल संघ को सान्निध्य प्रदान कर विहार में निरन्तर थीं।
- मुनि श्री अपूर्वरत्नविजयजी पालीताना स्थित यतीन्द्र विहार धर्मशाला में स्थिर हैं।
- साध्वी श्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी आदि पाटन से शंखेश्वर तीर्थ होते हुए अहमदाबाद की ओर विहार कर रही हैं।
- साध्वी श्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी आदि ठाणा तीन मन्दसौर से अट्ठाइस नवंबर को बही पार्श्वनाथ के पैदल संघ को सान्निध्य प्रदान कर, अब विहार में है। पुनः दो दिसम्बर को मन्दसौर पधारने वाली थीं।

फोटो केप्सन ....पृष्ठ 1 का शेष

मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. तथा मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म. सा. के सान्निध्य में आयोजित हुआ। ज्ञानोत्सव में भाग लेने गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपाणी पधारे। जिन्होंने मुनिराज गणों की वंदना की।

श्री विमलजी..... ....पृष्ठ 3 का शेष

में रहे, तथापि समता भाव से इस भारी वेदना को सहन कर कर्मक्षय ही किया। परिवारजनों ने इस विषम परिस्थितियों में सेवा सुश्रुसा की वह अकथनीय, अविस्मरणीय व अनुकरणीय है। प्रभु से प्रार्थना करें इस जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त कर आत्मा को चीर शान्ति प्रदान करें। 'शाश्वत धर्म' परिवार की ओर से श्रद्धांजली।

- अशोक श्रीश्रीमाल, इंदौर

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001